हिन्दी व्याकरण

कक्षा 6

विषय – सूची

1. भाषा, लिपि और व्याकरण (Language, Script and Grammar)	1-6
2. वर्ण-विचार(Phonology)	7-12
3. शब्द-विचार(Morphology)	13-20
4. वाक्य (syntax)	21-27
5. संज्ञा(Noun)	28-36
6. लिंग(Gender)	37-45
7. वचन(Number)	46-53
8. कारक(Case)	54-59
9. सर्वनाम(Pronoun)	60-64
10. विशेषण(Adjective)	65-72
11. क्रिया(Verb)	73-77
12. काल(Tense)	78-80
13. अविकारी शब्द-(Indeclinable Words)	81-88
14. विराम-चिह्न(Punctuation)	89-92
15. उपसर्ग और प्रत्यय(Prefix and Suffix)	93-98
16. शब्द तथा वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ (Errors of words and sentences)	99-103
17. संधि (Joining)	104-112
18. विलोम शब्द (Antonyms)	113-114

19. पर्यायवाची शब्द (Synonyms)	115-117
20.अनेकार्थी शब्द (Word with Various Meaning)	118-119
21. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)	120-122
22.श्रुतिसम (समरूपी) भिन्नार्थक शब्द (Pairs of Similar Words - Distinguished)	123-124
23. मुहावरे और लोकोक्तियाँ(Idioms and Proverbs)	125-130
24. पत्र-लेखन(Letter Writing)	131-138
25. अनुच्छेद-लेखन(Paragraph Writing)	139-142
26. कहानी-लेखन(Story Writing)	143-146
27.संवाद-लेखन(Dialogue Writing)	14-149
28.विज्ञापन - लेखन(Advertisement Writing)	150-154
29.निबंध-लेखन(Essay Writing)155	155-161
30.अपठित गद्यांश(Unseen Passages)	162-164

पाठ -1 भाषा, लिपि और व्याकरण

(Language, Script and Grammar)

हमारे मन में तरह-तरह के भाव और विचार उत्पन्न होते हैं। हम लोग अपने भाव और विचार किसी-न-किसी तरह दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। इन्हें संकेतों द्वारा प्रकट किया जा सकता है। माँ मुँह पर अँगुली रखकर बच्चे को चुप रहने के लिए कहती है। बालक भूख लगने पर पेट पर हाथ रख सकता है। इसी तरह अन्य प्रकार के संकेतों का प्रयोग हो सकता है। परंतु संकेतों द्वारा मन में उठे सारे भावों और विचारों को प्रकट नहीं किया जा सकता।

अपने मन के भावों एवं विचारों को प्रकट करने के लिए हमें भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा के द्वारा सभी प्रकार के भाव और विचार प्रकट किए जा सकते हैं।

पहले मुख से कुछ ध्वनियाँ निकलीं और फिर उन्हीं से भाषा का निर्माण हुआ। भाषा के निर्माण के क्रम में बहुसंख्य शब्दों का प्रचलन आरंभ हुआ। इन शब्दों में मनुष्य के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव छिपे हुए हैं। इस प्रकार भाषा के द्वारा हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचा सकते हैं और दूसरों के मन की बात जान सकते हैं।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भावों एवं विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

भाषा के रूप (Kinds of Language)

- बोलकर बताने और सुनकर समझने के आधार पर भाषा के दो रूप होते हैं।

1.मौखिक भाषा
2.लिखित भाषा

1. **मौखिक भाषा (Oral Languages)** जब हम अपने मन विचारों और भावों का आदान-प्रदान बोलकर या सुनकर करते हैं, तो उसे 'मौखिक भाषा' कहते हैं। दो व्यक्तियों के बीच बात हो रही हो तो मौखिक भाषा का ही प्रयोग होता है।

2. **लिखित भाषा (Written Languages)** – भाषा के जिस रूप के द्वारा मनुष्य अपनी बात लिखकर दूसरों तक पहुँचाता है, उसे 'लिखित भाषा' कहते हैं। इस भाषा में दूसरा व्यक्ति पढ़कर बातों को समझता है। जैसे- पत्र लिखना, समाचार पत्र, पुस्तक एवं पत्र-पत्रिकाओं द्वारा अपने भावों-विचारों का आदान-प्रदान करना।

भाषा का अन्य रूप…

चित्र में यातायात पुलिस का सिपाही इशारे से वाहनों को रुकने और चलने का संकेत कर रहा है। वाहन इशारा समझकर रुकते व चलते हैं।अतः संकेतों के द्वारा भी व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं। जिसे 'संकेत भाषा या सांकेतिक भाषा' कहा जा सकता है ।

मातृभाषा - मातृभाषा वह भाषा है, जिसे बालक सबसे पहले अपनी माता व परिवार से सीखता है। बच्चा जिस परिवार में पलता या बड़ा होता है, उसके सदस्यों से वह भाषा सीख जाता है। इस भाषा को 'मातृभाषा' कहते हैं।

राष्ट्रभाषा - पूरे देश में बोली जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है । भाषा जिसका प्रयोग पूरे देश द्वारा किया जाता है, राष्ट्रभाषा कहलाती है।
जैसे-भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी व ब्रिटेन की राष्ट्रभाषा अंग्रेज़ी है।

राजभाषा - वह भाषा जो सरकारी काम-काज की भाषा होती है, राजभाषा कहलाती है। वह भाषा जिसका प्रयोग किसी देश अथवा राज्य द्वारा सभी सरकारी कार्यालयों में किया जाता है। राजभाषा कहलाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। इसलिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है तथा 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का तीसरा स्थान है ।

बोली - भाषा का स्थानीय रूप बोली कहलाता है। जो किसी अल्प क्षेत्र या स्थान में बोली जाती है। बोली में प्रायः साहित्य की रचना नहीं होती है। इसका किसी स्थान के नाम के आधार पर ही नाम रखा जाता है। अवधी, ब्रज, खड़ी बोली आदि ।

भारत के राज्य और उनकी भाषा	
उत्तर प्रदेश	हिन्दी
कर्नाटक	कन्नड़
मिजोरम	मिजो
ओडिशा	ओड़िया
गुजरात	गुजराती
नागालैंड	अंग्रेज़ी

लिपि (Script) - लिखने के लिए मुँह से निकलने वाली ध्वनियों के कुछ चिह्न निश्चित किए गए हैं। इन निश्चित चिह्नों को लिपि कहा जाता है। संसार में अलग-अलग लिपियों का प्रयोग किया जाता है। एक लिपि में कई भाषाएँ लिखी जा सकती हैं।

हिंदी, संस्कृत, मराठी और नेपाली भाषा की लिपि देवनागरी है। पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है। अंग्रेजी तथा यूरोपीय भाषाएँ रोमन लिपि में लिखी जाती हैं। उर्दू भाषा की लिपि फ़ारसी है।

भाषाएँ और उनकी लिपियाँ	
भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी
संस्कृत	देवनागरी
अंग्रेज़ी	रोमन
उर्दू	फारसी
पंजाबी	गुरुमुखी

व्याकरण

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए:

(क) वह ने खाया।
(ख) मेरे माता जी बीमार हैं।
(ग)बच्चे में खेल रहे हैं।

तीनों वाक्य अशुद्ध हैं। इनमें व्याकरण के नियमों का पालन नहीं किया गया है। जब आप ऐसे वाक्य लिखती हैं, तो आपके अध्यापक अथवा अभिभावक उनके शुद्ध रूपों को बोलकर या लिखकर बतलाते हैं तथा यह भी बतलाते हैं कि वाक्य में कौन-सी अशुद्धि है।

उपर्युक्त वाक्यों के शुद्ध रूप इस प्रकार हैं:
(क) उसने खाना खाया।
(ख) मेरी माताजी बीमार हैं।
(ग) बच्चे छत पर खेल रहे हैं।

हर भाषा के अपने-अपने नियम होते हैं। इन नियमों की जानकारी से हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त होता है। व्याकरण के नियमों से ही हम भाषा का सही बोलना (उच्चारण), लिखना तथा पढ़ना सीखते हैं। अतः स्पष्ट है कि भाषा को शुद्ध रूप से बोलने-लिखने और पढ़ने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

व्याकरण की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है-

'व्याकरण' वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम भाषा को शुद्ध बोलने, लिखने और पढ़ने के नियमों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

व्याकरण के विभाग

व्याकरण के तीन विभाग होते हैं –
1.वर्ण विचार
2.शब्द-विचार
3.वाक्य विचार
(क) वर्ण विचार इसमें वर्णों (स्वरों एवं व्यंजनों) के भेद, उनके उच्चारण और स्वरूप का अध्ययन किया जाता है।
(ख) शब्द विचार- इसके अंतर्गत शब्दों के भेद, रचना और शब्द-निर्माण की प्रक्रिया तथा नियम का अध्ययन किया जाता है।
(ग) वाक्य विचार- इसके अंतर्गत वाक्य-रचना, भेद और वाक्य-विश्लेषण आदि का अध्ययन किया जाता है ।

आओ दोहराए

- भाषा के द्वारा हम अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।
- भाषा के दो रूप होते हैं मौखिक भाषा और लिखित भाषा।
- भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।
- भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहा जाता है।
- भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।
- व्याकरण से हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता ।

आओ अभ्यास करें

1 • निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) भाषा किसे कहते हैं?

(ख) भाषा के कितने रूप होते हैं?

(ग) लिपि किसे कहते हैं?

(घ) व्याकरण की परिभाषा लिखिए?

(ङ) व्याकरण के कितने विभाग होते हैं?

2 • सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (X) का चिह्न लगाइए-

(क) भारत में केवल हिंदी भाषा बोली जाती है। □

(ख) विद्यार्थी परीक्षा में लिखते समय मौखिक भाषा का प्रयोग करते हैं। □

(ग) शुद्ध बोलने और लिखने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। □

(घ) भाषा के दो रूप होते हैं। □

3. भाषा का उसकी लिपि से मिलान कीजिए-

भाषा	**लिपि**
1. हिंदी	फारसी
2. पंजाबी	रोमन
3. उर्दू	देवनागरी
4. अंग्रेजी	गुरूमुखी

4• उचित विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) दो व्यक्तियों की बातचीत का माध्यम क्या होता है?

1. वर्ण □ 2. शब्द □ 3. भाषा □

(ख) गुरुमुखी किस भाषा की लिपि है?

1. उर्दू □ 2. पंजाबी □ 3.संस्कृत □

(ग) भाषा द्वारा किनका आदान-प्रदान होता है?

1. शब्दों का □ 2. विचारों का □ 3. वाक्यों का□

(घ) किसके द्वारा हम भाषा का शुद्ध रूप सीखते हैं?

1. साहित्य □ 2. राष्ट्रभाषा □ 3. व्याकरण □

रचनात्मक गतिविधि

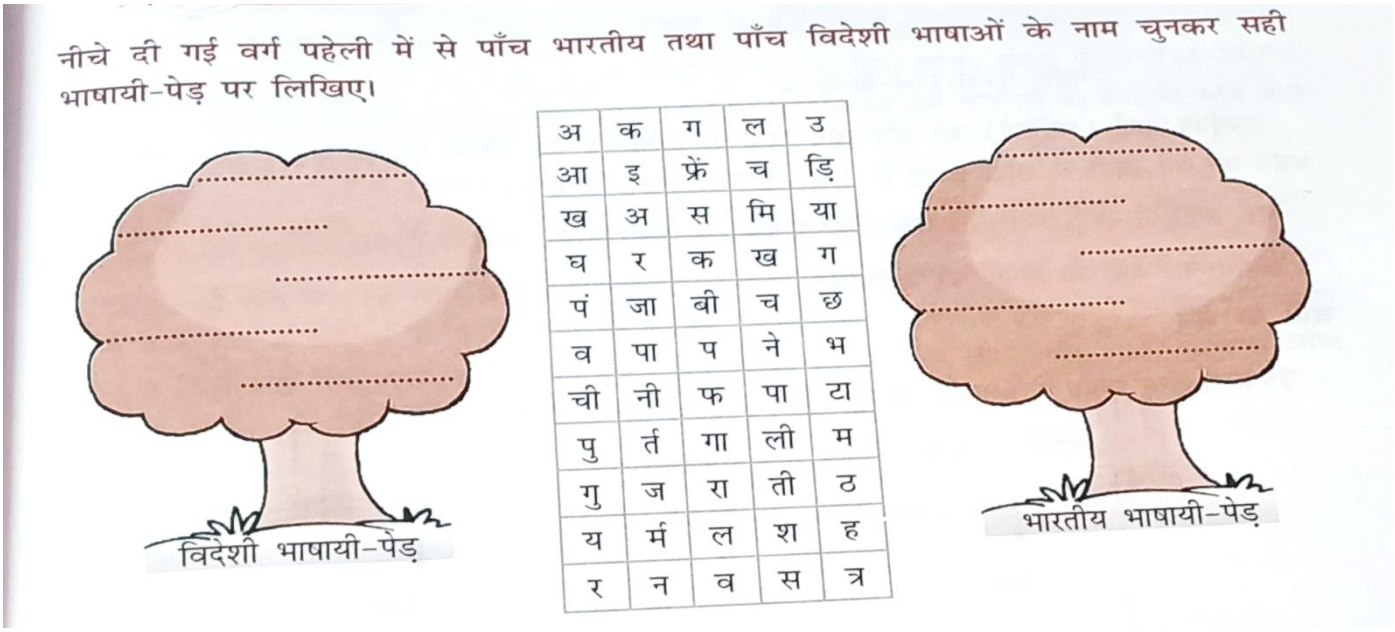

2 .वर्ण-विचार (Phonology)

पशु-पक्षी अपने मुख से तरह-तरह की ध्वनियाँ निकालते हैं। बरतनों के टकराने तथा वाहनों के चलने से भी अनेक प्रकार की ध्वनियाँ निकलती हैं। मनुष्य भी ध्वनियों के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रकट करते हैं। इनमें से कुछ ध्वनियाँ सार्थक तो कुछ निरर्थक होती हैं।

भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं। इन ध्वनियों को जब लिखा जाता है, तो ये वर्ण कहलाती है । ध्वनियों या वर्णों के मेल से शब्द का निर्माण होता है। जैसे -

महेश - म् + अ + ह् + ए + श् + अ

पवित्र - प् + अ + व् + इ + त् + र् + अ

उपर्युक्त शब्द इनके सामने लिखी ध्वनियों से मिलकर बने हैं। इन ध्वनियों के और अधिक टुकड़े नहीं किए जा सकते।

भाषा की सबसे छोटी इकाई अथवा ध्वनि, जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण या अक्षर कहलाती है।

वर्णमाला - वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण - विच्छेद कहलाता है ।

वर्णमाला

हिंदी भाषा की वर्णमाला में 52 वर्ण हैं, जो इस प्रकार हैं-

स्वर – अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ए, ऐ,ओ,औ (11)

अनुस्वार – अं

अनुनासिक – अँ

विसर्ग – अः

} 1

आगत ध्वनियाँ - अर्ध चंद्र(ॅ); नुक्ता (•) (1)

व्यंजन - क - वर्ग – क ग ख घ ङ
च - वर्ग – च छ ज झ ञ
ट - वर्ग – ट ठ ड ढ ण
त - वर्ग – ध थ द ध न
प - वर्ग – प फ ब भ म } 25
अंतःस्थ – य र ल व] (4)
ऊष्म – श ष स ह] (4)
संयुक्त व्यंजन – क्ष त्र ज्ञ श्र] (4)
अन्य – ड़ ढ़] (2)

वर्ण के भेद

वर्ण के दो भेद होते है –

1 . स्वर 2 . व्यंजन

स्वर - जिन वर्णों का उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना किया जाता है. वे स्वर कहलाते हैं। उच्चारण की दृष्टि से स्वयं को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

स्वर के भेद

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3.प्लुत स्वर

अ, इ, उ, ऋ

ख. दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में लगभग दुगना समय लगता है. वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। दीर्घ स्वर सात हैं –

आ ,ई, ऊ, ए , ओ , औ

ग. प्लुत स्वर- जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से लगभग तिगुना समय लगता है. वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। जैसे-

- ओ३म्, राखीर, भैया३ इत्यादि
- प्लुत स्वरों का उच्चारण मंत्र पढ़ते समय तथा किसी को पुकारने आदि स्थितियों में होता है।

स्वरो की मात्राएँ - स्वरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से करने के साथ-साथ व्यंजनों के साथ भी किया जाता है। जब स्वरों का प्रयोग व्यंजनों के साथ किया जाता है; तब उनका रूप बदल जाता है, जिसे मात्रा कहते हैं।

स्वरों का स्वतंत्र प्रयोग जैसे – आ,आई, आइए, आए आदि। व्यंजन ध्वनियाँ स्वरों की सहायता से ही बोली जाती हैं। स्वर की मात्रा व्यंजन के 'अ' रहित रूप के साथ जुड़ती है।

व्यंजन के भेद

व्यंजन के तीन भेद होते है -

1 . स्पर्श

2. अन्तःस्थ

3 . ऊष्मः

क. स्पर्श व्यंजन - क से लेकर म तक स्पर्श व्यंजन होते हैं। इन्हें पाँच वर्गो में रखा गया है और हर वर्ग में पाँच-पाँच व्यंजन हैं। इन्हें पंचम वर्ण भी कहते हैं। इस प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार होता है ।

क- वर्ग – क ग ख घ ङ
च-वर्ग – च छ ज झ ञ
ट-वर्ग – ट ठ ड ढ ण
त-वर्ग – त थ द ध न
प-वर्ग – प फ ब भ म

ख. अन्तःस्थः- जिन व्यंजनों का उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के बीच होता है, उन्हें अन्तः स्थ कहते हैं। ये चार हैं- य, र, ल, व।

ग. ऊष्मः - वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु गर्म-सी हो जाती है, उन्हें ऊष्म कहते हैं। ये चार हैं- श,ष, स, ह।

संयुक्त व्यंजनः - जब दो या दो से अधिक व्यंजन स्वर के न होने से आपस में जुड़ जाते हैं तो उनको संयुक्त व्यंजन कहा जाता है। ये हैं-

क्ष = क् + ष - रक्षा , भिक्षा

त्र = त् + र - पत्र , मित्र

ज्ञ = ज् + ञ - ज्ञानी , अज्ञात

द्वित्व व्यंजनः एक जैसे दो वर्णों के मेल को द्वित्व कहते हैं। जैसे त्त, क्क, ट्ट आदि।

त्+ त = पत्ता, कुत्ता, भत्ता
क् + क = सिक्का, मक्का, पक्का

अयोगवाह

अं (अनुस्वार) और अः (विसर्ग) अयोगवाह होते हैं। ये न तो व्यंजन हैं और न ही स्वर। इन्हें प्रायः स्वरों के साथ ही रखा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण स्वरों के साथ ही होता है; जैसे - गंगा, रंग, प्रातः, अतः आदि।

अनुस्वार- स्वर के ऊपर लगनेवाला बिंदु (•) अनुस्वार होता है। इसका उच्चारण न् \म् के समान होता है; जैसे हंस, पंख, शंख, जंगल आदि।

विसर्ग- स्वर के बाद लगनेवाले बिंदु (:) विसर्ग होते है। इसका उच्चारण ह् के समान होता है; जैसे दुःख, प्रातः, अतः आदि।

अनुनासिक - मुख और नाक से बोले जानेवाले स्वर अनुनासिक स्वर होते हैं। इनके ऊपर चंद्र-बिंदु (ँ) लगाया जाता है। जैसे चाँद, आँख, हँसना, गाँव, ऊँट आदि।
हलंत – स्वर रहित व्यंजन का प्रयोग करते समय उसके नीचे एक तिरछी रेखा (्) लगा दी जाती है। इसे हलंत (्) कहते हैं। जैसे महान्, परिषद् आदि।
सभी व्यंजन 'अ' की सहायता से बोले जाते हैं। जब किसी व्यंजन में 'अ' की ध्वनि नहीं मिली होती है तो उसके नीचे हलंत (्) लगा देते हैं; जैसे क् ,च् ,ट् आदि। व्यंजनों में 'अ' लगाने पर उनके नीचे लगा हलत हट जाता है; जैसे क, च, ट आदि।

आओ जाने

भाषा की सबसे छोटी इकाई अथवा ध्वनि, जिसके खंड नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं।

- वर्षों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- जिन वर्णों का उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं।
- जिन वर्णों के उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं।
- एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बनने वाले व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
- जब एक ही वर्ण दो बार मिलता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

अभ्यास कार्य

1. प्रश्नो के उत्तर दीजिए –

क) वर्ण किसे कहते हैं?
(ख) वर्ण के कितने भेद होते हैं? इसके भेदों के नाम लिखिए।
(ग) स्वर किसे कहते हैं? इसके भेदों को उदाहरण सहित लिखिए।
(घ) वर्णमाला किसे कहते हैं?
(ङ) पंचम वर्ण किसे कहते हैं?

2 . रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. व्यंजन ____प्रकार के होते हैं।
ख. जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगे, उन्हें _____कहते हैं।
ग. जहाँ एक शब्द में एक ही व्यंजन का दो बार प्रयोग होता है, उसे ____कहा जाता है।
घ. स्पर्श व्यंजनों को हम ____भागों में बाँट सकते हैं।

3. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए-

(क) भाषा की सबसे छोटी इकाई है-

(i) शब्द (ii) पद (iii) वाक्य (iv) वर्ण

(ख) वर्ण है-

(i) संयुक्त ध्वनि (ii) स्वतंत्र ध्वनि (iii) मिश्रित ध्वनि (iv) ध्वनि समूह

(ग) निम्न में से कौन सा वर्ण 'क' वर्ग का नहीं है-

(i) क (ii) च (iii) ख (iv) ग

(घ) वर्णों का व्यवस्थित समूह क्या कहलाता है?

(i) वर्ण (ii) वर्णमाला (iii) स्वर (iv)व्यंजन

(ङ) हिंदी वर्णमाला में कितने वर्ण होते हैं?

(i) 33 (ii) 39 (iii) 52 (iv) 42

4. अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग वाले चार-चार शब्द लिखिए-

अनुस्वार - —-- —-- —-- —--

अनुनासिक - —-- —--- —-- —--

रचनात्मक गतिविधियाँ

दिए गए वर्ण वृक्ष पर वर्ण लिखिए

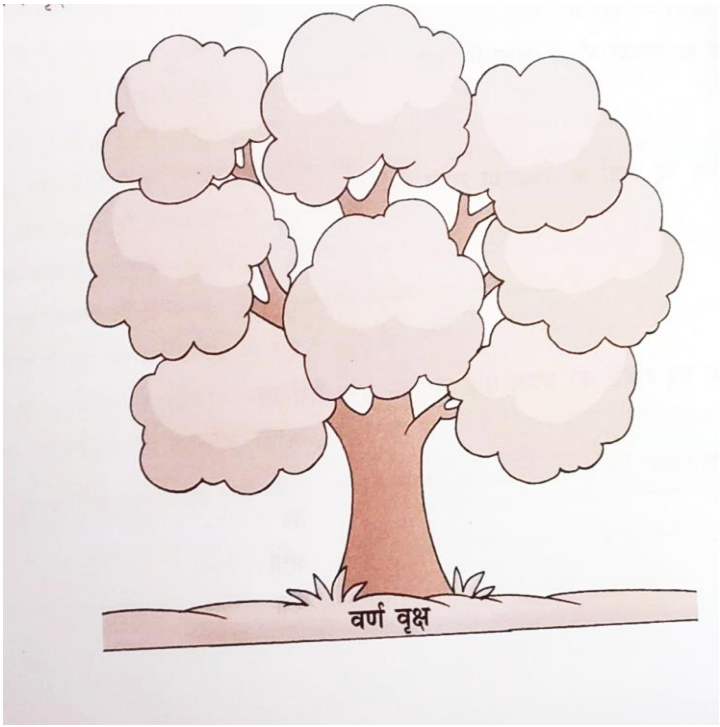

पाठ - 3 शब्द-विचार (Morphology)

वाक्यों का निर्माण शब्दों द्वारा तथा शब्दों का निर्माण वर्णों द्वारा होता है। शब्द में प्रत्येक वर्ण का स्थान निश्चित होता है। अगर वर्णों को निश्चित क्रम में नहीं रखा जाता है तो सार्थक शब्द नहीं बन पाता है।

वर्णों का ऐसा समूह जिसका निश्चित अर्थ होता है, उसे शब्द कहते हैं। जैसे-

महल

तितली

कलम

महल, तितली और कलम शब्द हैं क्योंकि इनका एक निश्चित अर्थ होता है। ये सार्थक शब्द हैं।

अब इन शब्दों को देखिए- हमल, लितती लकम, ये शब्द नहीं हैं क्योंकि इनका निश्चित अर्थ नहीं होता है। ये निरर्थक शब्द हैं।

शब्द-भेद

शब्द के कई भेद होते हैं। इनके भेद निम्नलिखित आधारों पर किए गए हैं-

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द - भेद

उत्पति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं –

क. तत्सम　　ख. तद्भव

ग. देशज　　घ. विदेशी

(क) तत्सम शब्द - संस्कृत भाषा के वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में आ गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे- अग्नि, प्रकाश, आकाश, नमन, पुरस्कार, योग्य, शोभा आदि।

(ख) तद्भव शब्द - संस्कृत भाषा के वे शब्द जो कुछ रूप परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रचलित हो गए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे- आग (अग्नि), सूरज (सूर्य), खेत (क्षेत्र), रात (रात्रि), साँप (सर्प) आदि।

(ग) देशज शब्द - हमारे देश में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। इनसे कई शब्द हिंदी में आ गए हैं। हिंदी में ऐसे शब्द जो दूसरी बोलियों या लोकभाषाओं से आए हैं, उन्हें देशज कहते हैं। जैसे-पगड़ी, जूता, लोटा, रोटी इत्यादि।

(घ) विदेशी शब्द (Foreign Words) - विदेशी भाषा के संपर्क से बहुत से शब्द हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे शब्द विदेशी या विदेशज शब्द कहलाते हैं। जैसे- स्कूल, अनार, आम, कैंची, अचार, पुलिस, टेलीफोन, रिक्शा आदि।

अन्य विदेशी शब्दों की सूची निम्नलिखित हैं-

अंग्रेजी - कॉलेज, पैंसिल, रेडियो, टेलीविज़न, डॉक्टर, लैटरबॉक्स, पैन, टिकट, मशीन, फुटबॉल, स्टेशन, साइकिल, बोतल आदि।

फारसी- अनार, चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बीमार, बर्फ, रूमाल, आदमी, चुगलखोर, गंदगी, चापलूसी आदि।

अरबी - औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, कानून, खत, फकीर, रिश्वत, औरत, कैदी, मालिक, गरीब आदि।

तुर्की – कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दारोगा, बहादुर आदि।

पुर्तगाली – अचार, कॉफी, साबुन आदि।

फ्रांसीसी – पुलिस, कार्टून, कर्फ्यू, इंजीनियर आदि।

चीनी – तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।

यूनानी – टेलीफोन, एटम, डेल्टा, टेलीग्राफ आदि।

कुछ तत्सम और तद्भव शब्द

तत्सम	तद्भव
सत्य	सच
हस्त	हाथ
ग्राम	गाँव
मुख	मुँह
शत	सौ
चूर्ण	चूरण
रात्रि	रात
कूप	कुआँ
अंधकार	अँधेरा
अंध	अंधा
कर्म	काम
पंच	पाँच
आम्र	आम
अर्ध	आधा

2.रचना के आधार पर शब्द-भेद

रचना या बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं-

क. रूढ़ शब्द

ख. यौगिक शब्द

ग. योगरूढ़ शब्द

क. रूढ़ शब्द – ऐसे शब्द जिनके सार्थक खंड न किए जा सकें तथा जो अन्य शब्दों के मेल से न बने हों, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे- मेज़, हवा, सभा, गिलास, चक्र, रोटी, पुस्तक इत्यादि।

ख. यौगिक शब्द - दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। इनके सार्थक खंड किए जा सकते हैं। जैसे-

पाठशाला = पाठ + शाला

अन्नपूर्णा =अन्न + पूर्णा

(ग) योगरूढ़ शब्द – जो यौगिक शब्द अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी परंपरा के कारण किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं अर्थात् एक ही अर्थ में रूढ़ हो गए हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं ।

जैसे-जलज कमल के लिए, पीतांबर श्रीकृष्ण के लिए और लंबोदर गणेश जी के लिए रूढ़ हो गए हैं।

3. प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं-

क. विकारी शब्द ख. अविकारी शब्द

(क) विकारी शब्द – जिन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने पर लिंग, वचन, कारक या काल के कारण रूप-परिवर्तित हो जाता है अर्थात वे विकृत हो जाते हैं, विकारी शब्द कहलाते हैं। इसके अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द आते हैं; जैसे-

शब्द	परिवर्तित रूप
मुर्गा (संज्ञा)	मुर्गी, मुर्गे, मुर्गों
मैं (सर्वनाम)	मेरी, मुझे, मेरा
बड़ा (विशेषण)	बड़े, बड़ों, बड़ी
बनाया (क्रिया)	बनाए, बनाई, बनाओ

(ख) अविकारी शब्द – जिन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने पर लिंग, वचन, काल आदि के कारण रूप परिवर्तित नहीं होता है, अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे- तेज, धीरे-धीरे, तथा, और, के लिए, के नीचे, अरे आदि। इसके अंतर्गत क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द आते हैं।

4.अर्थ के आधार पर शब्द-भेद

अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद होते हैं-

क. पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द

ख. विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द

ग. अनेकार्थी शब्द

घ. एकार्थी शब्द

क. पर्यायवाची शब्द- जिन शब्दों के अर्थ समान होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। जैसे-

कपड़ा = वस्त्र, पट, अंबर, वसन

गाय = गौ, धेनु, सुरभि, गऊ

ख.विलोम शब्द - उल्टा अर्थ बताने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। जैसे-

आकाश -पाताल सत्य -असत्य

ग.अनेकार्थी शब्द- जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे-

अनंत = ईश्वर, आकाश, जिसका कोई अंत न हो

अंबर = आकाश, वस्त्र, कपास

घ. एकार्थी शब्द- जिन शब्दों का एक ही अर्थ होता है, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे- कंबल, छाता, साइकिल, किताब, हाथी इत्यादि।

आओ दोहराए

- वर्णों का ऐसा समूह जिनका एक निश्चित अर्थ होता है, उसे शब्द कहते हैं।
- शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधार पर किया जाता है-
- उत्पत्ति के आधार पर
- रचना के आधार पर
- प्रयोग के आधार पर
- अर्थ के आधार पर
- उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं- तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।
- रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं- रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।
- प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद हैं- विकारी शब्द और अविकारी शब्द।
- अर्थ के आधार पर शब्द के निम्नलिखित भेद हैं- पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, अनेकार्थी और एकार्थी शब्द।

अभ्यास करें

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

क. शब्द किसे कहते हैं ?

ख. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं ? उनके नाम तथा परिभाषा लिखिए।

ग. यौगिक और योगरूढ़ शब्द में अंतर स्पष्ट कीजिए।

घ. विकारी शब्द किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए।

ङ.अविकारी शब्द को परिभाषित कीजिए?

2.उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) शब्द किसे कहते हैं?

वर्णों के सार्थक समूह को ( )व्यंजनों के सार्थक समूह ( )वर्णमाला को ( )

(ख) प्रयोग की दृष्टि से शब्द के कितने भेद होते हैं?

चार ( ) पाँच ( ) दो ( )

(ग) रचना के आधार पर शब्द के कितने भेद होते हैं?

चार ( ) तीन ( ) पाँच ( )

(घ) जिन शब्दों के खंड नहीं किए जा सकते, उन्हें कौन-से शब्द कहते हैं?

रूढ़ ( ) यौगिक ( ) योगरूढ़ ( )

3.उचित शब्द से रिक्त स्थान भरिए

(क) जिन शब्दो के मूलरूप में विकार नहीं होता ,उन्हें ------- कहते है।

(ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्द के ------ भेद होते हैं ।

(ग) संस्कृत भाषा से परिवर्तन के साथ होकर हिंदी भाषा में आए शब्द ------ कहलाते हैं।

(घ) 'लीची' ------ शब्द है।

(ङ) वाक्य में प्रयोग के स्तर पर परिवर्तनशील शब्द ----- शब्द कहलाते हैं।

4. नीचे दिए सही वाक्यों के सामने सही (✓) तथा गलत के सामने गलत (x) का चिह्न लगाइए-

(क) शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं। ( )

(ख) व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों का ही अध्ययन किया जाता है। ( )

(ग) जिन शब्दों के टुकड़े नहीं किए जा सकते, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। ( )

(घ) हिंदी के अपने देशज़ शब्द होते है।( )

5.निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव शब्द लिखिए-

अग्नि -----	कर्ण -----
आम्र -----	कर्म -----
हस्त -----	गृह -----
दंत -----	अश्रु -----

पाठ- 4 वाक्य- विचार (Syntax)

वृक्ष हमें फल देते हैं ।

विद्यालय ज्ञान का मंदिर है ।

यह वाक्य हैं। वाक्य शब्दों से बनते हैं। वाक्य में आए शब्द पद कहलाते हैं।

शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह, जिसका अर्थ स्पष्ट हो, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं-

1. उद्देश्य (Subject)
2. विधेय (Predicate)

1. उद्देश्य - वाक्य में जिसके विषय में कोई बात कही जाती है, उसे उद्देश्य कहते हैं। कर्ता और कर्ता का विस्तार वाक्य का उद्देश्य होता है। जैसे -

- बच्चे पढ़ रहे हैं।
- मोर नाच रहा है।
- अदिति स्कूल जा रही है ।

उद्देश्य को कर्ता भी कहते हैं।

इन वाक्यों में बच्चे, मोर तथा अदिति के विषय में कुछ बताया गया है। ये उद्देश्य हैं।

2. विधेय – वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ बताया जाता है, उसे विधेय कहते हैं। जैसे –
दादाजी अखबार पढ़ रहे हैं।
सोहन मन लगाकर अभ्यास करता है।
माली पौधों को पानी दे रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अखबार पढ़ रहे हैं', 'मन लगाकर अभ्यास करता है' और 'पौधों को पानी दे रहा है' आदि शब्द विधेय हैं।

वाक्य के भेद (Kinds of Sentences)

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं-

1. सरल वाक्य (Simple Sentences)
2. संयुक्त वाक्य (Compound Sentences)
3. मिश्रित वाक्य (Complex Sentences)

1. सरल वाक्य (Simple Sentence) - ऐसे वाक्य जिनमें एक ही उद्देश्य (कर्ता) और एक ही विधेय हो, उन्हें 'सरल वाक्य' कहते हैं; जैसे - चीता दौड़ रहा है। सुमन कविता पढ़ती है।

इन वाक्यों में चीता तथा सुमन उद्देश्य (कर्ता) हैं और दौड़ रहा है और कविता पढ़ती है, विधेय हैं। ये सरल वाक्य हैं।

2. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) - जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतंत्र रूप में समुच्चयबोधक अव्ययों द्वारा जुड़े हों, उन्हें 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं; जैसे-

•छोटा भाई राम पढ़ाई करता है और बड़ा भाई श्याम नौकरी करता है।

•शांति ने केले खाए जबकि राधिका ने समोसे खाए।

ऊपर के वाक्यों में दो-दो उपवाक्य हैं। अतः ये संयुक्त वाक्य हैं। हैं जो समुच्चयबोधक अव्ययों 'और'' तथा 'जबकि' से जुड़े हुए हैं।अतः ये संयुक्त वाक्य हैं ।

3. मिश्रित वाक्य (Complex Sentence) - जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य तथा अन्य आश्रित या गौण वाक्य हो,वे 'मिश्रित वाक्य' कहलाते हैं; जैसे-

- नेहा ने कहा कि वह कल विद्यालय जाएगी।
- मैं नहीं जानती कि आप कौन हैं?

इन दोनों वाक्यों में 'नेहा ने कहा' तथा 'मैं नहीं जानती' प्रधान उपवाक्य हैं। 'वह कल विद्यालय जाएगी' और 'आप कौन हैं' शब्द आश्रित उपवाक्य हैं। इन दोनों वाक्यों को 'कि' संबंधबोधक आपस में जोड़ रहा है। अतः ये मिश्रित वाक्य हैं।

उपवाक्य

संयुक्त और मिश्रित वाक्यों में एक से अधिक वाक्य समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं। वाक्यों में जुड़े ये वाक्य उपवाक्य कहलाते हैं।

उपवाक्य दो प्रकार के होते हैं -

(क) आश्रित उपवाक्य
(ख) स्वतंत्र उपवाक्य।

(क) आश्रित उपवाक्य- अपने अर्थ के लिए दूसरे वाक्य पर निर्भर रहनेवाला वाक्य आश्रित उपवाक्य कहलाता है; जैसे-

- मुझे लगता है कि आज वर्षा होगी।
- वही घड़ी है जो खराब हो गई थी।
- इन वाक्यों में रंगीन वाक्य आश्रित उपवाक्य हैं।

आश्रित उपवाक्य 'जो', 'जब', 'जिसे', 'जिसने', 'कि', 'क्योंकि', 'प्रायः', आदि द्वारा परस्पर जुड़े होते हैं। मिश्रित वाक्य में आश्रित उपवाक्य होते हैं।

(ख) स्वतंत्र उपवाक्य- जो उपवाक्य अपने अर्थ के लिए दूसरे वाक्य पर आश्रित नहीं रहता अर्थात जो वाक्य स्वतंत्र होता है, वह स्वतंत्र उपवाक्य कहलाता है; जैसे-

- दीपक अमरूद खाएगा और दृश्या सेब खाएगी।
- सुजाता जाग गई है किंतु संजय सो रहा है।

ऊपर दिए गए पहले वाक्य में 'और' अव्यय तथा दूसरे वाक्य में 'किंतु' अव्यय द्वारा स्वतंत्र उपवाक्य जुड़े हैं। इनमें कोई भी वाक्य अपने अर्थ के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं है, इसलिए ये स्वतंत्र उपवाक्य हैं।

स्वतंत्र उपवाक्य 'और', 'किंतु', 'परंतु', 'या', 'तथा' आदि अव्ययों से परस्पर जुड़े होते हैं। संयुक्त वाक्य में स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्य

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं-

1. विधानवाचक
2. निषेधात्मक
3. प्रश्नवाचक
4. आज्ञावाचक
5. विस्मयवाचक
6. संदेहवाचक
7. इच्छावाचक
8. संकेतवाचक

1. विधानवाचक वाक्य (Assertive Sentence) - जिस वाक्य के द्वारा किसी बात का होना या काम का होना पाया जाए, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- अंशु स्नान कर रहा है। (काम का करना)
- सविता बीमार है। (बात का होना)

2. निषेधात्मक या नकारात्मक वाक्य (Negative Sentence) - जब किसी वाक्य से किसी घटना के न होने या काम के न करने का बोध हो, उसे निषेधात्मक या नकारात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- किसान खेत में काम नहीं कर रहा।
- नल से पानी नहीं आ रहा।

3. प्रश्नवाचक वाक्य- जिस वाक्य द्वारा प्रश्न किया जाए, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- क्या तुमने अपना गृहकार्य कर लिया है?
- क्या वह बारिश में भी स्कूल गया?

4. आज्ञावाचक वाक्य - जिस वाक्य से आज्ञा, आदेश या विनय का भाव प्रकट होता है, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- पौधे में पानी डालो।
- श्याम, बाहर मत जाओ।

5. विस्मयवाचक वाक्य - जिस वाक्य से आश्चर्य, क्रोध, घृणा आदि भाव प्रकट हों, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- अरे! तुम अभी तक यहीं खड़े हो।
- वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।

6.संदेहवाचक वाक्य (Doubtful Sentence) - जिस वाक्य के द्वारा काम के होने में संदेह का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- शायद आज वर्षा हो जाए।
- संभवतः चौराहे पर रिक्शा मिल जाए।

7.इच्छावाचक वाक्य (Illative Sentence) - जिस वाक्य से इच्छा, आशीर्वाद, शुभकामनाएँ आदि का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- आपकी हर इच्छा पूर्ण हो। (इच्छा)
- सौभाग्यशाली हो। (आशीर्वाद)

8.संकेतवाचक वाक्य (Conditional Sentence) - जिस वाक्य के द्वारा संकेत या शर्त का बोध हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

- जब पवन आएगा तब हम मैच खेलने जाएँगे।
- नेहा मेहनत करेगी, तो पास हो जाएगी।

आओ जाने

- ऐसा शब्द-समूह जो अपना अर्थ स्पष्ट कर दे, उसे वाक्य कहते हैं।
- वाक्य में जिसके विषय में कुछ बात कही जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।
- वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। इसमें क्रिया कर्म आदि आते हैं।
- ऐसे वाक्य जिनमें एक ही उद्देश्य (कर्ता) और एक ही विधेय हो, उसे 'सरल वाक्य' कहते हैं।
- जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतंत्र रूप से समुच्चयबोधक द्वारा जुड़े हों, उन्हें 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं।
- जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य तथा अन्य आश्रित या गौण वाक्य हों, वे 'मिश्रित वाक्य' कहलाते हैं।

अभ्यास करें

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) वाक्य किसे कहते हैं?
(ख) वाक्य के कितने अंग होते हैं?
(ग) उद्देश्य से आप क्या समझते हैं?
(घ) विधेय किसे कहते हैं?

(ङ) रचना के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?
(च) अर्थ के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए।

2.उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) वाक्य के कितने अंग होते हैं?
दो ( ) चार ( ) तीन ( )

(ख) किसी वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, वह क्या कहलाता है?
उद्देश्य ( ) विधेय ( ) विधेय का विस्तार ( )

(ग) जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य तथा अन्य वाक्य आश्रित हों, उसे क्या कहते हैं।
मिश्रित वाक्य ( ) सरल वाक्य ( ) संयुक्त वाक्य ( )

(घ) 'श्रीराम ने रावण का वध किया' किस प्रकार का वाक्य है?
प्रश्नवाचक ( ) आज्ञावाचक ( ) विधानवाचक ( )

(ङ) अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं?
सात ( ) छह ( ) आठ ( )

3.निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय को अलग-अलग करके लिखिए-

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
क. रामानुज विज्ञान पढ़ता है।	------	-----
ख. काली गाय घास खा रही थी।	------	-----
ग. दीनू के पिता जी बीमार हैं।	------	-----
घ.कबूतर दाना चुग रहा है।	------	-----
ङ. नदी बहती है।	------	-----

4.निम्नलिखित वाक्यों को दिए गए संकेतों के अनुसार लिखिए-

(क) मेरे मामा जी आए हैं। (प्रश्नवाचक)
(ख) यहाँ कितनी बदबू आ रही है? (विस्मयसूचक)
(ग) दयाशंकर काम करता है। (आज्ञावाचक)
(घ) नवल मिठाई खाता है। (निषेधवाचक वाक्य)
(ङ) दीपेश पैसे लौटाएगा। (संदेहवाचक वाक्य)
(च) दिलीप पुस्तक पढ़ता है। (संकेतवाचक वाक्य)

5.निम्नलिखित वाक्यों में सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छाँटिए : (पाठ्यपुस्तक पर आधारित)

(क) गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

(ख) मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं।

(ग) सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई।

(घ) पुलिसवालों ने उस स्थान को चारों ओर से घेर लिया।

(ङ) वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार श्रेष्ठ हैं।

पाठ -5 संज्ञा (NOUN)

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और समझिए –

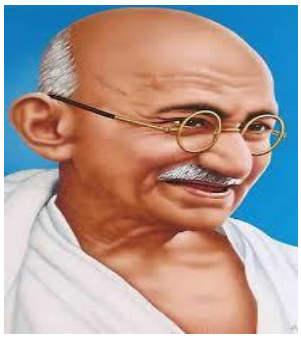

महात्मा गांधी ने भारत को आजादी दिलवाई ।

लाल किला दिल्ली में है ।

रोहन फुटबॉल खेल रहा है ।

उपर्युक्त वाक्यों में महात्मा गांधी, भारत, आज़ादी, लाल किला, दिल्ली, रोहन, फुटबॉल किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, या भाव के बारे में बता रहे हैं ।

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, गुण, धर्म, भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के अन्य उदाहरण –

व्यक्ति - राम, कृष्ण, मोहन, सरदार पटेल, कामिनी आदि।

प्राणी - मनुष्य, स्त्री, बालक, पशु, पक्षी आदि।

प्राणी -दिल्ली, मुंबई, गाँव, मैदान, विद्यालय आदि।

वस्तु - दूध, पानी, फल, पुस्तक, रेलगाड़ी आदि।

भाव - सच्चाई, चौड़ाई, पशुता, झूठ, प्रेम आदि।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद होते हैं –

1.व्यक्तिवाचक संज्ञा

2.जातिवाचक संज्ञा

3.भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun) - जो संज्ञा शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का बोध करवाएँ, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे- यमुना, कुतुबमीनार, कोलकाता,जापान रामायण, मीराबाई।

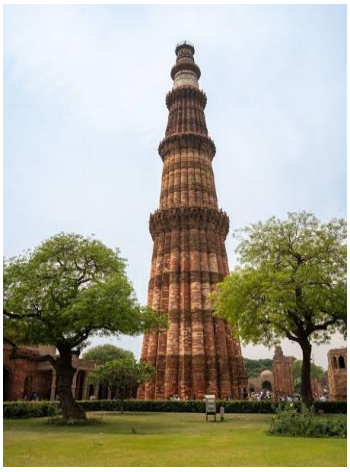

कुतुबमीनार

परिभाषा – शब्दों के जिस रूप से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण

व्यक्ति	चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, भगत सिंह, रामकृष्ण, विक्रम बतरा।
स्थान	दिल्ली, मुंबई, जबलपुर, गुजरात, शिमला, काठमांडू आदि।
भवन	हवामहल, सूर्य मंदिर, लालकिला, राष्ट्रपति भवन आदि।
नदियाँ	गंगा, यमुना, व्यास, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, कावेरी, रावी आदि।
पर्वत	हिमालय, नीलगिरि, अरावली, विंध्याचल, शिवालिक आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा (Common noun) – जो संज्ञा शब्द किसी वस्तु या प्राणी की संपूर्ण जाति की जानकारी देते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे नदी, फल, समुद्र, शहर, गाँव, माँ, बाजार, पक्षी, पशु, बगीचा, कलम इत्यादि।

माँ

बाजार

परिभाषा -शब्दों के जिस रूप से किसी संपूर्ण जाति का बोध हो,उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जातिवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण

व्यक्ति, प्राणी	पक्षी, शेर, मित्र, शत्रु, लड़की, लड़का, स्त्री, बूढ़ा, देव आदि।
स्थान	शहर, देश, नदी, पर्वत, अस्पताल, उपवन आदि।
वस्तुएँ	आम, सब्जी, फल, पुस्तक, टोकरी, कपड़े आदि।
संबंध	दादा, चाचा, भाई, बहन, नाना, मामा आदि।

3. भाववाचक संज्ञा (Abstract noun) – जिन संज्ञा शब्दों से गुण, दोष, धर्म, भाव, दशा, अवस्था, स्वभाव आदि के बारे में जानकारी मिलती है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे दोस्ती, मिठास, भय, सुंदरता, सत्य, घृणा इत्यादि।

बुढ़ापा एक सच्चाई है ।

आम में मिठास अच्छी है ।

कुछ संज्ञाएँ मूल रूप से ही भाववाचक होती हैं, कुछ अन्य शब्दों से बनाई जाती हैं।

शब्दों के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के गुण, दोष, दशा, अवस्था आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

भाववाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण

गुणों के नाम	सुंदरता, मिठास, वीरता, अच्छाई आदि।
भावों के माम	सुख, दुख, प्यार, ममता, स्नेह, क्रोध आदि।
दोषों के नाम	बेईमानी, ,चोरी, ठगी, कायरता आदि।
अवस्था के नाम	बुढ़ापा, बचपन, लड़कपन, यौवन आदि।

विशेष – **हिंदी भाषा के कुछ विद्वान अंग्रेजी व्याकरण के प्रभाव से संज्ञा के दो अन्य भेद भी मानते हैं।**

1. समुदायवाचक संज्ञा

2. द्रव्यवाचक संज्ञा

1. समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun) – जिन संज्ञा शब्दों से व्यक्तियों, वस्तुओं अ+थवा समुदायों आदि के समूह का बोध हो, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे कक्षा, सेना, सभा, जन-समूह, पुस्तकालय आदि।

सेना

2.द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)– ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी द्रव्य, धातु या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे सोना, गेहूँ, पीतल, ताँबा, घी, कोयला आदि।

सोना

भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञाएँ –

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मानव	मानवता	मजदूर	मजदूरी
मित्र	मित्रता	स्त्री	स्त्रीत्व
बूढ़ा	बुढ़ापा	बच्चा	बचपन
पशु	पशुता	देव	देवत्व
प्रभु	प्रभुता	राष्ट्र	राष्ट्रीयता
दानव	दानवता	लड़का	लड़कपन
शत्रु	शत्रुता	नेता	नेतृत्व

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना –

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अपना	अपनत्व / अपनापन	मम	ममत्व / ममता
निज	निजत्व	सर्व	सर्वस्व
अहं	अहंकार	स्व	स्वत्व
पराया	परायापन	आप	आपा

विशेषण से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना –

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
मधुर	मधुरता / माधुर्य	स्वस्थ	स्वास्थ्य
कड़वा	कड़वाहट	निर्धन	निर्धनता
बुरा	बुराई	हरा	हरियाली
चतुर	चतुराई	मीठा	मिठास
योग्य	योग्यता	गहरा	गहराई

क्रिया से भाववाचक संज्ञाएँ

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
हँसना	हँसी / हँसाई	घबराना	घबराहट
बहना	बहाव	पीटना	पिटाई
लिखना	लेखन	उड़ना	उड़ान
खेलना	खेल	पढ़ना	पढ़ाई
दौड़ना	दौड़	सजाना	सजावट
थकना	थकान / थकावट	चुनना	चुनाव
मिलना	मिलाप	भूलना	भूल

आओ जानें

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, स्थिति, गुण या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।
- शब्दों के जिस रूप से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
- शब्दों के जिस रूप से किसी संपूर्ण जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
- शब्दों के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के गुण, दोष, दशा अवस्था आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
- जिन संज्ञा शब्दों से व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा समुदायों आदि के समूह का बोध हो, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।
- ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी द्रव्य, धातु या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(क) संज्ञा किसे कहते हैं?

(ख) संज्ञाएँ कितने प्रकार की होती हैं?

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(घ) जातिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(ङ) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

2. नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए-

मिलना - --------
मीठा - --------
खेलना - -------
पराया - ------
मित्र - ------
योग्य - -----
बच्चा - ------
घबराना - -----

3 .कोष्ठक में दिए गए शब्दों की भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर रिक्त स्थानों में भरिए-

(क) दिन भर-------- करने पर भी गरीबों का पेट भरना कठिन है। (मजदूर)
(ख) अच्छे -----के लिए व्यायाम करना आवश्यक है।(स्वस्थ)
(ग) कमरे की ----------देखने लायक है। (सजाना)
(घ) पानी का -------तेज है, संभलकर तैरना। (बहना)
(ङ) ---में सभी नटखट होते हैं। (बच्चा)
(च) आतंकवादी ---------- के शत्रु हैं। मानव)

4.उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव का पता चलता है, उसे क्या कहते हैं?

प्राणी व स्थान □ संज्ञा □ सर्वनाम □

ख) जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का ज्ञान हो, उसे क्या कहते हैं?

जातिवाचक संज्ञा □ व्यक्तिवाचक संज्ञा□ द्रव्यवाचक संज्ञा □

(ग) संज्ञा के मुख्य रूप से कितने भेद होते हैं?

दो □ तीन □ चार □

(घ) जिन शब्दों से व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के गुण, दोष, दशा का बोध हो, उन्हें क्या कहते हैं?

समुदायवाचक संज्ञा □ जातिवाचक संज्ञा□ भाववाचक संज्ञा □

(ङ) 'बच्चों की हँसी बहुत प्यारी होती है' में 'हँसी' शब्द क्या है?

व्यक्तिवाचक संज्ञा□ जातिवाचक संज्ञा□ भाववाचक संज्ञा□

(च) 'बचपन में श्रीकृष्ण बहुत नटखट थे। इनमें किन-किन संज्ञा शब्दों का प्रयोग है?

भाववाचक □ व्यक्तिवाचक □ दोनों □

(छ) 'बुढ़ापा एक रोग है' में भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?

बुढ़ापा □ एक □ रोग □

5. निम्नलिखित शब्दों को उनके भेद के अनुसार लिखिए-

मिठास, सच्चाई, सुंदरता, इंडिया गेट, हरिद्वार, प्रयागराज,धर्मशाला, बाजार, फल, बहन, बुढ़ापा,

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
----------	----------	---------
----------	----------	---------
----------	----------	---------
----------	----------	---------

पाठ- 6 लिंग (Gender)

नीचे दिए गए चित्र को देखो और पढ़ो

बैल

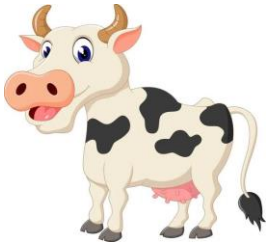
गाय

लड़का

लड़की

ऊपर के चित्रों में बैल और लड़का से पुरुष जाति का तथा गाय एवं लड़की से स्त्री जाति का बोध होता है ।

परिभाषा – ऐसे शब्द जिनसे किसी स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

लिंग के दो प्रकार होते है –

1.पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

1. पुल्लिंग (Masculine Gender)-जो संज्ञा शब्द पुरुष जाति का बोध करवाएँ, वे पुल्लिंग कहलाते हैं। जैसे-शेर,पिता,घोड़ा आदि ।

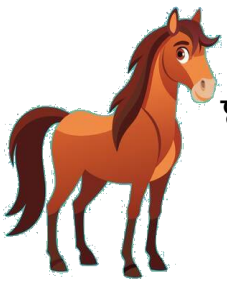
घोड़ा

पिता

पुल्लिंग की पहचान

(क) शरीर के कुछ अंगों के नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे-पाँव, हाथ, अँगूठा, मस्तक, मुँह, दाँत, नाखून, कान, गला, सिर आदि। (ध्यान रखिए-जीभ, टाँग, नाक आदि स्त्रीलिग हैं।)

(ख) कुछ वृक्षों और फलों के नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे - आम, बरगद, अनार, केला, आम, संतरा, सेब आदि। (ध्यान रखिए-नाशपाती, लीची, इमली स्त्रीलिंग हैं)

(ग) अनाजों के ये नाम पुल्लिग है-चना, बाजरा, गेहूं, चावल, आदि। (ध्यान रखिए-मक्का, मूंग-स्त्रीलिंग हैं)

• (घ) रत्नों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे हीरा, नीलम, पन्ना, पुखराज, मोती आदि।

(ङ) समुद्रों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे अरब सागर, हिंद महासागर, काला सागर आदि।

(च) देशों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-चीन, भारत, रूस, जर्मनी, इंग्लैंड आदि।

(छ) द्रव पदार्थों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे दूध, पानी, घी, तेल, पेट्रोल, शर्बत आदि। (ध्यान रखिए-चाय, लस्सी, शिकंजी स्त्रीलिंग हैं)

(ज) दिनों (वारों) के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-सोमवार, बुधवार, शुक्रवार आदि।

(झ) महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-चैत्र, वैसाख, फाल्गुन, श्रावण, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त आदि। (ध्यान रखिए-जनवरी, फरवरी, मई स्त्रीलिंग हैं।)

(ञ) धातुओं के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-लोहा, सोना, ताँबा आदि। (ध्यान रखिए-चाँदी-स्त्रीलिंग है)

(ट) ग्रहों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र आदि। (ध्यान रखिए 'पृथ्वी' भी एक ग्रह है, पर यह स्त्रीलिंग है)

(ठ) जिन शब्दों के अंत में आ, आव, पन, आपा, त्व-प्रत्ययों का प्रयोग होता है, वे पुल्लिंग होते हैं।

जैसे -"आ-छाता, लोटा, कमरा आदि।

आव-बहाव, लगाव, झुकाव आदि।

पन-बचपन, लड़कपन, अपनापन आदि।

आपा-बुढ़ापा, मोटापा आदि।

त्व-पशुत्व, मनुष्यत्व, देवत्व आदि।

2. स्त्रीलिंग (Feminine Gender) -

जो संज्ञा शब्द स्त्री जाति का बोध करवाएँ, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे- शेरनी, नौकरानी, महिला आदि।

शेरनी

महिला

स्त्रीलिंग की पहचान

क) भाषा, बोली और लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-भाषा- हिंदी, उर्दू, जर्मन, फ्रेंच, रूसी, तमिल, कन्नड़ आदि।

(ख) बोली- भोजपुरी, मैथिली, अवधी, राजस्थानी, हरियाणवी आदि।

(ग) लिपि- देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी आदि।

(घ) तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- अमावस्या, पूर्णिमा, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी आदि।

(ङ) नदियों और झीलों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

जैसे-

नदी- गंगा, यमुना, सतलुज, कावेरी, नर्मदा आदि।

झील - बड़खल, बेकाल, साँभर, डल आदि।

(च) जिन शब्दों के अंत में आवट, आहट, इया, ता, आई, नी, इमा, ई, री आदि आते हैं, वे प्रायःस्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-मिलावट, घबराहट, चुहिया, एकता, दासता, लड़ाई, जननी, प्यास, खिड़की, बकरी इत्यादि।

(छ) संस्कृत के आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-दया, कृपा, माला, ममता, हिंसा, क्रीड़ा, परीक्षा, समता, प्रतियोगिता इत्यादि।

(ज) शरीर के कुछ अंग स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-नाभि, छाती, कमर, आँख, नाक, एड़ी, पलक, जीभ इत्यादि।

लिंग परिवर्तन

'आ' प्रत्यय जोड़कर

छात्र	-	छात्रा	शिष्य	-	शिष्या
प्रिय	-	प्रिया	सुत	-	सुता
सदस्य	-	सदस्या	पात्र	-	पात्रा

'ई' प्रत्यय जोड़कर

बकरा -बकरी	भतीजा -भतीजी
चाचा -चाचा	नाना - नानी
मामा - मामी	हिरन -हिरनी
मुरगा - मुरगी	दास - दासी

'नी ' प्रत्यय जोड़कर

मोर – मोरनी　　शेर – शेरनी

ऊँट – ऊँटनी　　चोर – चोरनी

तपस्वी – तपस्वनी　　हंस– हंसनी

'इया' प्रत्यय जोड़कर

गुड्डा – गुड़िया　　चिड़ा – चिड़िया

खाट– खटिया　　चूहा – चुहिया

बाग – बगिया　　डिब्बा – डिबिया

लोटा – लुटिया　　बंदर – बंदरिया

इका' प्रत्यय जोड़कर

गायक –गायिका　　पाठक – पाठिका

नायक – नायिका　　सेवक – सेविका

लेखक – लेखिका　　बालक – बालिका

याचक – याचिका　　संचालक – संचालिका

'इन' प्रत्यय जोड़कर

मालिक – मालकिन　　ग्वाला –ग्वालिन

धोबी – धोबिन　　लुहार –लुहारिन

पड़ोसी – पड़ोसिन　　नाग – नागिन

जुलाहा –जुलाहिन पापी –पापिन

पुजारी –पुजारिन

'आनी' या ' आणी' प्रत्यय

देवर –देवरानी सेठ –सेठानी

जेठ –जेठानी नौक – नौकरानी

इंद्र – इंद्राणी रुद्र – रुद्राणी

भव – भवानी क्षत्रिय – क्षत्राणी

'आइन' प्रत्यय जोड़कर

ठाकुर –ठकुराइन पंडित – पंडिताइन

लाला –ललाइन हलवाई – हलवाइन

चौबे – चौबाइन

'इनी' प्रत्यय जोड़कर

स्वामी –स्वामिनी तपस्वी –तपस्विनी

हाथी – हथिनी ब्रह्मचारी –ब्रह्मचारिणी

यशस्वी –यशस्विनी

'वान' को 'वति' तथा 'मान' को 'मती' में बदलकर

श्रीमान –श्रीमती गुणवान – गुणवती

बुद्धिमान – बुद्धिमती भाग्यवान–भाग्यवती

महान - महती आयुष्मान -आयुष्मती

'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर

विधाता - विधात्री नेता - नेत्री

दाता -दात्री

कुछ शब्दों के पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग रूप पूरी तरह भिन्न होते हैं । जैसे -

पुरुष -स्त्री बिलाव -बिल्ली

वर - वधू भाई -बहिन

बैल -गाय युवक - युवती

कवि -कवयित्री सम्राट - साम्राज्ञी

नर - मादा वीर - वीरांगना

साधु - साध्वी ससुर - सास

आओ जानें

- शब्दों के जिस रूप से उनके स्त्री जाति या पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।
- लिंग के दो भेद होते हैं- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।
- जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।
- जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
- कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका प्रयोग हमेशा पुल्लिंग में ही किया जाता है;
- जैसे- कौआ, खटमल, उल्लू, तोता, मच्छर आदि।
- •कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका प्रयोग हमेशा स्त्रीलिंग में ही किया जाता है; जैसे मैना, कोयल, मक्खी, चील, मछली आदि।

अभ्यास कार्य

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) लिंग किसे कहते हैं? परिभाषा दीजिए।

(ख) पुल्लिंग और स्त्रीलिंग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) ऐसे तीन-तीन शब्द लिखिए जो नित्य स्त्रीलिंग तथा नित्य पुल्लिंग रहते हैं।

नित्य पुल्लिंग - ------ ------ -----

नित्य स्त्रीलिंग - ------ ----- -----

2.उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) जो शब्द पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे क्या कहलाते हैं?

पुल्लिंग □ स्त्रीलिंग □ लिंग □

(ख) लिंग के कितने भेद होते हैं?

छह □ पाँच □ दो □

(ग) देशों के नाम प्रायः क्या होते हैं?

पुल्लिंग □ स्त्रीलिंग □ इनमें से कोई नहीं□

(घ) 'आवट' से अंत होनेवाले शब्द क्या कहलाते हैं?

पुल्लिंग □ स्त्रीलिंग □ लिंग □

3.निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए-

ऊँट - कवि -

नेता - पड़ोसिन -

नायिका - खाट -

श्रीमान - देवरानी -

4.नीचे दिए गए वाक्यों के लिंग बदलकर पुनः वाक्य लिखिए-

(क) ग्वाला दूध लाया है। ----------

(ख) बंदर केला खा रहा है। ----------

(ग) वर ने जयमाला डाल दी है। -------

(घ) बालक शेर से डर गया । --------

(ङ) अध्यापक जी कुछ लिख रहे हैं। ---------

पाठ- 7 वचन (Numbers)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखकर उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए -

लड़की पढ़ रही हैं ।

लड़कियाँ पढ़ रही हैं।

तितली उड़ रही हैं ।

तितलियाँ उड़ रही हैं।

में एक से अधिक हैं। एक अथवा अनेक का बोध कराने वाले इन्हीं शब्दों को वचन

उपर्युक्त वाक्यों में 'लड़की' तथा 'तितली' संख्या में एक हैं जबकि 'लड़कियाँ' और 'तितलियाँ' संख्या कहते हैं।

परिभाषा – शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

वचन के दो भेद होते है –

1 .एकवचन

2 . बहुवचन

एकवचन

मुरगी दाना चुग रही हैं ।

यह घड़ी कीमती हैं ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'मुरगी' और 'घड़ी' शब्द संख्या में एक होने का बोध करा रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि ये एकवचन हैं।

परिभाषा – शब्द का वह रूप जिससे उसके एक होने का बोध होता है, एकवचन कहलाता है; जैसे- केला, घोड़ा, गाय, लड़की, पुस्तक, लोटा, मेज, कुर्सी, जूता आदि।

बहुवचन

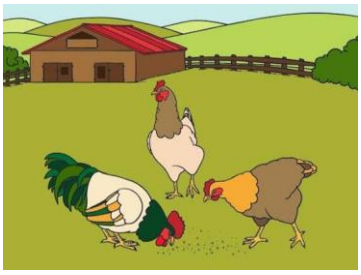

मुरगियाँ दाना चुग रही हैं ।

ये घड़ियाँ कीमती हैं ।

दिए गए वाक्यों में 'मुरगियाँ' और 'घड़ियाँ' शब्द संख्या में एक से अधिक होने का बोध करा रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि ये बहुवचन हैं।

परिभाषा – शब्द के जिस रूप से अनेक संख्या का बोध होता है, बहुवचन कहलाता है; जैसे केले, घोड़े, गाएँ, लड़कियाँ, पुस्तकें, लोटे, मेजें, कुर्सियाँ, जूते आदि।

वचन की पहचान

वचन की पहचान दो प्रकार से की जा सकती है :

(क) संज्ञा या सर्वनाम शब्द से

(ख) वाक्य में प्रयुक्त क्रिया पद से

उदाहरण-

एकवचन	**बहुवचन**
वह स्कूल गया।	वे स्कूल गए।
मछली तैरती हैं।	मछलियाँ तैरती हैं।

- सम्मान या आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे-दादा जी बाजार जा रहे हैं ।
- जवाहर लाल नेहरू बच्चों से बहुत प्यार करते थे ।
- कुछ शब्दों का प्रयोग हमेशा एकवचन में किया जाता है। जैसे सत्य, दूध, घी, वर्षा, सूरज, पानी, आग, जनता इत्यादि।
- कुछ शब्दों का प्रयोग हमेशा बहुवचन में किया जाता है। जैसे- प्राण, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, होश, लोग, समाचार इत्यादि।
- भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे चारों ओर हरियाली छायी हुई है। एकता में असीम शक्ति है।

एकवचन से बहुवचन में परिवर्तन के नियम -

'अ' को 'एँ' करने से बनने वाले बहुवचन-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
किताब	किताबें	रात	रातें
आँख	आँखें	बहिन	बहिनें
दवात	दवातें	कलम	कलमें
बात	बातें	चाल	चालें

'आ' को 'ए' करने से बनने वाले बहुवचन-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कौआ	कौए	पंखा	पंखे
कपड़ा	कपड़े	कमरा	कमरे
कुत्ता	कुत्ते	पत्ता	पत्ते
केला	केले	संतरा	संतरे
लड़का	लड़के	रास्ता	रास्ते

'आ' को 'एँ' करने से बनने वाले बहुवचन-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कथा	कथाएँ	माला	मालाएँ
कविता	कविताएँ	सेना	सेनाएँ
लता	लताएँ	सभा	सभाएँ
कला	कलाएँ	माता	माताएँ
गाथा	गाथाएँ	शाखा	शाखाएँ

'इ'/ 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' करने से बनने वाले बहुवचन-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कली	कलियाँ	लड़की	लड़कियाँ
कॉपी	कॉपियाँ	नीति	नीतियाँ
रीति	रीतियाँ	गली	गलियाँ
नदी	नदियाँ	बेटी	बेटियाँ
गाथा	गाथाएँ	शाखा	शाखाएँ

'या' के स्थान पर 'याँ' अथवा चंद्रबिंदु लगाने से बनने वाले बहुवचन-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	चिड़ियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	बिटिया	बिटियाँ
पुड़िया	पुड़ियाँ	चुहिया	चुहियाँ

'उ', 'ऊ' या 'औ' के साथ 'एँ' लगाने से बनने वाले बहुवचन-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गौ	गौएँ	धेनु	धेनुएँ
वधू	वधुएँ	वस्तु	वस्तुएँ
धातु	धातुएँ	बहू	बहुएँ

कुछ शब्दों के अंत में वृंद, वर्ग, जन, लोग, गण, दल आदि शब्दांश जोड़कर भी बहुवचन बनाए जाते हैं।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
छात्र	छात्रगण	प्रजा	प्रजाजन
अध्यापक	अध्यापकवृंद	आप	आपलोग
मज़दूर	मज़दूर वर्ग	सैनिक	सैनिक दल

कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके रूप 'एकवचन' तथा 'बहुवचन' दोनों में समान होते हैं।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
क्षमा	क्षमा	नेता	नेता
जल	जल	प्रेम	प्रेम
गिरि	गिरि	क्रोध	क्रोध
राजा	राजा	पानी	पानी

आओ दोहराएँ

- वचन द्वारा किसी भी शब्दों (व्यक्ति, वस्तु आदि) की संख्या का पता चलता है।
- वचन दो प्रकार के होते हैं-एकवचन और बहुवचन।
- जिन शब्दों से संख्या के एक होने का पता चलता है, एकवचन कहलाता है।

- जिन शब्दों से संख्या के एक से अधिक (अनेक) होने का पता चलता है, बहुवचन कहलाता है।
- कुछ शब्द हमेशा एकवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे वर्षा, जनता, पानी, झूठ, आदि।
- कुछ शब्द हमेशा बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे प्राण, हस्ताक्षर, समाचार, दर्शन आदि।

आओ अभ्यास करें

1 . निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) वचन किसे कहते हैं? परिभाषा दीजिए।

(ख) वचन कितने प्रकार के होते हैं? नाम लिखिए।

(ग) एकवचन और बहुवचन में क्या अंतर है?

2 . कोष्ठक में दिए गए शब्दों का सही वचन भरकर वाक्य पूर्ण कीजिए-

क. ------- भौंक रहे थे। (कुत्ता)

ख. चोर --------- तोड़कर घर में जा घुसा। (ताले)

ग. स्टेशन के बाहर ---------- खड़ी थीं। (गाड़ी)

घ. - ---------- प्रार्थना करने में मग्न हैं। (भक्त)

ङ. हाँ केवल ---------- बैठ सकती हैं। (महिला)

3.उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) 'प्रजा' शब्द का बहुवचन होगा-

प्रजाएँ □ प्रजावर्ग □ प्रजाजन □

(ख) हमें शीतल जल प्रदान करती हैं।

नदियाँ □ नदी □ बादल □

(ग) इस बार पुस्तकालय में कई नई ---------आई हैं ।

पुस्तकें □ पुस्तक □ अखबार □

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए-

(क) मेरा चाचा जी आ गया। ----------

(ख) आसमान में तारा चमक रहे हैं। ----------

(ग) मैं बाजार से कुछ दवाई लाया। ----------

(घ) पुस्तकालय में बहुत -सी किताब हैं। ----------

5 .नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन लिखिए-

चुहिया - -------- मज़दूर - ---------

कुर्सी - --------- खटिया - ---------

6 .नीचे दिए गए शब्दों के एकवचन लिखिए-

धेनुएँ - ------- नदियाँ - -------

गुरुजन - ------- बहिनें - -------

पाठ- 8 कारक (Case)

अध्यापिका ने कक्षा में श्यामपट्ट पर निम्न वाक्य लिखे-

1.बाग फूल खिले हैं।

2.भव्या गाना गाया।

3.सचिन मैच शतक बनाया।

4. कक्षा अध्यापिका शुभम प्रशंसा की।

यद्यपि इन सभी वाक्यों के शब्द अर्थपूर्ण हैं फिर भी क्या आप इन वाक्यों को इस प्रकार लिख सकते हैं कि इनका अर्थ समझ में आ जाए? एक मेधावी छात्र ने इन वाक्यों को इस प्रकार लिखा-

1. बाग में फूल खिले हैं।
2. भव्या ने गाया गाया।
3. सचिन नें मैच में शतक बनाया।
4. कक्षा में अध्यापिका ने शुभम की प्रशंसा की।

यदि आप रंगीन शब्दों को ध्यान से देखेंगे तो पाएँगे कि पहले लिखे वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया शब्द तो हैं, लेकिन उनमें संबंध स्थापित करने वाले शब्द नहीं हैं। इसी प्रकार ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन शब्द वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि को आपस में जोड़कर अर्थपूर्ण बनाते हैं। इन शब्दों को कारक चिह्न या परसर्ग कहा जाता है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया अथवा अन्य शब्दों से ज्ञात हो, उसे कारक कहते हैं।

कारक विभक्ति - संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के पश्चात् ने, को, से, के, लिए आदि जो चिह्न लगे होते हैं, वे कारक चिह्न या विभक्ति कहलाते हैं।

कारक के भेद

कारक के आठ भेद हैं -

1. कर्ता कारक (Nominative Case)
2. कर्म कारक (Objective Case)
3. करण कारण (Instrumental Case)
4. संप्रदान कारक (Dative Case)
5. अपादान कारक (Ablative Case)
6. संबंध कारक (Genitive Case)
7. अधिकरण कारक (Locative Case)
8. संबोधन कारक (Vocative case)

कारक और उनके विभक्त-चिह्न

कारक	विभक्त-चिह्न (परसर्ग)
1.कर्ता कारक	ने, शून्य
2.कर्म कारक	को, शून्य
3. करण कारक	से, के द्वारा
4. संप्रदान कारक	को, के लिए
5. अपादान कारक	से (अलग होने केअर्थ में)
6. संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री
7.अधिकरण कारक	में, पर
8. संबोधन कारक	हे, अरे

1.**कर्ता कारक** - कर्ता का अर्थ है- कार्य करनेवाला। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करनेवाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे-

- राधा समाचार-पत्र पढ़ती है ।
- सुनीता ने पत्र लिखा ।

2.**कर्म कारक** - जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे-

- श्री कृष्ण ने कंस को मारा।
- चरवाहा गायों को चराता है ।

3.**करण कारक**- कर्ता जिस साधन से कार्य करता है, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे-

- आलोक साबुन से नहाता है ।
- वह कार से मथुरा गई।

4. **संप्रदान कारक** -जिसके लिए कर्ता क्रिया करता है या जिसको कुछ दिया जाता है, वह संप्रदान कारक कहलाता है। जैसे-

- पिताजी बालक के लिए साइकिल लाए।
- ये खिलौने तुम्हारे लिए हैं।

5. **अपादान कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते है; जैसे-

- पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं।
- गंगा हिमालय से निकलती है।

6. **संबंध कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य सर्वनाम शब्दों से प्रकट हो, उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे-

- चेतक राणा प्रताप का घोड़ा था।
- हम सब भारत के वासी है।

7. अधिकरण कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप द्वारा क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते है; जैसे–

- सरोवर में कमल खिले हैं।
- पेड़ पर बंदर बैठा है।

8. संबोधन कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को संबोधित किया जाए या पुकारा जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं; जैसे–

- हे पार्थ! फल की इच्छा किए बिना युद्ध करो।
- अरे राजन ! आपका आगमन हो गया।

आओ जाने

- संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ पता चले, उसे कारक कहते हैं।
- जिन शब्दों से क्रिया (कार्य) करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं।
- जिस पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है।
- कर्ता जिस साधन के द्वारा क्रिया करता है, वह करण कारक कहलाता है।
- जिसके लिए क्रिया की जाती है, उसे व्यक्त करने वाला शब्द संप्रदान कारक कहलाता है।
- संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के दूसरी वस्तु से अलग होने का भाव उत्पन्न हो, वह अपादान कारक कहलाता है।
- संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप, जिससे एक वस्तु का दूसरी वस्तु या व्यक्ति के साथ संबंध ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं।
- संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
- शब्द के जिस रूप से किसी को बुलाने का या सचेत करने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं।

अभ्यास कार्य

1.निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए

(क) कारक किसे कहते हैं?

(ख) कारक के कितने भेद होते हैं?

(ग) कारक चिह्नों को और क्या कहते हैं?

(घ) कर्ता कारक किसे कहते हैं?

(ङ) कर्म कारक किसे कहते हैं?

2.सही वाक्यों के सामने सही (✓) का चिह्न तथा गलत के सामने गलत (x) का चिह्न लगाइए-

(क) अपादान कारक का विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' है। ( )

(ख) कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न 'ने' है। ( )

(ग जिस पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है।( )

(घ) कारक के आठ भेद होते हैं। ( )

3.कारक संबंधी गलतियों को ठीक करके वाक्यों को दोबारा लिखिए -

क. कार पर पिता जी बैठे हैं। ---------

ख. नितिन ने कमाल से पुकारा। ------

ग. कोयल डाली में बैठी हैं । --------

घ.परेश को खेत में काम किया। ------

ङ.धूप तेज़ है, छाया का बैठो। ------

4. सही कारक चिह्न चुनकर रिक्त स्थानों में भरिए-

(क) अनार मेज --------- रखे हैं।

(ख) शकुनि दुर्योधन -------- मामा थे।

(ग) उसकी आँखों -------- आँसू छलछला आए।

(घ) अमित --------किताब ले आओ।

(ङ) कविता ------- भाई नटखट है।

5. उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए –

(क) क्रिया को करनेवाला कौन-सा कारक होता है?

कर्ता [ ] कर्म [ ] करण [ ]

(ख) जिसके लिए काम किया जाता है, उसे कौन-सा कारक कहते हैं?

संप्रदान [ ] संबोधन [ ] अपादान [ ]

ग) गरीबो को दान देना चाहिए।

कर्म [ ] सं प्रदान [ ] संबंध [ ]

(घ) नेहा पुस्तकालय में पढ़ती है।

कर्ता [ ] अधिकरण [ ] कर्म [ ]

(ङ) अरे बच्चो शोर मत करो।

संबोधन [ ] कर्ता [ ] करण [ ]

पाठ- 9 सर्वनाम (Pronoun)

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, वे सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे-

मैं गाना गा रहा हूँ ।

वह पढ़ रही है ।

हम फुटबॉल खेलते है ।

उपर्युक्त वाक्यों में आए रंगीन शब्द मैं, वह, हम सर्वनाम हैं क्योंकि ये लड़का, लड़की आदि संज्ञा शब्दों के स्थान पर आए हैं।

वाक्यों में सर्वनाम शब्दों का प्रयोग ज़रूरी होता है क्योंकि इनके प्रयोग के बिना वाक्य पढ़ने में अटपटा-सा लगता है और पढ़ने में बाधा उत्पन्न होती है।

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छः भेद होते हैं-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Definite Pronoun)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
5. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) - जिन सर्वनाम शब्दों से कहने वाले, सुनने वाले या जिसके विषय में बात की जाए, उसका बोध हो, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, हम, मैंने, हमने, तुम, आप, वह, वे आदि।

"हमने तुमसे कल ही कहा था कि वह आज नहीं आएगा।"

उपर्युक्त वाक्य में हमने शब्द कहने वाले, तुमसे शब्द सुनने वाले तथा वह शब्द जिसके विषय में बात की है। उसके लिए प्रयोग किए गए हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं-

क. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम- बोलने के लिए प्रयुक्त सर्वनाम को उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मेरा, हमारा, मुझे, हमें आदि।

ख. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम- बोलने वाले के द्वारा सुनने वाले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सर्वनाम को मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- तुम, तेरा, तुम्हारा, आप, आपका इत्यादि।

ग. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम- बोलने वाले के द्वारा किसी तीसरे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सर्वनाम को अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- वह, वे, उन्हें, उनका आदि।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम के द्वारा किसी पास या दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चित रूप से बोध होता हो, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- यह, वह।

ये मेरे पिताजी हैं।

1. अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- कोई, कुछ आदि।

बगीचे में कोई खड़ा है।

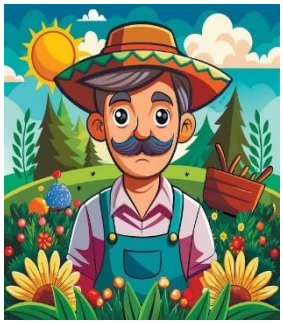

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनामों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है. उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- कौन, कहाँ, कैसा, क्या आदि।

तुम कहाँ गए थे?

5. संबंधवाचक सर्वनाम- जो सर्वनाम शब्द वाक्य में आए शब्दों का दूसरे से संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- जिसे, जिससे, जो, सो, इत्यादि।

जो सोता है, वह खोता है।

6. निजवाचक सर्वनाम- व्यक्ति (कर्ता) द्वारा अपने लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनामों को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- अपना, अपनी, अपने आप, स्वयं, खुद, आप आदि।

मैं अपने आप पढ़ती हूँ।

आओ जानें

•संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

•जिन सर्वनाम शब्दों से कहने वाले, सुनने वाले या जिसके विषय में बात की जाए, उसका बोध हो। उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

• पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं- (क) उत्तम पुरुष, (ख) मध्यम पुरुष, (ग) अन्य पुरुष।

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

•जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

•जो सर्वनाम शब्द वाक्यों में किसी दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्द से संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

•जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अभ्यास करें

1.प्रश्नो के उत्तर लिखिए

क) सर्वनाम किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं?

(ग) निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या अंतर है?

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम की परिभाषा लिखिए।

2. उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) मैंने खाना खा लिया है।

पुरुषवाचक ( ) संबंधवाचक ( ) निजवाचक ( )

(ख) जो काम करेगा, उसे ही फल मिलेगा।

पुरुषवाचक ( ) संबंधवाचक ( ) प्रश्नवाचक ( )

(ग) माँ, कोई दरवाजे के बाहर खड़ा है।

संबंधवाचक ( ) निश्चयवाचक ( ) अनिश्चयवाचक ( )

(घ) मैंने अपने आप यह चित्र बनाया है।

निजवाचक ( ) प्रश्नवाचक ( ) निश्चयवाचक ( )

3.निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करके सर्वनाम शब्द को सामने लिखिए-

(क) वह बहुत अच्छा लड़का है। ------

(ख) यह मेरी बहन है। -------

(ग) बाहर कोई खड़ा है। -------

(घ) जैसा करोगे, वैसा भरोगे। ------

(ङ) तुम कहाँ से आ रहे हो? -----

(च) मैं स्वयं चला जाऊँगा। -------

4.रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम शब्द लिखिए-

क. कमलेश ने --------- भोजन दिया। (उसे / आपसे / जिनको)

ख. --------- सवेरे जल्दी उठना है। (इनमें / तुम्हें / उन्होंने)

ग. तुम्हारी पुस्तक -------- पास है। (उन्होंने / इनसे / मेरे)

घ. वे ------- स्कूल पहुँच जाएँगे। (अपने आप / उसने / उसको)

5. वाक्यों में आए सर्वनाम का शुद्ध रूप लिखकर वाक्य पुनः लिखिए-

i) तेरे को हमेशा काम रहता है। --------

ii) मेरे को घर जाना है । ----------

iii) किसी का काम कर रहे हो ? ------

iv) वे अच्छा लेख लिखता है।-------

v) तुम्हारी नाम क्या है ?-------

vi) वह कहाँ खड़े हैं ?--------

पाठ- 10 विशेषण (Adjective)

दिए गए चित्रों को देखकर उनके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए-

रोहन तेज दौड़ता हैं

ऋतु ने तीन किलो टमाटर खरीदे

इन्द्रधनुष में सात रंग होते हैं

ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन शब्द तेज, तीन किलो, और सात किसी-न-किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं। इन्हें विशेषण कहते हैं।

जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

विशेष्य - विशेषण शब्द जिन शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। जैसे -

वाक्य	विशेष्य	विशेषण
आम मीठा हैं।	आम	मीठा
काला घोड़ा दौड़ रहा है।	काला	घोड़ा

विशेषण के भेद

विशेषण चार प्रकार के होते हैं-

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality) - जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, स्थान आकार आदि के विषय में बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - गीता अच्छी लड़की है ।

भरत बलशाली है ।

गुणवाचक विशेषण के कुछ अन्य उदाहरण-

- गुण - ईमानदार, अच्छा, सच्चा, दयालु, बुद्धिमान आदि।
- दोष - बुरा, झूठा, पापी, कपटी आदि।
- भाव - वीर, क्रोधी, दयालु, हंसना, रोना आदि।
- रंग - गोरा, काला, सफ़ेद, लाल, नीला, पीला, हरा आदि।
- आकार - छोटा, बड़ा, बौना, लंबा, गोल, चौड़ा, संकरा आदि।
- दशा - मोटा, पतला, स्वस्थ, बूढ़ा, युवा, बीमार, कमज़ोर, ताकतवर आदि।
- स्थान - ग्रामीण, जापानी, चीनी, शहरी, प्राचीन, आगामी आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण (Numerical Adjective) - जो विशेषण शब्द किसी भी संज्ञा या सर्वनाम शब्दो की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे -

अन्य उदाहरण:

तीन चिड़ियाँ पेड़ पर बैठी हैं।

मेरी कक्षा में तीस छात्र हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में चालीस और तीन शब्द छात्रों व चिड़ियों की संख्या का बोध करा रहे हैं। अतः ये संख्यावाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण में किसी भी प्राणी, वस्तु अथवा स्थान को हम गिन सकते हैं।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं-

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण - जिन विशेषण शब्दों से किसी निश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे दो आदमी, तीन लड़कियाँ, दो पक्षी आदि।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण का बोध निम्नलिखित तीन प्रकार से हो सकता है-

गणनावाची - एक, दो, तीन, चार आदि।
क्रमवाची - पहला, दूसरा, तीसरा आदि।
समूहवाची - दोनों, तीनों, चारों आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण- जिन शब्दों से किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं होता, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे- -कुछ, अधिक, सभी आदि।

3.**(परिमाणवाचक विशेषण (Quantitative Adjective)** - जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु की नाप-तौल का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- मुझे दो मीटर कपड़ा दो।
- मुझे एक किलो चीनी चाहिए।

उपर्युक्त वाक्यों में दो मीटर और एक किलो शब्द कपड़े व चीनी का परिमाण बता रहे हैं। अतः ये परिमाणवाचक विशेषण हैं।

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते हैं -

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण - इनसे माप-तौल की निश्चित मात्रा का पता चलता है। जैसे-पाँच मीटर, दस लीटर, चार किलो इत्यादि।

ख. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण- इनसे माप-तौल की निश्चित मात्रा का पता नहीं चलता है। जैसे- थोड़ा पानी, ज़्यादा लड्डू, कुछ अन्न इत्यादि।

4. सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective) - ऐसे विशेषण शब्द जो संज्ञा से पूर्व आकर उनकी ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- यह पुस्तक मेरी है
- वह लड़की सुंदर है।
- वे फल ताजे हैं, खा लो।

उपर्युक्त वाक्यों में यह, वह तथा वे शब्द क्रमशः पुस्तक, लड़की और फल की ओर संकेत कर रहे हैं, अतः ये संकेतवाचक विशेषण या सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं।

विशेषण शब्दों की रचना

कुछ शब्द मूलरूप में ही विशेषण होते हैं, किंतु कुछ विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रिया शब्दों से की जाती है।

संज्ञा से विशेषण बनाना

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
रोगी	रोगी	पुष्प	पुष्पित
क्रोध	क्रोधी	रस	रसीला
प्यास	प्यासा	अर्थ	आर्थिक
श्रद्धा	श्रद्धालु	सेना	सैनिक
कृपा	कृपालु	लालच	लालची
आत्म	आत्मिक	ग्राम	ग्रामीण
समाज	सामाजिक	संकेत	सांकेतिक
व्यवहार	व्यावहारिक	समय	सामयिक

सर्वनाम से विशेषण बनाना

सर्वनाम	विशेषण
मैं	मेरा
वह	वैसा
जो	जैसा
आप	आपका
यह	ऐसा
कौन	कैसा

क्रिया से विशेषण बनाना

क्रिया	विशेषण
पढ़ना	पढ़ाकू
तैरना	तैराक
खेलना	खिलाड़ी
खाना	खाऊ
बनाना	बनावटी
लड़ना	लड़ाकू
गाना	गायक
बेचना	बिकाऊ
टिकना	टिकाऊ
देखना	दिखावटी

अव्यय से विशेषण बनाना

अव्यय	विशेषण
ऊपर	ऊपरी
नीचे	निचला
पीछे	पिछला
भीतर	भीतरी
आगे	अगला
बाहर	बाहरी

आओ जाने

- जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
- जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, स्थान या आकार आदि के विषय में बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।
- जो विशेषण शब्द किसी भी संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
- जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं ।

अभ्यास करें

1.निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए-

(क) विशेषण किसे कहते हैं?
(ख) विशेषण के कितने भेद होते हैं?
(ग) गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं?
(घ) संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?
(घ) संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

2. उचित वाक्य पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) 'ज़्यादा पानी', व 'थोड़ा दूध' में कौन-सा विशेषण हैं?

संख्यावाचक ( ) गुणवाचक ( ) परिमाणवाचक ( )

(ख) 'यह फूल सुंदर है' में सार्वनामिक विशेषण कौन-सा है?

यह ( ) फूल ( ) सुंदर ( )

(ग) कौन-सा शब्द विशेषण है?

भूखा ( ) भूख ( ) भिखारी ( )

(घ) यह गुलाब लाल है।

गुणवाचक विशेषण ( ) परिमाणवाचक विशेषण ( ) संख्यावाचक विशेषण ( )

(ङ) मेरी कक्षा में पचास बच्चे हैं।

गुणवाचक विशेषण ( ) परिमाणवाचक विशेषण ( ) संख्यावाचक विशेषण ( )

3.कोष्ठक में दिए शब्दों से विशेषण बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) परसों से हमारी -----"परीक्षा शुरू हो रही है। (वर्ष)
(ख) बीरबल बहुत --------थे । (बुद्धि)
(ग) आजकल--------- वस्त्रों की विदेशों में खूब मांग है। (भारत)
(घ)-------- 'साड़ियाँ अच्छी होती हैं। (बनारस)
(ङ) यह आम बहुत -------- है। (रस)

4. निम्नलिखित में विशेषण और विशेष्य शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए

	विशेष्य	विशेषण
मोटी भैंस	------	-------
गहरा कुआँ	------	-------
छोटा बच्चा	------	-------
पतली लकड़ी	------	-------
सच्ची घटना	------	-------
सज्जन व्यक्ति	------	-------
ऊपरी कमरा	------	-------
बहुत मिठाई	------	-------

5.नीचे दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए-

(क) राजा शिवि बड़े दयालु थे। -------

(ख) मोटा लड़का दौड़ नहीं रहा है। -----

(ग) यह रास्ता लंबा है। -------

(घ) मुझे चालीस रुपए दीजिए। ------

6.नीचे लिखे संज्ञा शब्दों से पहले उचित विशेषण शब्द लिखिए-

------- किला

-------आम

-------जलेबी

-------आदमी

-------डॉक्टर

-------घोड़ा

-------विमान

-------कारीगर

-------कपड़ा

-------कचौड़ी

-------कुरता

-------सिपाही

-------अधिवक्ता

-------कमरा

-------नौकर

-------खिलाड़ी

पाठ - 11 क्रिया (VERB)

चित्रों को देखकर उनके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए-

किसान खेत जोत रहा है ।

बच्चा आम खा रहा है ।

उपर्युक्त वाक्यों में जोत रहा है,खा रहा है शब्दों से कार्य करने तथा होने की स्थिति या अवस्था का पता चल रहा है। अतः ये सभी शब्द क्रिया हैं। क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं हो सकता ।

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

धातु (Root)- क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे- लिख, जा, पढ़, खा, गा, ला इत्यादि। क्रिया का सामान्य रूप मूल रूप से ही बनता है। धातु में 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है। जैसे -

जा + ना = जाना पढ़ + ना = पढ़ना

लिख + ना = लिखना खा + ना = खाना

गा + ना = गाना ला + ना = लाना

अन्य क्रियाएँ भी इसी तरह से बनती हैं।

कर्ता- काम करने वाला कर्ता कहलाता है। जैसे –

1. मजदूर काम कर रहा है।
2. बढ़ई मेज़ बना रहा है।
3. नेता जी भाषण दे रहे हैं।
4. नितिन पत्रिका पढ़ रहा है।

उपरोक्त वाक्यों में मज़दूर, बढ़ई,नेता जी और नितिन कर्ता हैं क्योंकि ये कोई-न-कोई काम कर रहे हैं।

क्रिया के भेद (Kinds of Verb)

क्रिया के दो भेद होते हैं –

1.सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)

2.अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)

1 .सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)- जिन क्रियाओं का फल कर्म पर पड़ता है, उन्हें 'सकर्मक क्रियाएँ' कहते है

जैसे – ऊपर के वाक्य में कर्ता और क्रिया के अलावा कर्म भी है। अत:'पढ़ता है' सकर्मक क्रियाहैं। इस वाक्य की क्रिया का फल कर्म (पुस्तक) पर पड़ रहा है।

अजय पुस्तक पढ़ता है

सकर्मक क्रियाओं के अन्य उदाहरण-

•सुशीला फल खाती है।

•स्वाति कविता लिखती है।

•आशा समीक्षा को पढ़ाती है।

सकर्मक क्रिया की पहचान- सकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करते हैं तो उत्तर मिलेगा;

जैसे-

सुशीला क्या खाती है? उत्तर - फल

स्वाति क्या लिखती है? उत्तर - कविता

आशा किसको पढ़ाती है?उत्तर- समीक्षा

सकर्मक क्रिया के भेद

सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं-

1.एककर्मक क्रिया

2.द्विकर्मक क्रिया

1. एककर्मक क्रिया- इसमें एक ही कर्म होता है। इसे सामान्य सकर्मक क्रिया भी कह सकते हैं ।

जैसे-

- अमिता केला खाती है।
- भव्या पुस्तक पढ़ती है ।

2. द्विकर्मक क्रिया - जिन सकर्मक क्रियाओं के दो कर्म होते हैं,उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते है ।

जैसे-

- राम ने मुझे किताब दी।
- माँ बच्चे को दूध पिलाती है।

यहाँ प्रत्येक वाक्य में दो-दो कर्म हैं। पहले वाक्य में 'मुझे' और 'किताब' तथा दूसरे वाक्य में 'बच्चे' और 'दूध' कर्म हैं।

2.अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb) - जिन क्रियाओं का फल कर्ता पर पड़ता है, उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे-

मोर नाचता है ।

ऊपर के वाक्य में केवल कर्ता और क्रिया हैं, उनमें कर्म नहीं है। अत: 'नाचता है' अकर्मक क्रियाएँ हैं। इस वाक्य की क्रिया का फल कर्ता (मोर) पर पड़ रहा है।

अकर्मक क्रिया की पहचान- अकर्मक क्रिया में कर्म नहीं होता। यदि क्रिया के साथ 'क्या' अथवा 'किसको' लगाने से कोई भी उत्तर न मिले तो वह अकर्मक क्रिया होती है।

आओ दोहराए

* जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

* कुछ क्रियाएँ की जाती हैं और कुछ स्वतः होती हैं।

* क्रिया का मूलरूप धातु कहलाता है; जैसे-पढ़, लिख, हँस, गा आदि।

* कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है-सकर्मक क्रिया व अकर्मक क्रिया।

* जब वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है तो क्रिया सकर्मक होती है।

*जब वाक्य में क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता है तो क्रिया अकर्मक होती है।

* सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है-एककर्मक क्रिया व द्विकर्मक क्रिया।

अभ्यास करें

1.प्रश्नो के उत्तर लिखिए

(क) क्रिया किसे कहते हैं?

(ख) क्रिया के कितने भेद होते हैं?

(ग) सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?

(घ) अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?

2. उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) धातु कहलाती है-

क्रिया की विशेषता ( ) क्रिया का मूल रूप( ) क्रिया ( )

(ख) क्रिया के कितने भेद होते हैं?

चार ( ) दो ( ) तीन ()

(ग) जिन क्रियाओं के व्यापार का फल सीधा कर्ता पर पड़ता है, वे क्या कहलाती हैं?

धातु ( ) अकर्मक( ) सकर्मक ( )

(घ) किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्या कहते हैं?

वाक्य ( ) धातु ( ) क्रिया ( )

(ङ) 'बच्चों को मन लगाकर पढ़ना चाहिए' इस वाक्य में कौन-सा शब्द क्रिया है?

बच्चों ( ) पढ़ना ( ) लगाकर ( )

3.निम्नलिखित शब्दों की मूल धातु लिखिए-

पढ़ना ------ जाना ------

लिखना ------ हँसना ------

खाना ----- गाना -----

टहलना ----- सोना ------

4.निम्नलिखित मूल धातुओं के क्रिया शब्द बनाकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) मुझे कहानियाँ -----अच्छा लगता है। (पढ़)

(ख) बच्चों को कुर्सी पर सीधे —------ चाहिए। (बैठ)

(ग) निबंध हमेशा सुलेख बनाकर ------- चाहिए। (लिख)

(घ) रास्ते में चलते समय हमेशा दाएँ-बाँए --------चाहिए। (देख)

(ङ) बच्चों को सुबह जल्दी --------चाहिए। (उठ)

5.निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता पर गोला लगाइए -

क. घोड़ा मैदान में खड़ा है।

ख. गीतांजलि हँस रही है।

ग. जानकी पुस्तक पढ़ती है।

घ. रमेश फुटबॉल खेलता है।

ङ. भैया बाज़ार गए।

च. बच्चा रोने लगा।

छ. अंकित का भाई शहर गया है।

पाठ- 12 काल (Tense)

काल का अर्थ है - समय। काल से क्रिया के समय की जानकारी मिलती है। जैसे-

राधा पाठशाला गई थी ।

वरूण साइकिल चला रहा है ।

रिया बाजार जाएगी ।

क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय की जानकारी मिलती है, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद (Kinds of Tense)

काल के तीन भेद होते हैं -

1. **भूत काल (Past Tense)**
2. **वर्तमान काल (Present Tense)**
3. **भविष्यत काल (Future Tense)**

1.भूतकाल (Past Tense) - क्रिया के जिस रूप से काम के बीते हुए समय में पूरा होने की जानकारी मिले, उसे भूत काल कहते हैं। **जैसे -**

अन्य उदाहरण:

1.नेता जी भाषण दे रहे थे।

2.हमने खाना खाया।

हम कल पिकनिक गए थे ।

2. वर्तमान काल (Present Tense)- क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान में होने की जानकारी मिलती है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। **जैसे** -

माँ खाना बना रही हैं ।

अन्य उदाहरण:

1.नितिन चित्र बना रहा है।

2.बच्ची रो रही है।

3. भविष्यत काल (Future Tense)-क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में होने का पता चलता है, उसे भविष्यत काल कहते हैं। **जैसे**-

आज तेज बारिश होगी।

अन्य उदाहरण:

1.सुमन गीत गाएगी।

2.मेरे मामाजी परसों आएँगे।

आओ दोहराए:

* क्रिया के होने का समय काल कहलाता है।
* काल तीन प्रकार के होते हैं- भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यत्काल।
* बीते समय को भूतकाल कहते हैं।
* चल रहे समय को वर्तमान काल कहते हैं।
* आनेवाले समय को भविष्यत्काल कहते हैं।

अभ्यास कार्य:

1.निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए-

(क) काल किसे कहते हैं?

(ख) काल के कितने भेद होते हैं?

(ग) भूतकाल किसे कहते हैं?

(घ) वर्तमान काल किसे कहते हैं?

(ङ) भविष्यत् काल किसे कहते हैं?

2.उचित विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) काल के कितने भेद होते हैं?

दो ( ) तीन ( ) आठ ( )

2. 'कल तेज़ आँधी के साथ बारिश होगी।' यह वाक्य किस काल का है?

वर्तमान काल( ) भूतकाल ( ) भविष्यत काल ( )

3. प्रीति ने दूध पी लिया है।

भूत काल ( ) वर्तमान काल ( ) भविष्यत काल ( )

4.किसान हल चला रहा है।

भूत काल ( ) वर्तमान काल () भविष्यत काल ( )

5.मजदूर घर जा चुके थे।

भूत काल ( ) वर्तमान काल ( ) भविष्यत काल ( )

3.दिए गए क्रिया शब्दों के धातु रूप भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) तब में अम्मा से कहानी -----रहा होगा।(सुनना)

(ख) जब हम नेहा के घर गए, तब वह खाना -------रही थी। (पकाना)

(ग) दीक्षा पत्र -------- चुकी होगी। (लिखना)

(घ) रोहित पुस्तक ----- रहा है। (पढ़ना)

(ङ) घोड़ा खुले मैदान में ---- रहा है।(दौड़ना)

4.वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार बदलिए-

क. नितिन पत्र पढ़ रहा था। (भविष्यत काल में)

ख. उसने पाठ याद किया। (भविष्यत काल में)

ग. रहीम ने गाना गाया।(वर्तमान काल में)

घ. चाय बन रही है। (भूत काल में)

ङ. घोड़ा घास खाता है।(भविष्यत काल में)

पाठ- 13

अविकारी शब्द (Indeclinable Words)

जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, काल आदि से प्रभावित होकर नहीं बदलता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।

अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं -

1. **क्रियाविशेषण (Adverb)**
2. **संबंधबोधक (Preposition)**
3. **समुच्चयबोधक (Conjunction)**
4. **विस्मयादिबोधक (Interjection)**

1. क्रियाविशेषण (Adverb)

अंकित तेज दौड़ता है ।

कछुआ धीरे - धीरे चलता है ।

यहाँ ' 'तेज', 'धीरे-धीरे' शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये शब्द क्रियाविशेषण हैं।

क्रिया की विशेषता बतानेवाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं-

क. कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)

ख. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Place)

ग. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Manner)

घ. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Quantity)

क. कालवाचक क्रिया-विशेषण- जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के समय का बोध होता है, उन्हें कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे -

- देव प्रतिदिन घूमने जाता है।
- वर्षा कल से हो रही है।
- मैं अभी-अभी आया हूँ।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रतिदिन, कल से और अभी-अभी शब्द क्रिया के समय संबंधी विशेषता बता रहे हैं। अतः ये सभी कालवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

ख. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का बोध होता है, उसे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे -

- तुम मेरे पास बैठो।
- अंकित उधर गया है।

इन वाक्यों में आए पास और उधर शब्द क्रिया के होने के स्थान की जानकारी दे रहे हैं।

3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण- जिन शब्दों से क्रिया के होने की रीति या ढंग का पता चले, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। **जैसे**-

- बुढ़िया रुक-रुक कर चल रही थी।
- चोर अचानक भाग गया।

इन वाक्यों में 'अचानक' तथा 'रुक-रुक' शब्द क्रिया की रीति या ढंग को बता रहे हैं। अतः ये रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं।

घ. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण या मात्रा की जानकारी मिलती है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। **जैसे**

- हाथी ज़्यादा खाता है।
- जितना पढ़ो, उसे याद रखो।

यहाँ ज़्यादा और जितना शब्दों से क्रिया के परिमाण की जानकारी मिलती है।

कुछ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण शब्द - ज़्यादा, थोड़ा, अधिक, काफ़ी, उतना, कम, बराबर आदि।

आओ जाने

* जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता, उन्हें अविकारी या अव्यय शब्द कहते हैं।

* **अविकारी शब्द के चार भेद होते हैं** -

1. क्रियाविशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक

* जो शब्द क्रिया की विशेषता बताता है, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं।

* **क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं** -

1. कालवाचक
2. स्थानवाचक
3. रीतिवाचक
4. परिमाणवाचक

अभ्यास कार्य

1.प्रश्नों के उत्तर लिखिए

(क) क्रिया-विशेषण किन्हें कहते हैं?

(ख) क्रिया-विशेषण के कितने भेद होते हैं?

(ग) कालवाचक क्रिया-विशेषण किन्हें कहते हैं?

(घ) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण किन्हें कहते हैं?

2. निम्नलिखित वाक्यों में से सही के सामने (✓) तथा गलत के सामने (X) का चिह्न लगाइए-

(क) जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। ( )

(ख) क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं।()

(ग) जो शब्द क्रिया की समय संबंधी विशेषताएँ प्रकट करें, वे कालवाचक विशेषण कहलाते हैं। ( )

(घ) जब कोई शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करे तो वह क्रिया-विशेषण कहलाता है। ( )

(ङ) जिन शब्दों से क्रिया की मात्रा या परिमाण का पता चले, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। ( )

3.निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए-

क. अब आप लोग अंदर जाकर बैठिए।

ख. दादा जी कम सुनते हैं।

ग. वह अचानक आ गई।

घ. कमरा बाईं तरफ़ है।

ङ. अंकिता यहाँ बैठी है।

च. अधिक काम मत करो।

2. संबंधबोधक (Preposition)

ऐसे अव्यय शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहा जाता है; **जैसे**-

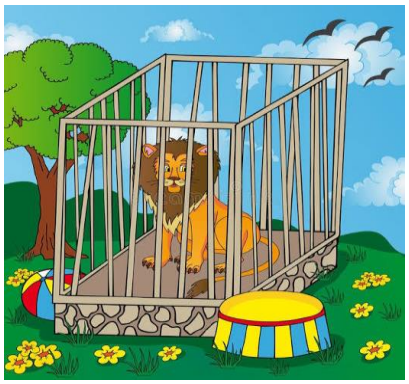

शेर पिंजरे के अंदरहै।

पौधों के बिना धरती सूनी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'के अंदर', 'के साथ' और 'के बिना' शब्द शेर, और पौधों से संबंध प्रकट कर रहे हैं। ये शब्द संबंधबोधक कहलाते हैं।

जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ दर्शाते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।

संबंधबोधक के कुछ अन्य उदाहरण देखिए-

- युद्ध के कारण बहुत क्षति हुई।
- शहर गाँव से दूर है।

• गड़रिये पहाड़ी की ओर जा रहे थे।

• गाय के पीछे उसका बछड़ा भी चल रहा था।

संबंधबोधक अव्यय के निम्नलिखित भेद हैं-

1. कालवाचक - आगे, पीछे, बाद।
2. दिशावाचक - तरफ, ओर, निकट, पास, सामने।
3. समतावाचक - अनुसार, समान, तरह, तुल्य, ।
4. व्यतिरेकवाचक - अलावा, सिवाय, रहित, अतिरिक्त।
5. विरोधसूचक - उलटे, विरुद्ध, प्रतिकूल ।
6. स्थानवाचक - ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर।
7. साहचर्यसूचक - संग, साथ, समेत।
8. साधनवाचक - के द्वारा, के माध्यम से, निमित्त।
9. हेतुवाचक - लिए, हेतु, कारण।

3. समुच्चयबोधक (Conjunction)

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़ो और समझो -

•अनु और मानवी सहेलियाँ हैं।

•पुलकित पढ़ेगा तो पास हो जाएगा।

इन वाक्यों में 'और' दो शब्दों को तथा 'तो' दो वाक्यों को मिला रहे हैं, ये समुच्चयबोधक हैं।

परिभाषा – जो शब्द दो वाक्यों, वाक्यांशों अथवा शब्दों को जोड़ने का काम करते हैं,उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

समुच्चयबोधक के कुछ अन्य उदाहरण देखिए-

क. आज धूप निकली है, इसलिए सब काम पर निकले हैं।

ख. वह विद्यालय आया था,लेकिन जल्दी चला गया।

ग. उसे घर जाना था, अतः कार्यालय से छुट्टी लेनी पड़ी।

समुच्चयबोधक के दो भेद होते हैं-

1.समानाधिकरण समुच्चयबोधक (Co-ordinate Conjunction)

2.व्यधिकरण समुच्चयबोधक (Sub-ordinate Conjunction)

1.समानाधिकरण समुच्चयबोधक (Co-ordinate Conjunction) – ऐसे समुच्चयबोधक शब्द जिन् दो समान शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को समानता के आधार पर एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाता है, ऐसे शब्दों समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे-

•नेहा खड़ी थी और कंगना बैठी थी।

•विशाल चित्र बना रहा है और तनु देख रही है।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक को भी चार उपभेदों में विभाजित किया जाता है –

संयोजक –और, तथा, एवं आदि । जैसे-हमें गुरुजनों एवं माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।

विरोधसूचक - परंतु, बल्कि, लेकिन, मगर आदि। जैसे- वह गरीब है मगर बहुत ईमानदार है।

परिणामसूचक- अतः, इसलिए, फलतः अतएव आदि। जैसे- मैं आज श्रीनगर जा रहा हूँ इसलिए तुम्हारे जन्मदिन की पार्टी में नहीं आ पाऊँगा।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक (Sub-ordinate Conjunction) - ऐसे समुच्च्यबोधक शब्द जिनसे दो उपवाक्यों (प्रधान व आश्रित) को जोड़ा जाए, वे व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे-

•अगर वह बीमार नहीं होता तो परीक्षा में अवश्य बैठता।

•आशा पढ़ेगी क्योंकि उसे पास होना है।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक को चार उपभेदों में बाँटा जाता है-

कारणसूचक - क्योंकि, ताकि, कि, चूँकि आदि। जैसे- प्रतिदिन अभ्यास करो ताकि सफल संगीतकार बन सको।

संकेतसूचक - यद्वि-तथापि, जो-तो, यदि-तो आदि। जैसे- यदि मामा जी समय पर आ जाते तो हम पिकनिक पर अवश्य जाते।

उद्देश्यसूचक - जिससे कि, इसलिए कि आदि। जैसे- संसाधन की बचत आवश्यक है जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर काम आ सके।

स्वरूपसूचक - अर्थात्, मानो, कि, यानी आदि। जैसे- बढ़ता प्रदूषण यानी रोगी समाज।

4. विस्मयादिबोधक (Interjection)

अहा ! कितने सुंदर फूल है ।

शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया ।

Åपर दिये गए वाक्यों में 'शाबाश' तथा 'अहा' पद अलग-अलग भावों को व्यक्त कर रहे हैं। ये विस्मयादिबोधक शब्द हैं।

परिभाषा - ऐसे शब्द जो हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य तथा भय आदि भावों को प्रकट करते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

विस्मयादिबोधक के भेद

1. हर्षसूचक	-	**ओह!, वाह!, वाह!**
2. शोकसूचक	-	**हाय रे!, हाय-हाय!**
3. आश्चर्यसूचक	-	**अहो!, ओह!, ओ हो!, बाप रे!**
4. घृणासूचक	-	**छिः छिः!, धिक् !**
5. स्वीकृतिसूचक	-	**अच्छा!, ठीक!, हाँ!, जी हाँ!**
6. संबोधनसूचक	-	**अरे!, रे!, आ!**
7. क्रोधसूचक	-	**धत्!, चुप!**

आओ दोहराए

* जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं।

* जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें योजक या समुच्चयबोधक कहा जाता है।

* आश्चर्य, खुशी, शोक, घृणा आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

1.प्रश्नो के उत्तर लिखिए

(क) संबंधबोधक अव्यय किन्हें कहते हैं?

(ख) समुच्चयबोधक अव्यय किन्हें कहते हैं?

(ग) विस्मयादिबोधक अव्यय किन्हें कहते हैं?

2. उचित विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए-

(1) कौन-सा समुच्चयबोधक शब्द नहीं है?

अभी ( ) किंतु( ) इसलिए ( )

(2) संबंधबोधक शब्द किसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से कराता है?

संज्ञा ( ) सर्वनाम ( ) दोनो ( )

(3) हर्ष, शोक, भय, घृणा आदि का बोध कौन-से शब्द कराते हैं?

क्रियाविशेषण ( ) विस्मयादिबोधक( ) समुच्चयबोधक ( )

(4) उसका कहना था ------ अपने शत्रु को भी कभी प्राण दंड न देना।

तथा ( ) परंतु ( ) कि ( )

3.निम्नलिखित वाक्यों में आए संबंधबोधक शब्दों पर गोला लगाइए-

क. डर के मारे राकेश चुप ही रहा।

ख. राकेश के बदले उसका भाई आया है।

ग. चोर को रस्सी के द्वारा बाँधकर रखा गया।

घ. पीठ के पीछे किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए।

ङ. सेठ जी ने अपने वज़न के बराबर अनाज दान दिया।

4निम्नलिखित वाक्यों में समुच्च्यबोधक अव्ययों को रेखांकित कीजिए-

(क) मेहनत के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है।

(ख) तुम सिर्फ़ अपना ध्यान रखो अन्यथा धोखा खाओगे।

(ग) प्यासे पथिक पेड़ के नीचे रुक गए और इधर-उधर पानी की तलाश करने लगे।

(घ) मैं आज गोआ जा रहा हूँ इसलिए तुम्हारी शादी में नहीं आ पाऊँगा। मेरी ओर से शादी की हार्दिक शुभकामनाएँ!

5.विस्मयादिबोधक शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

1.वाह-वाह ! ---------- 2.शाबाश! ----------

3. छिः! ---------- 4.बाप रे! ----------

पाठ- 14 विराम-चिह्न (Punctuation)

विराम चिह्न का अर्थ है- रुकना या ठहरना। वक्ता अपने भावों व विचारों को व्यक्त करते समय वाक्य के अंत में या कभी-कभी बीच में ही साँस लेने के लिए रुकता है, इसे विराम कहते हैं।

भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच या अंत में किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

हिन्दी के प्रमुख विराम- चिन्ह निम्नलिखित हैं -

विराम-चिह्न	चिह्न
1. पूर्णविराम (Full Stop)	।
2. अल्पविराम (Comma)	(,)
3. अर्धविराम (Semi Colon)	(;)
4. प्रश्नसूचक चिह्न (Sign of Interrogation)	(?)
5. विस्मयसूचक चिह्न (Sign of Exclamation)	(!)
6. योजक चिह्न (Hyphen)	(-)
7. निर्देशक चिह्न (Dash)	(-)
8. उद्धरण- चिह्न (Inverted commas)	(“--”‘--’)
9. लाघव चिह्न (Abbreviation)	(°)

1. पूर्णविराम - पूर्णविराम का प्रयोग वाक्य की समाप्ति पर किया जाता है। यह वाक्य की पूर्णता का बोधक है।

जैसे - • रामनगर में हमारे चाचा जी रहते हैं।
•रोहन पढ़ रहा है ।

2. अल्पविराम- पूर्णविराम की तुलना में कम देर तक रुकने के लिए तथा वाक्य, पद आदि में अलगाव दर्शाने के लिए अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

- सुधीर, दिनकर और मोहित चिड़ियाघर देखने गए।
- मुझे कुछ पुस्तकें लेनी हैं, पर आज बाज़ार बंद है।

3. अर्धविराम - पूर्णविराम से कम तथा अल्पविराम से कुछ अधिक देर तक रुकने के लिए अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है । जैसे-

- अतिथि आ गए; वे शीघ्र चले जाएँगे।
- मैं अकेला ही जा रहा था; वहीं ये मिल गए।

4. प्रश्नवाचक चिह्न - जहाँ कोई प्रश्न पूछा जाए, वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

- तुम्हारे पिता जी कहाँ काम करते हैं?
- आप किस शहर में रहते हैं?

5.विस्मयादिबोधक चिह्न - विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों या वाक्यों के आगे विस्मयादिबोधक चिह्न लगाया जाता है; जैसे –

- छिः! यहाँ कितनी मक्खियाँ हैं?
- वाह! ताजमहल कैसी अद्‌भुत कृति है ?

6.योजक चिन्ह - युग्म शब्दों या समस्त पदों को जोड़ते समय या तुलना करने में योजक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

- मुझे दाल-चावल पसंद है।
- सुख-दुख, तन-मन-धन, छोटा-बड़ा, देश-विदेश, ईश्वर-वंदना।

7.निर्देशक चिह्न - किसी कथन से पहले तथा उदाहरण देने में निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

- निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो - अग्नि, जल, पर्वत, नदी।
- लिंग के दो भेद होते हैं - क. पुल्लिंग ख. स्त्रीलिंग

8. उद्धरण-चिह्न - किसी व्यक्ति अथवा महापुरुष के कथन को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करने के लिए कथन के पूर्व व अंत में इनका प्रयोग किया जाता है। लेखक, कवि आदि के उपनाम में भी उद्धरण चिह्न लगाया जाता है; जैसे-

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया।
- बाल गंगाधर तिलक ने कहा 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।

9. लाघव चिह्न (०) - किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे शून्य लगा देते हैं; जैसे-

- डॉ० त्रिपाठी हमारे कोषाध्यक्ष हैं।
- पं. जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे ।

आओ दोहराए

• भाषा के लिखित रूप में विराम देने या रुकने तथा उतार-चढ़ाव के स्पष्टीकरण के लिए जिन चिह्नों का
प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

• पूर्ण विराम - (।) अल्प विराम - (,)
• प्रश्नवाचक चिह्न - (?) विस्मयसूचक चिह्न - (!)
• योजक चिह्न (-) निर्देशक चिह्न (-) आदि प्रमुख विराम - चिह्न हैं।

अभ्यास कार्य

1 प्रश्नो के उत्तर दीजिए -

(क) विराम चिह्न किन्हें कहते हैं?
(ख) अल्प विराम चिह्न किसे कहते हैं?
(ग) योजक चिह्न किसे कहते हैं?

2. नीचे लिखे वाक्यों में सही विराम चिह्न लगाइए-

1. अंग्रेजों ने फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाई
2.क्या आप इसी शहर में हैं
3. अरे रवि तुम कहाँ चले गए थे
4.पेड़ पौधे धरती बादल पर्वत वृक्ष आदि सब अपना काम करते रहते हैं
5.बाल गंगाधर तिलक ने कहा था स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है

3.सही वाक्य के सामने सही (✔) तथा गलत के सामने गलत (X) का चिह्न लगाइए-

(क) विराम का अर्थ है, रुकना। ( )
(ख) साधारण वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम चिह्न लगाया जाता है। ( )
(ग) सवाल पूछे जाने वाले वाक्यों में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है। ( )
(घ) वाक्य के अंत में पूर्ण विराम चिह्न नहीं लगाया जाता है। ( )
(ङ) हम बोलते तथा लिखते समय कभी नहीं रुकते हैं। ( )

4. नीचे दिए गए विराम चिह्नों के नाम लिखिए-

1 .(,) - -------- 2.(?) - -------

3. (-) - -------- 4. (।) - --------

5. (;) - -------

5.निम्नलिखित विराम चिह्नों को पहचानकर उनके सामने सही (✓) का निशान लगाइए-

(1) ; चिह्न बताइए

योजक चिह्न ( ) प्रश्नवाचक ( ) अर्ध विराम ( )

(2.) किसी के कथन को ज्यों-का-त्यों व्यक्त करने के लिए कौन-सा विराम चिह्न प्रयुक्त किया जाता है ?

उद्धरण चिह्न ( ) योजक चिह्न( ) निर्देशक चिहन ( )

(3.) विराम का अर्थ है-

बोलना( ) चलना ( ) रुकना ( )

4.किस वाक्य में विराम चिह्न का उचित प्रयोग हुआ है?

चलो अब देर मत करो ( ) शाबाश! आपने बहुत अच्छा काम किया। ( )

संभव अमन राहुल तीनों दोस्त हैं। ( )

5. पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य में कहाँ होता है?

वाक्य के प्रारंभ में ( ) वाक्य के मध्य में ( ) वाक्य के अंत में ( )

पाठ- 15. उपसर्ग और प्रत्यय (Prefix and Suffix)

उपसर्ग - ये शब्दांश मूल शब्दों के प्रारंभ में लगते हैं। ये स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त न होकर, मूल शब्दों से जुड़कर किसी नए शब्द का निर्माण करते हैं। अतः शब्द के पूर्व लगने वाले शब्दांश को 'उपसर्ग' कहते हैं।

परिभाषा - वे शब्दांश जो शब्दों के आरंभ में जुड़कर मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन लाते हैं अथवा उनके अर्थ को बदल देते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

उपसर्गों के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में विशेषता और परिवर्तन आ जाता है। उपसर्गों का अपना स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

उपसर्ग के भेद:

1.**संस्कृत के उपसर्ग**
2.हिन्दी के उपसर्ग
3.उर्दू के उपसर्ग
4.संस्कृत के उपसर्ग (अव्यय के रूप में)

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	नहीं, अभाव	अज्ञान, अधर्म
अति	अधिक, अपार	अतिरिक्त, अत्यंत
अधि	ऊपर, प्रधानता	अधिकार,अधिकारी,अधिपति
अनु	समान, पीछे	अनुरूप,अनुज,अनुराग,अनुकरण
अप	बुरा, हीन	अपमान, अपयश, अपकार
अभि	सामने, अधिक पास	अभियोग, अभिमान, अभिभावक
आ	उल्टा, तक, से लेकर	आजीवन, आगमन, आमरण
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्बल, दुर्गम, दुर्दशा
दुस्	बुरा	दुष्कर, दुष्कर्म, दुस्साहस
निर्	बिना	निर्बल, निर्गुण, निर्भय, निर्दोष
परा	पीछे, उल्टा	परामर्श, पराजय, पराक्रम

प्र	आगे, अधिक	प्रबल, प्रयत्न, प्रचार, प्रदेश
प्रति	सामने, उल्टा, हर एक	प्रतिकूल, प्रत्येक
वि	हीनता, विशेष	विशेष, वियोग
सम्	पूर्ण, अच्छा	संगति, संस्कार, संचय
सु	सरल, अच्छा	सुयश, सुगम, सुशील, सुपुत्र
स्व	अपना, निजी	स्वदेश, स्वतंत्र, स्वभाव

हिन्दी के उपसर्ग-

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधखिला
अन	रहित	अनपढ़, अनमोल, अनबन, अनजान
औ	रहित	औचक, औचट, औगुन
कु	बुराई	कुसंग, कुकर्म, कुमति, कुमार
नि	अभाव	निडर, निहत्था, निकम्मा
भर	पूरा	भरपेट, भरमार, भरपूर

उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कम	थोड़ा	कमज़ोर, कमबख्त, कमअक्ल
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशमिज़ाज़
ना	निषेध	नाकारा, नालायक, नापसंद
बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदसूरत
बे	बिना	बेईमान, बेखटके, बेअदब
ला	बिना, नहीं	लापरवाह, लाजवाब, लाइलाज
गैर	निषेध	गैरहाज़िर, गैरकानूनी, गैरज़िम्मेदार
दर	में	दरअसल, दरकार, दरमियान
बा	अनुसार	बाकायदा, बाइज़्ज़त

सर	मुख्य	सरदार, सरपंच, सरकार
हम	साथ	हमदर्द, हमराज, हमदम
हर	प्रति	हरएक, हरसाल, हरदिन

संस्कृत के अव्यय (उपसर्ग के रूप में)

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अंतर	अंदर	अंतरात्मा, अंतर्राष्ट्रीय
अधः	नीचे	अधोगति, अधःपतन
कु	बुरा	कुपुत्र, कुसमय, कुसंग
चिर्	बहुत	चिरकाल, चिरायु
तिरस्	हीन, बुरा	तिरस्कार, तिरोभाव
पुनः	फिर	पुनरागमन, पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण
स	सहित	सफल, सहर्ष, सबल
स्व	अपना	स्वदेश, स्वाभिमान, स्वशासन
स्वयं	अपने, आप	स्वयंसेवक, स्वयंवर, स्वयंभू, स्वयंसिद्धा

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय के दो भेद होते है -

1.कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

1. कृत् प्रत्यय (संज्ञा के अंत में लगने वाले प्रत्यय)- जो प्रत्यय धातुओं (मूल शब्द) के अंत में लगते हैं, वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

कृत् प्रत्यय के योग से बने शब्दों को कृत् + अंत = कृदंत कहते हैं;

जैसे - लिख + आवट = लिखावट

बन + आवट = बनावट

नीचे कृत प्रत्यय और उनसे निर्मित शब्द दिए जा रहे हैं-

प्रत्यय	निर्मित
वाला	खानेवाला, आनेवाला, लिखनेवाला
हारा	पालनहारा, राखनहारा, खेवनहारा
आका	लड़ाका, उड़ाका
आऊ	टिकाऊ, चलाऊ, दिखाऊ
आड़ी	खिलाड़ी, अगाड़ी, पिछाड़ी
आलू	झगड़ालू
ऊ	कमाऊ, उड़ाऊ, खाऊ
एरा	लुटेरा, सपेरा
औना	बिछौना, खिलौना
ना	ओढ़ना, गाना, पढ़ना, पालना
नी	सूँघनी, ओढ़नी
आ	झूला, भूला, झटका, मटका
ई	फाँसी, बुहारी, हँसी, बोली
न	बेलन, झाड़न, बंधन
आव	बहाव, चढ़ाव, खिंचाव, बचाव
आई	बुनाई, कमाई, चढ़ाई, लड़ाई
आप	मिलाप, विलाप
आवट	लिखावट, सजावट, दिखावट
आहट	घबराहट, चिकनाहट, बौखलाहट
आन	थकान, उड़ान, लगान
ता	खाता, पीता, चलता, बढ़ता, डूबता

2. तद्धित प्रत्यय (धातु के अंत में लगने वाले प्रत्यय)- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। इनके योग से बने शब्दों को तद्धितांत अथवा तद्धित शब्द कहते हैं। जैसे- अपना + पन = अपनापन।

नीचे प्रमुख तद्धित प्रत्यय और उनसे निर्मित शब्द दिए जा रहे हैं –

प्रत्यय	निर्मित शब्द
ई	गर्मी, सर्दी, गरीबी
प्रत्यय	**निर्मित शब्द**
इया	दुखिया, आढ़तिया
आर	लोहार, सुनार, कहार
वाला	सब्जीवाला, गाड़ीवाला, टोपीवाला
हारा	लकड़हारा, पनिहारा,
ची	खजानची, मशालची
ता	सुंदरता, प्रभुता, लघुता
गर	जादूगर, कारीगर, बाजीगर
आई	भलाई, बुराई, सफाई
इमा	लालिमा, कालिमा, महिमा
पन	बचपन, लड़कपन, बालपन

* शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाकर नए शब्दों की रचना करने वाला शब्दांश प्रत्यय कहलाता है।

* प्रत्यय के मुख्य दो भेद हैं कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

अभ्यास कार्य

1.निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए-

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं?

(ख) उपसर्ग के कितने भेद हैं। उनके नाम लिखिए।

(ग) प्रत्यय किसे कहते हैं?

(घ) कृत् प्रत्यय किसे कहते हैं?

(ङ) तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं?

2.उचित विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) किसी शब्द से पहले जुड़कर शब्द के अर्थ में परिवर्तन लानेवाला शब्दांश क्या कहलाता है?

उपसर्ग ( ) समास ( ) संधि ( )

(ख) 'अपमान में उपसर्ग क्या है?

आ ( ) अप ( ) मन ( )

(ग) शब्द के अंत में लगने वाला शब्दांश क्या कहलाता है?

उपसर्ग ( ) मूल ( ) प्रत्यय ( )

(घ) सुंदरता शब्द में कौन-सा प्रत्यय उपयोग किया गया है?

ता ( ) सु ( ) दर ( )

(ङ) प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं?

दो ( ) चार( ) छह ( )

3.नीचे दिए गए उपसर्गों से शब्द बनाइए-

परा ----- अव ----- पुनः -----

भर ----- अधि ------ नि ------

4.नीचे दिए गए प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

वाला ------- नी -------

हारा ------- आवट -------

गर -------- ईला -----

5.निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए-

रुकावट ------ + ------

बहाव ------ + ------

चलन ------ + ------

घुमक्कड़ ------ + ------

घबराहट ------ + ------

पाठ- 16 शब्द तथा वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ
(Errors of words and sentences)

भाषा में शुद्ध वर्तनी का अत्यधिक महत्व है। कई बार शब्द की वर्तनी में जरा-सी त्रुटि होने पर ही उसके प्रयोग से अर्थ का अनर्थ हो जाता है; जैसे- किसी वाक्य में कुल (वंश) के स्थान पर कूल (तट) शब्द का प्रयोग हो जाने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। शब्दों के गलत उच्चारण के कारण भी अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ हो जाती हैं। शब्दों की सही वर्तनी लिखने के लिए उनके सही उच्चारण का अभ्यास करना चाहिए।

नीचे वर्तनी की प्रमुख अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप दिए जा रहे हैं-

अशुद्ध		शुद्ध
आशिर्वाद	-	आशीर्वाद
तिथी	-	तिथि
परिक्षा	-	परीक्षा
मूर्ती	-	मूर्ति
ईंजन	-	इंजन
पत्नि	-	पत्नी
श्रीमति	-	श्रीमती
झूट	-	झूठ
संसारिक	-	सांसारिक
छमा	-	क्षमा
इस्कूल	-	स्कूल
धरम	-	धर्म
अइसा	-	ऐसा
पालतु	-	पालतू

अशुद्ध		शुद्ध
ऐकता	-	एकता
बिमारी	-	बीमारी
मात्रभूमि	-	मातृभूमि
आदरनीय	-	आदरणीय
तलाब	-	तालाब
पढाई	-	पढ़ाई
पूर्ती	-	पूर्ति
मोका	-	मौका
आधीन	-	अधीन
बसंत	-	वसंत
उपर	-	ऊपर
समाजिक	-	सामाजिक
पेड	-	पेड़
बंदना	-	वंदना

वाक्य बोलते या लिखते समय कई बार हमसे गलतियों हो जाती हैं। गलतियाँ अनेक प्रकार को हो सकती हैं। अक्सर हम लोग संज्ञा, सर्वनाम, लिंग,वचन,कारक, विशेषण,क्रिया, क्रियाविशेषण और काल संबंधी त्रुटियाँ करते हैं लेकिन निरंतर अभ्यास से इन त्रुटियों को दूर किया जा सकता है।

नीचे कुछ अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप दिए गए हैं, इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए।

वचन संबंधी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध
मैंने हस्ताक्षर कर दिया है।	मैंने हस्ताक्षर कर दिए हैं।
हमारे सभी अध्यापकों ठीक पढ़ाते हैं।	हमारे सभी अध्यापक ठीक पढ़ाते हैं।
महाभारत का युद्ध 18 दिन तक चलता रहा है।	महाभारत का युद्ध 18 दिन तक चलता रहा।
अपनी बात सुनते-सुनते कान पक गए।	आपकी बातें सुनते-सुनते कान पक गए।
अपने चारों बेटों का नाम बताइए।	अपने चारों बेटों के नाम बताइए।

कारक संबंधी अशुद्धियाँ:

अशुद्ध	शुद्ध
बच्चा छत पर से गिर गया।	बच्चा छत से गिर गया।
चार बजने को बीस मिनट हैं।	चार बजने में बीस मिनट हैं।
राजा भैया घर नहीं है।	राजा भैया घर पर नहीं हैं।
हमारे अध्यापक कल को आएँगे।	हमारे अध्यापक कल आएँगे।
तितली फूल में बैठी है।	तितली फूल पर बैठी है।

संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
आजकल पाँच रुपया मेंक्या मिलता है?	आजकल पाँच रुपये में क्या मिलता है?
हर एक ने टाइयाँ पहन रखी हैं।	हर एक ने टाई पहन रखी है।
मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।	मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।
गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गईं।	पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गईं।
प्रत्येक जजों का यही मत था।	प्रत्येक जज का यही मत था।

सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
मेरे को बहुत डर लगता है।	मुझे बहुत डर लगता है।
मैंने आज स्कूल नहीं जाना।	मुझे आज स्कूल नहीं जाना।
हमने कल जाना पड़ेगा।	हमें कल जाना पड़ेगा।
मेरे को मिठाई पसंद है।	मुझे मिठाई पसंद है।
हमारे को दिल्ली शहर बहुत पसंद है।	हमको दिल्ली शहर बहुत पसंद है।

क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
मैं आपके दर्शन लेने आया था।	मैं आपके दर्शन करने आया था।
क्या यह संभव हो सकता है?	क्या यह संभव है?
वह पढ़ना माँगता है।	वह पढ़ना चाहता है।
आप क्या काम करता है?	आप क्या काम करते हैं?

विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
वहाँ अनेकों लोग उपस्थित थे।	वहाँ अनेक लोग उपस्थित थे।
हमारी अध्यापिका विद्वान हैं।	हमारी अध्यापिका विदुषी हैं।
बच्चे को देखकर माता प्रसन्नचित हुई।	बच्चे को देखकर माता प्रसन्न हुई।
बापू ने हमें उच्चतर कोटि की शिक्षा दी।	बापू ने हमें उच्चकोटि की शिक्षा दी।
वह लोग पूजा कर रहे हैं।	वे लोग पूजा कर रहे हैं।

अव्यय संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
किताब पर नहीं लिखो।	किताब पर मत लिखो।
यहाँ नहीं बैठना।	यहाँ मत बैठना।
सारी रात भर वह जागती रही।	रात भर वह जागती रही।
कृपया करके ध्यान दो।	कृपया ध्यान दो।
पर्वत बड़ा ऊँचा है।	पर्वत बहुत ऊँचा है।

आओ जानें

• प्रत्येक भाषा को शुद्ध रूप में पढ़ने, बोलने तथा लिखने के लिए व्याकरण संबंधी नियमों का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

• संस्कृत व अन्य भाषाओं की तरह हिंदी भाषा में व्याकरण संबंधी नियमों का विशेष तौर पर ध्यान रखा जाता है ।

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए-

1. मेरे को घर जाना है ।
2. सामान बाँधकर छत में रखो ।
3. डोर बिना पतंग कैसे उड़ेगी ।
4. गोकुल की कपड़ा की दुकान है।
5. वह प्रातःकाल के समय उठकर चली गई।

2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखो।

श्रीमति - ------ परिक्षा - ------

अइसा - ------ बसंत - ------

समाजिक - ------- मात्रभूमि - -----

3.निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य चुनिए:

1. क. मेरे को बात मान लो।
ख. मेरे बात मान लो।
ग. मेरी बात मान लो।
घ. मेरा बात मान लो।

2.क. पिता जी बाजार गया था।
ख. पिता जी बाजार को गए थे।
ग. पिता जी बाजारों को गया था।
घ. पिता जी बाजार गए थे।

3. क. अमन पतंगा उड़ा रहा था।
ख. अमन पतंग उड़ा रहा था।
ग. अमन रहा था पतंग उड़ा।
घ. अमन उड़ा पतंग रहा था।

4.क. फल बहुत ही स्वादिष्ट था।
ख. फल बड़ा स्वादिष्ट था।
ग. फल अनेक स्वादिष्ट था।
घ. फल बहुतों स्वादिष्ट था।

5. क. वे चाय पी ली है।
ख. वे सब चाय पी ली है।
ग. उन्होंने चाय को पी ली है।
घ. उन्होंने चाय पी ली है।

पाठ - 17
संधि (JOINING)

संधि का अर्थ है- मेल। वस्तुतः संधि में ध्वनियों का (स्वर अथवा वर्णों का) मेल होता है। जिसमें पहले शब्द का अंतिम वर्ण तथा दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण जुड़कर एक नया शब्द बन जाता है यानि संधि में दो पास-पास के वर्णों का योग होकर एक नया वर्ण बन जाता है; जैसे-

पुस्तकालय शब्द दो शब्दों के योग से बना है-

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

यहाँ पुस्तक (प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ) का अंतिम अक्षर 'अ' दूसरे शब्द आलय (आ+ल्+अ+य्+अ) के प्रथम अक्षर 'आ' से जुड़ गया है। शब्दों के ऐसे योग को संधि कहते हैं।
संधि करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि दो शब्दों या पदों के मेल से एक सार्थक शब्द बने।

परिभाषा - दो वर्णों के आपसी मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि-विच्छेद

विच्छेद का अर्थ अलग करना होता है। संधि द्वारा बनाए गए शब्दों को पूर्व की स्थिति में लाना। 'संधि-विच्छेद' कहलाता है।

परिभाषा

जिस प्रकार दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं, उसी प्रकार संधि-युक्त शब्दों को अलग-अलग उनके मूल रूप में लिखने को संधि-विच्छेद कहते हैं।

नीचे संधि किए गए शब्दों के संधि-विच्छेद दिए गए हैं-

शब्द	संधि-विच्छेद
महेश	महा + ईश
नरेंद्र	नर + इंद्र
गणेश	गण + ईश

महेश्वर	महा + ईश्वर
महेंद्र	महा + इंद्र
सूर्योदय	सूर्य + उदय

संधि के भेद

संधि के तीन भेद होते हैं -

1. **स्वर संधि**
2. **व्यंजन संधि**
3. **विसर्ग संधि**

1.स्वर संधि- दो परस्पर स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को 'स्वर संधि' कहते हैं; जैसे-

1. देव + आलय = देवालय
   (अ + आ= आ)
2. दया + आनंद = दयानंद
   (आ + आ = आ)

स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं-

1. दीर्घ
2. गुण
3. वृद्धि
4. यण
5. अयादि

1. दीर्घ संधि – जब ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ) अथवा दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ऋ) के बाद फिर से ह्रस्व या दीर्घ
स्वर आ जाएँ तो दोनों के मेल से बननेवाला स्वर दीर्घ हो जाता है, उसे दीर्घ संधि कहते हैं।

दीर्घ संधि के उदाहरण:-

1 .अ + अ = आ — सार+अंश=सारांश
भाव + अर्थ =भावार्थ

अ+ आ = आ — धर्म+आत्मा =धर्मात्मा
छात्र +आवास=छात्रावास

	आ+आ=आ	विद्या+आलय=विद्यालय महा + आत्मा = महात्मा
2.	इ +इ=ई	कवि + इंद्र = कवींद्र रवि + इंद्र = रवींद्र
	इ+ई=ई	मुनि + ईश = मुनीश गिरि + ईश = गिरीश
	ई +इ= ई	मही + इंद्र = महींद्र शची + इंद्र = शचींद्र
	ई+ई=ई	रजनी + ईश = रजनीश सती + ईश = सतीश
3.	उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश =गुरूपदेश भानु + उदय = भानूदय
	उ+ ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि= लघूर्मि मधु + ऊष्मा = मधूष्मा
	ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव भू + उत्सर्ग = भूत्सर्ग
	ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊर्जा = वधूर्जा भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

2. गुण संधि- जब अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ आते हैं तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है।

1.	अ + इ = ए	नर + इंद्र = नरेंद्र धर्म+ इंद्र = धर्मेंद्र

	आ +इ = ए	महा + इंद्र = महेंद्र
		यथा + इष्ट =यथेष्ट
	अ + ई = ए	विमल+ ईश = विमलेश
		परम+ ईश्वर = परमेश्वर
	आ +ई = ए	रमा+ईश =रमेश
		नर + ईश = नरेश
	आ +उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव
		सभा + उक्ति = सभोक्ति
	आ + ऊ = ओ	महा + ऊर्जा = महोर्जा
		यमुना + ऊर्मि = यमुनोर्मि
3.	अ +ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
		सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
	आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि
		राजा + ऋषि = राजर्षि

3. **वृद्धि संधि**- जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं और जब 'ओ' या 'औ' हो तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं-

1.	अ + ए = ऐ	लोक + एषणा=लोकैषणा
		एक + एक = एकैक
	अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य = मतैक्य
		परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
	आ + ए =ऐ	सदा + एव = सदैव
		तथा + एव = तथैव
	आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य= महैश्वर्य
		माता + ऐश्वर्य = मातैश्वर्य
2.	अ +ओ =औ	जल+ओध=जलौध
		मधुर + ओदन =मधुरौदन

अ+औ=औ वन+औषध=वनौषध

परम + औदार्य =परमौदार्य

3. अ +ओ =औ जल+ओध=जलौध

मधुर + ओदन =मधुरौदन

अ+औ=औ वन+औषध=वनौषध

परम + औदार्य =परमौदार्य

आ +ओ =औ महा+ ओज =महौज

आ +औ=औ महा+औषधि=महौषधि

महा + औदार्य = महौदार्य

4. यण संधि - जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के बाद कोई असमान स्वर हो तो इ, उ, ऋ के स्थान पर क्रमशः य्,व्,र् हो जाता है -

1. इ + अ = य यदि + अपि = यद्यपि

इ + आ = या इति + आदि = इत्यादि

ई + आ = या नदी + आगमन=नद्यागमन

इ + उ = यु उपरि + उक्त = उपर्युक्त

इ + ऊ = यू नि + ऊन = न्यून

ई+ अ = य देवी + अर्पण = देव्यर्पण

इ+ ए = ये प्रति + एक = प्रत्येक

ई+ ऐ = यै देवी + ऐश्वर्य =देव्यैश्वर्य

2. उ + अ = व अनु + अय= अन्वय

उ + आ = वा सु + आगत= स्वागत

उ + इ = वि अनु + इत = अन्वित

उ + ए = वे अनु + एषण = अन्वेषण

3. ऋ + ए = र पितृ + अर्थ =पित्रर्थ

ऋ + आ = रा मातृ +आनंद = मात्रानंद

5. **अयादि संधि** - ए, ऐ ओ, औ के बाद विजातीय स्वर आने पर क्रमशः अय, आय, अव, आव, आवि तथा आवु हो जाता है।

1. ए+ अ = अय ने +अयन =नयन

ऐ + अ = आय गै+अक=गायक

ओ + अ = अव पो+अन=पवन

औ + अ = आव पौ + अक = पावक

औ + इ = आवि नौ + इक = नाविक

औ + उ = आवु भौ + उक = भावुक

2 .व्यंजन संधि - व्यंजन का व्यंजन से या किसी व्यंजन का स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजर संधि कहते हैं। जैसे-

सत् + जन = सज्जन

(त् + ज = ज्ज = व्यंजन + व्यंजन)

जगत् + ईश = जगदीश

(त् + ई = दी = व्यंजन + स्वर)

व्यंजन संधि के तीन प्रकार होते हैं-

(i) व्यंजन और स्वर का मेल

वाक् + ईश = वागीश (क् (व्यंजन) + ई (स्वर)

(ii) स्वर और व्यंजन का मेल

आ + छादन = आच्छादन (आ (स्वर) + छ (व्यंजन)

(iii) व्यंजन + व्यंजन का मेल

उत् + ज्वल = उज्ज्वल (त् (व्यंजन) + ज् (व्यंजन)

व्यंजन संधि के कुछ अन्य उदाहरण

दिक् + अंबर = दिगंबर

सत् + मार्ग = सन्मार्ग

सम् + सार = संसार

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

उत् + लेख = उल्लेख

निर् + रोग = निरोग

उत् + घाटन = उद्घाटन

सम् + वाद = संवाद

निर् + रस = नीरस

अतः + एव = अतएव

तत् + लीन = तल्लीन

सम् + सार = संसार

3.विसर्ग संधि- स्वरों अथवा व्यंजनों के साथ विसर्ग (:) के मेल से विसर्ग में जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे-

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

अधः + गति = अधोगति

मनः + ज = मनोज

तमः + गुण = तमोगुण

निः + आशा = निराशा

तपः + बल = तपोबल

निः + संतान = निस्संतान

मनः + बल = मनोबल

नमः + कार = नमस्कार

आओ दोहराए :

- दो वर्णों के आपसी मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।
- जिस प्रकार दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं, उसी प्रकार संधि हुए शब्दों को अलग-अलग उनके मूल रूप में लिखने को संधि-विच्छेद कहते हैं।
- जब दो समान ह्रस्व और दीर्घ या दो दीर्घ स्वरों का मेल होता है, तो दोनों स्वर मिलकर दीर्घ स्वर बन जाते हैं; उसे दीर्घ संधि कहते हैं।
- दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को 'स्वर संधि' कहते हैं।
- व्यंजन का व्यंजन से या किसी व्यंजन का स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
- विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

अभ्यास करें

1.निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए:

(क) संधि किसे कहते हैं?
(ख) स्वर संधि और व्यंजन संधि में अंतर स्पष्ट कीजिए।
(ग) गुण संधि किसे कहते हैं?
(घ) संधि विच्छेद किसे कहते हैं?
(ङ) स्वर संधि के कितने भेद होते हैं?

2. दिए गए शब्दो की संधि कीजिए

छात्र + आवास = _____	महा + आत्मा = _____
मही + इंद्र = _____	सत्+जन = _____
नव + ऊढ़ा = _____	वधू + ऊर्जा = _____
निः + फल = _____	भाव + अर्थ = _____
सुर + इंद्र = _____	हिम + आलय = _____
सूर्य + उदय = _____	महा + ईश्वर = _____

3. संधि-विच्छेद कीजिए-

गणेश = _____ + _____

रजनीश = _____ + _____

सारांश = _____ + _____

नमस्कार = _____ + _____

अत्यधिक = _____ + _____

4. उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) दो वर्णों के आपसी मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे क्या कहते हैं?

समास( ) सर्वनाम ( ) संधि( ) शब्द ( )

(ख) संधि के कितने भेद होते हैं?

सात ( ) नौ ( ) तीन ( ) दो( )

(ग) निम्न में से कौन संधि का मुख्य प्रकार नहीं है?

व्यंजन ( ) विसर्ग( ) अयादि ( ) स्वर( )

पाठ - 18 विलोम शब्द (Antonyms)

किसी शब्द का विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे -गरमी -सरदी, बड़ा -छोटा।

उपर्युक्त शब्द गरमी तथा सरदी एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट कर रहे हैं। इसी प्रकार बड़ा तथा छोटा शब्द भी विलोम अर्थ का बोध करा रहे हैं।

शब्द		विलोम
अंधकार	-	प्रकाश
अनुकूल	-	प्रतिकूल
भिज्ञ	-	अनभिज्ञ
अनुराग	-	विराग
अमृत	-	विष
सौभाग्य	-	दुर्भाग्य
अपमान	-	सम्मान
अवनति	-	उन्नति
स्वाधीन	-	पराधीन
अमावस्या	-	पूर्णिमा
अगम	-	सुगम
घर	-	बाहर
कुपुत्र	-	सुपुत्र
इनसान	-	हैवान
आशा	-	निराशा
अंधकार	-	प्रकाश
अधीन	-	स्वतंत्र
अनिवार्य	-	वैकल्पिक
आनंद	-	शोक
आरंभ	-	अंत
आगमन	-	प्रस्थान

शब्द		विलोम
संक्षेप	-	विस्तार
समीप	-	दूर
सभ्य	-	असभ्य
आस्तिक	-	नास्तिक
गहरा	-	उथला
गरीब	-	अमीर
गुरु	-	शिष्य
कच्चा	-	पक्का
एक	-	अनेक
उपयोग	-	दुरुपयोग
सेवक	-	स्वामी
सम	-	विषम
संयोग	-	वियोग
सजीव	-	निर्जीव
उदय	-	अस्त
पक्ष	-	विपक्ष
राजा	-	रंक
कृष्ण	-	शुक्ल
दिन	-	रात
भूत	-	भविष्य
महात्मा	-	दुरात्मा

अभ्यास कार्य

1.रिक्त स्थानों में उचित विलोम शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए:

क. हमें सबको सुख देना चाहिए -------नहीं।

ख. बड़ों का आदर करो, ------ नहीं।

ग. संसार में धनी कम हैं, ------अधिक।

घ. जो दुख सहन कर लेता है वह ---------अवश्य पाता है।

ङ. सज्जन कृतज्ञ होते हैं जबकि दुर्जन --------- ।

च. राजा हो या -----, धनी हो या --------सभी को अपना व्यवहार मधुर रखना चाहिए।

छ. कायर लड़ाई के मैदान में पीठ फेर लेते हैं जबकि ---------डटकर सामना करते हैं।

2.निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

1	धर्म	-	5	न्याय	-
2	पाप	-	6	शुद्ध	-
3	पूर्ण	-	7	असली	-
4	संयोग	-	8	आगमन	-

पाठ 19

पर्यायवाची शब्द (synonyms)

किसी शब्द के समान अथवा एक-सा अर्थ बताने वाले शब्दों को 'पर्यायवाची' अथवा 'समानार्थक' शब्द कहते हैं।

सूर्य – रवि, दिनकर, सूरज

नीचे कुछ पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे है-

शब्द		**पर्यायवाची**		
आग	-	ज्वाला,	पावक,	अनल,
असुर	-	दानव,	राक्षस,	निशाचर,
अमृत	-	सुधा,	सोम,	पीयूष,
घोड़ा	-	अश्व,	तुरंग,	हय,
आँख	-	नेत्र,	लोचन,	नयन,
इन्द्र	-	देवराज,	पुरंदर,	देवेंद्र,
तलवार	-	कृपाण,	खड्ग,	असि
आकाश	-	नभ,	आसमान,	गगन,
पक्षी	-	खग,	पखेरु,	विहग
दूध	-	क्षीर,	पय,	गोरस,
वायु	-	अनिल,	हवा,	पवन,
इच्छा	-	कामना,	अभिलाषा,	चाह
ईश्वर	-	भगवान,	प्रभु,	परमेश्वर
गंगा	-	देवनदी,	सुरसरि,	भागीरथी

जल	-	नीर,	वारि,	सलिल
नदी	-	सरिता,	तटिनी,	तरंगिनी
पर्वत	-	शैल,	पहाड़,	भूधर,
पृथ्वी	-	धरा,	धरती,	भूमि,
बिजली	-	चपला,	चंचला,	दामिनी
मानव	-	मनुष्य,	आदमी,	नर
सुंदर	-	मनोहर,	अभिराम,	रमणीक,
पत्नी	-	भार्या,	वधू,	गृहणी,
संसार	-	विश्व,	जग,	लोक,
स्त्री	-	महिला,	नारी,	वनिता,
कमल	-	राजीव,	पंकज,	सरोज,
वसंत	-	ऋतुपति,	मधुऋतु,	ऋतुराज
स्नेह	-	प्यार,	प्रीति,	राग,
अनुपम	-	अनूठा,	अपूर्व,	अद्‌भुत,
उपदेश	-	सीख,	सलाह,	शिक्षा
दुख	-	कष्ट,	पीड़ा,	व्यथा,
मुख	-	मुँह,	चेहरा,	मुखौटा
शरीर	-	तन,	काया,	देह,
पुत्र	-	सुत,	तनय,	नंदन,
दाँत	-	दंत,	दशन,	द्विज
सूर्य	-	प्रभाकर,	दिवाकर,	दिनकर
चंद्रमा	-	चाँद,	शशि,	सोम,
सिंह	-	शेर,	वनराज,	सारंग,
समुद्र-	-	सागर	सिंधु,	,नदीश,
धन	-	द्रव्य,	अर्थ,	वैभव,

अभ्यास कार्य

1.निम्नलिखित शब्द समूह में जो शब्द गलत हो उसे अलग कीजिए:

क.	घन,	द्रव्य,	अर्थ,	वैभव,	जग
ख.	पर्वत,	गिरि,	धरती,	पहाड़,	शैल
ग.	जननी,	बादल,	अम्मा,	माँ,	माता
घ.	रजनी,	रात्रि,	निशा,	दिवाकर,	यामिनी
ड़.	सिंह,	शेर,	मनुज,	वनराज,	मृगेन्द्र

2. निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों का मिलान कीजिए-

पृथ्वी	इच्छा
अभिलाषा	रात्रि
अहंकार	मीन
रात	भूमि
मछली	अभिमान

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए-

संसार - आनंद -

कमल - नदी -

गंगा - असुर -

पाठ- 20

अनेकार्थी शब्द (Word with Various Meaning)

जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उसे अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

नीचे कुछ अनेकार्थी या अनेकार्थक शब्द दिए जा रहे हैं-

शब्द	अनेकार्थी
अंबर -	वस्त्र, आकाश, कपास
अनंत -	ईश्वर, आकाश, जिसका कोई अंत न हो, विष्णु
अंक -	गोद, संख्या
अज -	बकरा, ब्रह्मा, जो जन्म न ले
काम -	कार्य, पेशा, कामदेव
खर -	गधा, तिनका, कौआ, एक राक्षस का नाम
गुण -	रस्सी, स्वभाव, विशेषता
उत्तर -	उत्तर दिशा, प्रश्न का जवाब, बाद का
कल -	चैन, आने वाला दिन, मशीन
जड़ -	अचेतन, मूर्ख, मूल
सूत -	धागा, डोरी, सारथी
नाग -	सर्प, हाथी, सूर्य
गुरु -	बड़ा, भारी, शिक्षक
नग -	रत्न, पर्वत, वृक्ष, सूर्य।
अर्क -	सूर्य, आक (पौधा),रस, इंद्र
घट -	कम, घड़ा, हृदय
वर -	श्रेष्ठ, दूल्हा, वरदान
सर -	तालाब, पृथ्वी, पानी, सिर
अर्थ -	धन, ऐश्वर्य, प्रयोजन, हेतु
कर -	हाथ, किरण, टैक्स
चीर -	वस्त्र, वस्त्र का टुकड़ा, रेखा, चीरना (क्रिया)
आम -	एक फल, सामान्य, मामूली
जलच -	कमल, मोती, मछली
मुद्रा	सिक्का, नाम की मुहर, शरीर की विशेष स्थिति

फल -	लाभ, नतीजा, पुरस्कार, वृक्ष के फल
पतंग -	सूर्य, उड़ाने वाली पतंग, पक्षी
पानी -	जल, कांति, लज्जा, प्रतिष्ठा
बल -	शक्ति, बलराम, सेना
धाम -	घर, स्थान, देव स्थान, स्वर्ग
बाल -	केश, बालक, दाने युक्त डंठल
वर्ण -	अक्षर, रंग, जाति
सुधा -	अमृत, पानी
रस -	निचोड़, नवरस, स्वाद, प्रेम
दल -	समूह, सेना, पत्ता, पक्ष
योग -	जोड़, ध्यान
दंड -	डंडा, सज़ा, एक व्यायाम
अरुण -	लाल, प्रातःकाल का सूर्य
अवकाश -	छुट्टी, बीच का समय, अवसर
आराम -	बाग, विश्राम, रोग या कष्ट दूर होना

1.निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अनेकार्थक शब्द लिखिए-

क. अनंत　　ख. अज

ग. खर　　घ. चीर

ङ. आम　　च. जलज

छ. मुद्रा　　झ. योग

2.निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द का सही अर्थ लिखिए-

क. वह श्वेत **<u>वर्ण</u>** का है।[1]

ख. जहाँगीर ने जगह-जगह पर **<u>आराम</u>** लगवाए थे।

ग.आज **<u>अवकाश</u>** मिला, इसलिए आ गया।

घ. मेरे **<u>दल</u>** में आज कोई नहीं है।

पाठ – 21
अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहा जाता है। हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द हैं, जो अनेक शब्दों के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं। जैसे-

अनेक शब्द		**एक शब्द**
शब्द जिसका अंत न हो	-	अनंत
जिसकी गणना न की जा सके	-	अगणित
जिसका आदि न हो	-	अनादि
जल में रहनेवाला	-	जलचर
जिसकी तुलना न हो सके	-	अतुलनीय
जिसके आने की तिथि न हो	-	अतिथि
जो सब कुछ जानता हो	-	सर्वज्ञ
जो कम जानता हो	-	अल्पज्ञ
ईश्वर में विश्वास करने वाला	-	आस्तिक
ईश्वर में विश्वास न करने वाला	-	नास्तिक
जो काम से जी चुराए	-	कामचोर
जो कड़वा बोलता हो	-	कटुभाषी
जो मीठा बोलता हो	-	मृदुभाषी
सुनने वाला	-	श्रोता
जिसमें दया न हो	-	निर्दयी
जिसकी कोई सीमा न हो	-	असीम
शक्ति के अनुसार	-	यथाशक्ति
जिसका कोई अर्थ न हो	-	निरर्थक
पंद्रह दिनों में होने वाला	-	पाक्षिक

प्रत्येक मास होने वाला	-	मासिक
शरण में आया हुआ	-	शरणागत
जो आँखों के सामने हो	-	प्रत्यक्ष
जो देखने योग्य हो	-	दर्शनीय
देखने वाला	-	दर्शक
छोटा भाई	-	अनुज
जो अपने कार्य में होशियार हो	-	कार्यकुशल
जो अपनी ओर खींचे	-	आकर्षक
बड़ों की आज्ञा मानने वाला	-	आज्ञाकारी
पत्तों से बनाई गई कुटिया	-	पर्णकुटी
दूसरे देश से मँगाया जाना	-	आयात
इतिहास का ज्ञाता	-	इतिहासज्ञ
गणित का ज्ञाता	-	गणितज्ञ
जिसका दोष न हो	-	निर्दोष
जो बहुत बोलता हो	-	वाचाल
जो कम बोलता हो	-	मितभाषी
जो मांस-मछली आदि न खाता हो	-	शाकाहारी
जो आँखों के सामने हो	-	साक्षात
सौ वर्षों का समय	-	शताब्दी

अभ्यास कार्य

1.उचित अर्थ पर सही (√) का निशान लगाइए-

(i) जो साथ पढ़ता हो-

सहायक ( ) सहपाठी ( ) साथी ( )

(ii) सौ वर्ष का समय-

शतक ( ) सौ ( ) शताब्दी ( )

(iii) प्रतिदिन होने वाला-

दैनिक ( ) मासिक ( ) वार्षिक ( )

(iv) जिसकी तुलना न हो सके

अतुलनीय ( ) योग्य ( ) अंनत ( )

2. निम्नलिखित वाक्यांशों तथा शब्दों का उचित मिलान कीजिए -

1. शरण में आया हुआ	मृदुभाषी
2. सुनने वाला	पठनीय
3.जो मीठा बोलता हो	शहरी
4.जिसका दोष न हो	शरणागत
5.शहर में रहने वाला	श्रोता
6.जो पढ़ने योग्य हो	निर्दोष

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए -

क. जिसके आने की तिथि निश्चित न हो -

ख. किए गए उपकार को न मानने वाला-

ग. जो कड़वा बोलता हो -

घ. शक्ति के अनुसार -

ङ. जो अपनी ओर खींचे -

च. इतिहास का ज्ञाता -

पाठ - 22 श्रुतिसम (समरूपी) भिन्नार्थक शब्द

(Pairs of Similar Words - Distinguished)

जो शब्द सुनने तथा पढ़ने में लगभग समान हों, परंतु उनके अर्थ में भिन्नता हो, उन्हें श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। जैसे -

आइए दिए गए शब्दों का अध्ययन करते हैं-

1	आसमान	-	आकाश	16	शोक	-	दुख
	असमान	-	जो बराबर न हो		शौक	-	चाव
2	दीया	-	दीपक	17	अपचार	-	अपराध
	दिया	-	देना		उपचार	-	इलाज
3	हँस	-	हँसना	18	पका	-	पका हुआ
	हंस	-	एक पक्षी		पक्का	-	मज़बूत
4	झूठा	-	झूठ बोलने वाला	19	निधन	-	मृत्यु
	जूठा	-	किसी का खाया हुआ जूठा खाना		निर्धन	-	गरीब
5	आधी	-	पूरे का आधा हिस्सा	20	द्रव	-	तरल पदार्थ
	आँधी	-	तेज़ हवा चलना		द्रव्य	-	धन
6	अंदर	-	भीतर	21	कल	-	सुंदर
	अंतर	-	भेद		काल	-	समय
7	अलि	-	भ्रमर	22	कर्म	-	काम
	अली	-	सखी		क्रम	-	सिलसिला
8	अनल	-	आग	23	दिन	-	दिवस
	अनिल	-	हवा		दीन	-	गरीब
9	अन्न	-	अनाज	24	दिशा	-	तरफ़
	अन्य	-	दूसरा		दशा	-	हालत
10	उपयुक्त	-	ठीक	25	इस्त्री	-	प्रेस
	उपर्युक्त	-	ऊपर कहा गया		स्त्री	-	महिला
11	कुल	-	सब, वंश	26	अवधि	-	सीमा
	कूल	-	किनारा		अवधी	-	अवध की भाषा
12	ग्रह	-	नक्षत्र	27	काट	-	काटना
	गृह	-	घर		काठ	-	लकड़ी
13	चर्म	-	चमड़ा	28	उदर	-	पेट
	चरम	-	अंतिम		उधर	-	उस तरफ़
14	बात	-	बातचीत	29	फन	-	साँप का फन
	वात	-	हवा		फ़न	-	कला
15	पानी	-	जल	30	भवन	-	घर
	पाणि	-	हाथ		भुवन	-	संसार

अभ्यास कार्य

1.रिक्त स्थानों में कोष्ठक में दिए गए शब्द-युग्मों में से सही शब्द चुनकर लिखिए-

क. आपसी प्रेमभाव होने से ------ स्वर्ग बन जाता है। (ग्रह / गृह)

ख. बच्चों की ------ करने से उनके बिगड़ने का खतरा रहता है। (अपेक्षा / उपेक्षा)

ग. मेरा गृहोद्यान ---------बड़े का है। (आकर / आकार)

घ. राम के आगमन का समाचार सुनकर अयोध्या में चारों --------- खुशी की लहर दौड़ गई। (ओर / और)

ङ --------- विचार के व्यक्तियों के बीच मित्रता स्थायी नहीं होती है। (असमान/आसमान)

च. फ़र्नीचर बनाने में ---------का प्रयोग किया जाता है। (काट/काठ)

छ. खाने-पीने में सावधानी नहीं बरतने से --------की बीमारियाँ हो जाती है। (उदर /उधर)

ज. वह चाय का------ नहीं है।(आदि / आदी)

झ. उसकी------- ठीक नहीं है। (नियत / नीयत)

3.निम्नलिखित वाक्यों में कुछ गलत शब्दों का प्रयोग हुआ है, इन शब्दों को रेखांकित करके वाक्यों है। पुनः लिखिए

(क) श्रवण कुमार अपने माता-पिता के एक आदर्श सूत थे।

(ख) महात्मा बुद्ध जंगल की और चले गए।

(ग) मनुष्य के अपने क्रम अच्छे होने चाहिए।

(घ) मोहन जेल में बंद है, उसकी सजा की अवधी पूरी होने वाली है।

(ङ) लोमड़ी बहुत चालक थी।

3.निम्नलिखित श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखते हुए अलग-अलग वाक्य लिखिए-

शब्द	अर्थ	वाक्य
ओर	-------	----------
और	-------	----------
दिन	-------	----------
दीन	-------	----------
ग्रह	-------	----------
गृह	-------	----------

पाठ- 23
मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)

कोई तो ऐसा वाक्यांश जो शाब्दिक अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष अर्थ का बोध कराए, मुहावरा कहलाता है।

मुहावरों का शब्दार्थ ग्रहण न करके कोई विलक्षण अर्थ ग्रहण किया जाता है। इनके प्रयोग से भाषा को सुंदर और प्रभावशाली बनाने में मदद मिलती है।मुहावरे क्रियापद के रूप में प्रयुक्त होते है और इनका प्रयोग वाक्य के भीतर होता है। ये वाक्य के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं।

जैसे -

आग में घी डालना (क्रोध को बढ़ावा देना।) प्रधानाचार्य की डाँट पड़ने से विनय पहले ही बहुत खिन्न था, माँ ने पढ़ने को कहकर और आग में घी डाल दिया।

मुहावरों का अर्थ

मुहावरे	अर्थ
1. अंधे की लाठी	एकमात्र सहारा।
2. अक्ल का अंधा	मूर्ख।
3. अंग-अंग टूटना	संपूर्ण बदन में दर्द होना।
4. अंगार उगलना	गुस्से में कठोर वचन बोलना।
5. अंत पाना	रहस्य समझ लेना।
6. अक्ल मारी जाना	बुद्धि नष्ट होना।
7. अपना उल्लू सीधा करना	अपना काम निकालना।
8. अगर-मगर करना	टाल-मटोल करना।
9. अपना राग अलापना	अपनी ही बात कहते जाना।
10. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
11. आँखें नीची होना	लज्जित होना।
12.आँख उठाना	हानि पहुँचाने की कोशिश करना।
13.आँख चुराना	सामने न आना।
14.आँख दिखाना	गुस्सा होना।
15.कमर कसना	दृढ़ निश्चय करना।
16.कमर टूटना	हिम्मत हारना।
17. कलेजे पर साँप लोटना.	ईर्ष्या से जलना।

18.कान पर जूं तक न रेंगना	कुछ भी असर न होना।
19.घी के दीये जलाना	खुशियाँ मनाना।
20. चल बसना	मर जाना।
21. चाँदी होना	बहुत लाभ होना।
22. छक्के छुड़ाना	बुरी तरह हराना।
23. छठी का दूध याद आना	घोर संकट या कठिनाई का अनुभव होना
24. छाती पर साँप लोटना	किसी की खुशी देखकर जलना।
25. जूतियाँ चाटना	खुशामद करना।
26. टका-सा जवाब देना	साफ इनकार कर देना।
27. टस से मस न होना	अपनी जिद पर अड़े रहना।
28. टेढ़ी खीर	कठिन काम।
29. ठिकाने लगाना	मारना, नष्ट करना
30.तिल का ताड़ बनाना	छोटी-सी बात को बहुत बड़ी बना देना।
31.दाँत खट्टे करना	नीचा दिखाना।
32.दाँतों तले अँगुली दबाना	आश्चर्यचकित होना।
33.दाल न गलना	कुछ वश न चलना।
34.दिन में तारे नज़र आना	किसी घटना से घबरा जाना।
35.दूज का चाँद होना	बहुत देर से दिखाई देना।
36. दो टूक उत्तर देना	स्पष्ट इनकार कर देना।
37.दो नावों पर पैर रखना	दो तरफ़ ध्यान देना।
38.दौड़-धूप करना	बहुत कोशिश करना।
39.नमक-मिर्च लगाना	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
40.नाकों चने चबाना	खूब तंग करना।
41.नौ-दो ग्यारह होना	भाग जाना।
42.पर लगना	चालाक होना।
43.पसीना-पसीना होना	बहुत थक जाना, घबरा जाना।
44. पाँचों उँगलियाँ घी में होना	बहुत लाभ होना।
45.सितारा चमकना	भाग्य अच्छा होना।
46.हाथ उठाना	मारपीट करना।
47.हाथ-पाँव फूलना	बहुत घबरा जाना।
48.हाथ फैलाना	सहायता माँगना।
49.हाथ बंटाना	सहायता करना।
50.लोहा लेना	मुकाबला करना ।

कुछ मुहावरों के अर्थ तथा उनका वाक्यों में प्रयोग –

(1) अंग-अंग ढीला होना- (बहुत थक जाना) - सुबह से काम के कारण उसका अंग-अंग ढीला हो रहा है।

(2) अंधे की लाठी-(एकमात्र सहारा)-श्रवण कुमार अपने अंधे माँ-बाप की अंधे की लाठी था।

(3)अक्ल का दुश्मन-(मूर्ख) - लगता है वह अक्ल का दुश्मन है तभी तो इतनी बार समझाने पर भी उसके दिमाग में कुछ नहीं बैठा।

(4)अँगूठा दिखाना-(साफ इंकार कर देना) -सेठ जी ने मेरी मदद करने का आश्वासन तो दिया था, पर आज उन्होंने अँगूठा दिखा दिया।

(5) ईद का चाँद होना -(बहुत दिनों के बाद दिखाई देना) -आजकल कहाँ रहते हो मित्र, तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

(6) ईंट से ईंट बजाना- (पूरी तरह नष्ट करना) -अमेरिका ने ईराक की ईंट से ईंट बजा दी।

(7) उन्नीस-बीस का अंतर होना -(बहुत थोड़ा अंतर होना) -इन दोनों भाइयों के स्वभाव में उन्नीस-बीस का अंतर है।

(8) एड़ी चोटी का जोर लगाना -(पूरा जोर लगाना) - परीक्षा में प्रथम आने के लिए मैं एड़ी चोटी का जोर लगा रहा हूँ।

(9)दाल में कुछ काला होना-(कुछ गड़बड़ होना)- जब राकेश ने दीवार फाँद कर घर में घुसने का प्रयास किया, तो लगा दाल में कुछ काला है।

(10) दाँत खट्टे करना - (बुरी तरह हराना) - तीन बार के युद्धों में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी फौज के दाँत खट्टे कर दिए।

लोकोक्तियाँ

'लोकोक्ति' शब्द, दो शब्दों के मेल से बना है-'लोक'+ 'उक्ति' जिसका अर्थ है-लोक में प्रसिद्ध या प्रचलित बात। मुहावरों की तरह लोकोक्ति भी अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट करती है। इस प्रकार लोकोक्ति एक ऐसा कथन होता है जिसका प्रयोग लोग अपनी किसी बात के समर्थन में प्रयोग करते हैं।

नीचे कुछ लोकोक्तियाँ तथा उनके अर्थ दिए गए –

लोकोक्तियाँ		**अर्थ**
1. साँच को आँच नहीं	-	सच्चे को डरने की आवश्यकता नहीं।
2.मान न मान मैं तेरा मेहमान	-	जबरदस्ती गले पड़ना।
3. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	-	बहुत कंजूस होना।

4.ऊँची दुकान, फीका पकवान	-	केवल ऊपरी दिखावा।
5.काला अक्षर भैंस बराबर	-	बिलकुल अनपढ़।
6.घर का भेदी लंका ढाए	–	आपस में फूट होने पर अंतरंग आदमी बाहर जाकर सब रहस्य खोल देता है।
7 .छोटा मुँह बड़ी बात	–	योग्यता से बढ़कर बात करना।
8. आ बैल मुझे मार	–	मुसीबत को स्वयं बुलाना।
8. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद	–	मूर्ख को अच्छाई का अंदाजा नहीं होता।
10. मुँह में राम बगल में छुरी	–	दिखावे की मित्रता, मन में शत्रुता।
11.जिसकी लाठी उसकी भैंस	–	बलवान आदमी की ही जीत होती है।
12. एक अनार सौ बीमार	–	वस्तु थोड़ी और चाहने वाले बहुत।
13.जल में रहकर मगर से बैर	–	किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता।
14.दूध का दूध,पानी का पानी	–	सच-झूठ का सही-सही निर्णय।
15. दूर के ढोल सुहावने	–	दूर से सभी वस्तुएँ प्यारी लगती हैं।
16.नाच न जाने आँगन टेढ़ा	–	काम करना न आने पर बहाने बनाना।

कुछ लोकोक्तियाँ के अर्थ तथा उनका वाक्यों में प्रयोग —

(1) काला अक्षर भैंस बराबर-(बिलकुल अनपढ़ होना)। यह पुस्तक हमारे माली के किस काम की है, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(2) खोदा पहाड़ निकली चुहिया-(परिश्रम अधिक, लाभ कम होना) – बेचारे राजू ने ढेर सारा रुपया लगाकर नया व्यापार शुरू किया, पर महीने भर में आमदनी हुई केवल दो हजार रुपये। इसे कहते हैं-खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(3) ऊँची दुकान फीका पकवान - (दिखावा अधिक, वास्तविकता कम होना) – स्टेंडर्ड स्वीट शॉप का अब केवल नाम ही नाम रह गया है। चीजों का स्तर गिरता ही जा रहा है। इसे कहते हैं-ऊँची दुकान फीका पकवान ।

(4)ऊँट के मुँह में जीरा-(जरूरत से कम देना) – इस पहलवान को नाश्ते में डबलरोटी के दो टोस्ट दे रहे हो। यह तो ऊँट के मुँह में जीरा है।

(5) डूबते को तिनके का सहारा-(मुसीबत में थोड़ी सहायता भी बहुत होती है) – मेरी मुसीबत में मेरे मित्र ने थोड़ी सी सहायता की जो डूबते को तिनके के सहारे के समान थी।

लोकोक्ति और मुहावरे में अंतर – यद्यपि 'मुहावरे' और 'लोकोक्ति' दोनों में उनके सामान्य (शाब्दिक) अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ ग्रहण किया जाता है तथापि इन दोनों में रचना एवं प्रयोग के स्तर पर अंतर है-

• 'लोकोक्ति' अपने आप में पूरा वाक्य होता है जबकि 'मुहावरा' एक वाक्यांश।

• 'मुहावरे' का प्रयोग वाक्य के बीच में किया जाता है जबकि लोकोक्ति का प्रयोग किसी कथन के बाद।

आओ जाने

* मुहावरे का शाब्दिक अर्थ न होकर कुछ विशेष अर्थ होता है।
* मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर और प्रभावशाली बनाई जाती है।
* लोकोक्ति को कहावत भी कहा जाता है।
* इसका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप में किया जाता है।

आओ अभ्यास करें

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) मुहावरा किसे कहते हैं?

(ख) मुहावरे एवं लोकोक्ति में क्या अंतर है?

2.दिए गए मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए-

क. अक्ल मारी जाना	(i)चालाक होना
ख. उँगली उठाना	(ii) बीती बातों को छेड़ना ।
ग. गड़े मुर्दे उखाड़ना	(iii) मार-पीट करना
घ. हाथ उठाना	(iv) बुद्धि नष्ट होना
ङ. पर लगना	(v) निंदा करना

3.निम्नलिखित मुहावरों के सही अर्थ के आगे सही (√) का निशान लगाइए-

(क) नौ दो ग्यारह होना

चालाकी करना ( ) भाग जाना ( ) रूक जाना ( )

(ख)आग बबूला होना

गुस्सा होना( ) खुश होना( ) मार डालना( )

(ग)पेट में चूहे दौड़ना

पेट में दर्द होना ( ) नींद खुलना ( ) भूख लगना ( )

4.मुहावरों के अर्थ लिखो

1. अक्ल का अंधा -
2. घी के दीये जलाना -
3. सितारा चमकना -
4. तिल का ताड़ बनाना -
5. दिन में तारे नज़र आना -

5. नीचे दी गई लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) घर का भेदी लंका ढाए -

(ख) आ बैल मुझे मार -

(ग) मुँह में राम बगल में छुरी -

(घ) काला अक्षर भैंस बराबर -

पाठ. 24
पत्र-लेखन (Letter Writing)

अपने से दूर बसे संबंधियों, मित्रों, परिवारजनों तथा विभिन्न अधिकारियों को पत्र लिखने को आवश्यकता पड़ती रहती है। पत्रों के द्वारा हम अपनी बात अत्यंत सुगमता से उन तक पहुँचा सकते हैं ।

आज विचार विनिमय के लिए फ़ोन इंटरनेट, कंप्यूटर आदि अनेक साधन हैं, फिर से पत्र-लेखन हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ऐसी कला है, जिसके माध्यम से हम विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। भावों की अभिव्यक्ति के इस माध्यम से हम अपनी बात, समस्या, निवेदन, जानकारी, निमंत्रण आदि प्रभावशाली तरीके से दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।

पत्र लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- पत्र की भाषा सरल होनी चाहिए।
- पत्र में व्यक्त की गई बात संक्षेप में होनी चाहिए।
- लिखने वाले का नाम, पता, पत्र लिखने का स्थान, दिनांक आदि अंकित हों।
- जिसे पत्र लिखा गया हो, उसकी आयु, पद, संबंध आदि के अनुरूप संबोधनवाची शब्द तथा अभिवादन संबंधी शब्दों का सही प्रयोग किया गया हो ।
- पत्र के अंत में लिखने वाले और पत्र पाने वाले के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
- पत्र लिखते समय शुद्ध तथा स्वच्छ लेख का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।
- पत्र का प्रारंभ और अंत अत्यंत प्रभावी होना चाहिए।
- पत्र के विषय में स्पष्टता तथा गंभीरता अवश्य होनी चाहिए।

पत्रों के प्रकार

पत्र दो प्रकार के होते हैं –

1. **औपचारिक**
2. **अनौपचारिक**

1 . औपचारिक पत्र – इन्हें व्यावसायिक अथवा कार्यालयी-पत्र भी कहा जाता है। यदि आप अपने स्कूल के प्रधानाचार्य को पत्र लिखते हैं, तो वह इसी श्रेणी में आता है। इन पत्रों का संबंध किसी व्यक्ति से नहीं, वरन पद से होता है। इसी कारण इन पत्रों को औपचारिक कहा जाता है; जैसे प्रार्थना-पत्र, संपादकीय-पत्र, शिकायत-पत्र, कार्यालय संबंधी पत्र आदि।

2 . अनौपचारिक पत्र – अनौपचारिक पत्र-ऐसे पत्र जो अपने सगे-संबंधियों, परिवारजनों या परिचितों को लिखे जाते हैं, उन्हें अनौपचारिक पत्र कहा जाता है। जैसे-माता-पिता, भाई-बहन, मित्रों आदि को लिखे गए पत्र।

औपचारिक पत्र

1 . बीमारी के कारण छुट्टी के लिए प्रधानाध्यापक को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में,
प्रधानाध्यापक महोदय
दीपक पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली।

विषय- बीमारी के कारण छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र।

श्रीमान जी,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा छठी 'ब' की छात्रा हूँ। कल विद्यालय सेघर लौटते समय मुझे सिर दर्द तथा तेज बुखार हो गया था। डॉक्टर को दिखाने पर पता चला कि मुझे मलेरिया है। उन्होंने मुझे तीन दिन तक आराम करने की सलाह दी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे तीन दिन का अवकाश प्रदान करने का कष्ट करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद।
आपकी आज्ञाकारी शिष्या
अ.ब.स.
कक्षा- छठी

2. स्थानांतरण प्रमाण पत्र लेने के लिए प्रधानाध्यापक को प्रार्थना-पत्र।

सेवा में,
प्रधानाध्यापक जी ,
मदर टेरेसा पब्लिक स्कूल
आदर्श नगर, अहमदाबाद।

विषय- प्रमाण पत्र लेने के लिए प्रार्थना-पत्र।

श्रीमान जी
सविनय निवेदन यह है कि मेरे पिता जी रेलवे में नौकरी करते हैं। उनका स्थानांतरण अब दिल्ली हो गया है। हम सब उनके साथ दिल्ली जा रहे हैं। इसलिए आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे शीघ्र हो विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र देकर कृतार्थ करें।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अ.ब.स.
कक्षा- छठी

3. बड़ी बहन के विवाह में शामिल होने के लिए तीन दिन के अवकाश के लिए अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखो ।

सेवा में
प्रधानाचार्य
दिल्ली पब्लिक स्कूल
आरके पुरम्, नई दिल्ली

विषय - बहन के विवाह में शामिल होने के लिए प्रार्थना-पत्र
महोदय जी,

सविनय निवेदन यह है कि मेरी बड़ी बहन का शुभ विवाह दिनांक 6 जनवरी, 202... को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर मेरा उपस्थित रहना आवश्यक है। अतः में 5 जनवरी 202— से 7 जनवरी 202... तक विदयालय नहीं आ सकूँगा। आपसे प्रार्थना है कि मुझे इन तीन दिनों का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
आनंद कुमार
कक्षा - छठी (ब)

4. प्रधानाचार्या को शुल्क मुक्ति के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में,
प्रधानाचार्या,
गौतम बुद्ध विद्यालय,
कीर्ति नगर, नई दिल्ली।

विषय- शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना-पत्र

महोदया,

मैं आपके विद्यालय की छठी कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी कारखाने में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं। उनका मासिक वेतन केवल पाँच हजार रुपये है। इतनी कम धनराशि में पाँच सदस्यों के परिवार का गुजारा चलाना कठिन हो गया है। उन्हें मेरी फ़ीस भरने में कठिनाई हो रही है।

मैंने प्रथम सत्र की परीक्षा में पचासी प्रतिशत अंक प्राप्त किया था। खेल-कूद में भी मैं हमेशा आगे रहता हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि पढ़-लिखकर मैं शिक्षक बनूँ। आशा है आप शुल्क माफ करके मुझे पढ़ने-लिखने में सहायता प्रदान करेंगी। इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

सत्येंद्र गुप्ता
छठी 'अ'

5.अपने गली-मुहल्ले की सफाई के संबंध में नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र।

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय
दिल्ली नगर निगम (पश्चिमी क्षेत्र)
राजौरी गार्डन
नई दिल्ली
दिनांक 1 अप्रैल 200...

महोदय जी,

मैं सदर क्षेत्र का निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान इस क्षेत्र में व्याप्त गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

सदर क्षेत्र की गलियाँ इन दिनों कूड़े का अड्डा बन गई हैं। स्थान-स्थान पर कूड़े के ढेर देखे जा सकते हैं। नालियों मेंगंदा पानी भरा हुआ है जिसमें से दुर्गंध आती रहती है। गंदगी के कारण चारों ओर मच्छर-

मक्खियों का प्रकोप बढ़ गया है जिसके कारण क्षेत्र के निवासी बहुत परेशान हैं। आगामी कुछ मासों में वर्षा ऋतु आने वाली है। वर्षा आने पर तो स्थिति और भी बदतर हो जाएगी तथा हैजा, मलेरिया, आंत्रशोथ, अतिसार जैसी अनेक बीमारियों के फैलने की पूरी आशंका है। क्षेत्र के निवासियों की ओर से इस समस्या कारियों के फैलने लिए सभी प्रयास बेकार सिद्ध हुए हैं। सफाई निरीक्षकों तथा कर्मचारियों पर समझाने-बुझाने और बातचीत का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप एक बार स्वaय समय निकालकर क्षेत्र का दौरा करें या किसी वरिष्ठ अधिकारी को स्थिति का जायजा लेने भेजें तथा क्षेत्र के निवासियों की समस्या दूर करने के लिए तत्काल कार्यवाही करें।

सधन्यवाद

भवदीय
सचिव,
नागरिक परिषद्

अनौपचारिक पत्र

1. रुपए मंगवाने के लिए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।

छात्रावास
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
यमुना विहार, नई दिल्ली
12 जनवरी, 20...

पूजनीय पिताजी
सादर चरण स्पर्श

आपका पत्र मिला। कुशलता का समाचार जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ।
आपको यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि छमाही परीक्षा में मैंने 90 प्रतिशत अंकों के साथ कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मुझे अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के लिए कुछ पुस्तकें, कापियों तथा पढ़ाई की अन्य सामग्री खरीदनी है, अतः मुझे यथाशीघ्र डाक द्वारा एक हजार रुपए भिजवाने का कष्ट करें। माताजी को चरण स्पर्श तथा लतिका को प्यार।

आपका पुत्र
अ. ब.स.

2.अपने मित्र को जन्मदिन पर आमंत्रित करते हुए पत्र।

इ - 416, 'गीता सदन'
जवाहर नगर,
दिल्ली
दिनांक 6 नवंबर 200...
प्रिय मित्र दीपू,

स्नेहिल नमस्कार

मुझे तुम्हारे पत्र द्वारा यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि अब तुम बिलकुल स्वस्थ हो। मित्र, तुम्हें तो याद ही होगा कि मेरा जन्म दिन 21 दिसंबर को आता है, जिसे हर वर्ष में धूमधाम से मनाता हूँ। इस वर्ष भी मैं अपना जन्मदिन अपने मित्रों के साथ मनाऊँगा। अपने जन्म दिन पर मैं तुम्हें निमंत्रित कर रहा हूँ। आशा है कि गत वर्ष की तरह निराश नहीं करोगे। 21 दिसंबर को प्रातः 9:30 बजे हवन एवं पूजा, दोपहर को भोजन, सायंकाल को केक काटने की रस्म तथा रात्रि में भजन संध्या एवं प्रीतिभोज का कार्यक्रम है। इस अवसर पर मेरे सभी मित्र आएँगे। मुझे विश्वास है कि तुम भी समय पर उपस्थित होकर अपने स्नेह का परिचय दोगे।

तुम्हारा मित्र
अ. ब .स

3.चिड़ियाघर की सैर से प्राप्त अपने अनुभवों की जानकारी देते हुए अपनी छोटी बहन को पत्र लिखिए।

8/9 विकासपुरी,
नई दिल्ली।
12 अप्रैल, 20..
प्रिय रेणुका,

सप्रेम नमस्कार

तुम्हारा पत्र मिला। कल मेरे विद्यालय से विद्यार्थियों का समूह दिल्ली के चिड़ियाघर के भ्रमण पर गया था। उस समूह में मैं भी शामिल था। वहाँ के अनुभवों की जानकरी मैं इस पत्र में तुम्हें दे रहा हूँ ।

दिल्ली का चिड़ियाघर एक बड़े क्षेत्र में है। यहाँ तरह-तरह के जंगली पशु देखने को मिले। शेर की दहाड़ पूरे वातावरण में गूँज रही थी। हिरणों का झुंड कुछ दूरी पर था। उनके सींग बड़े आकर्षक लग रहे थे। वे अपनी सचेत आँखों से आस-पास की गतिविधियों को देख रहे थे। यहाँ हाथी, भालू, जिराफ़ आदि पशु भी थे। चिड़ियाघर में मैंने पहली बार हाथी की सवारी की। इसमें बहुत आनंद आया। रंग-बिरंगे पक्षी चिड़ियाघर की शोभा बढ़ा रहे थे। मोर पंख फैलाकर नाच रहा था। यह दृश्य बहुत आकर्षक था। अगली बार जब तुम दिल्ली आओगी तो मैं तुम्हें भी चिड़ियाघर की सैर कराने ले चलूँगा।

तुम्हारा भाई,
अ .ब .स

4. परीक्षा में सफलता पर बधाई देते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

333, फूलबाग
लखनऊ
05 मार्च, 20.....
प्रिय मित्र अमृत
सप्रेम नमस्कार

तुम्हारा पत्र मिला। यह पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि तुमने इस बार भी परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त की है। तुम्हारे 94 प्रतिशत अंक तथा कक्षा में प्रथम स्थान इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि तुमने वर्ष भर खूब मेहनत की, जिसका फल तुम्हें मिला। यदि तुम इसी प्रकार परिश्रम करते रहे, तो वह दिन दूर नहीं जब तुम अपने माता-पिता की आशाओं को पूरा करोगे तथा जीवन में कुछ बनकर दिखाओगे। हम सभी की ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई।

पूज्य चाचाजी एवं चाचीजी को चरण स्पर्श तथा सोनिया को प्यार।

तुम्हारा मित्र,

अ.ब.स

5. बड़ी बहन की शादी के अवसर पर मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

19/2 ए, कीर्ति नगर,

नई दिल्ली।

8 जून, 20..

प्रिय अर्पिता,

नमस्ते।

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि मेरी बड़ी बहन का शुभ विवाह 20 जून, 20... को होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं तुम्हें प्रेमपूर्वक आमंत्रित करती हूँ। तुम्हारे आने से मुझे तथा मेरे घरवालों को बहुत खुशी होगी। अपने आने की सूचना देना। मैं स्टेशन पर लेने आऊँगी।

तुम्हारी प्रिय सहेली,

अ.ब.स

आओ अभ्यास करे

नीचे दिए गए प्रश्नो को लिखिए

1.स्वास्थ्य विभाग के लिए अपने क्षेत्र में मलेरिया की रोकथाम के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

2.अपने विद्यालय के छात्रावास के संबंध में जानकारी देते हुए पिता जी को पत्र लिखिए।

3.बैंक अधिकारी की शिकायत करते हुए बैंक मुख्यालय में उच्च अधिकारी को पत्र लिखिए ।

4.जन्मदिन पर भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद देते हुए चाचाजी को पत्र लिखिए।

5. व्यायाम के लाभ बताते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

6. विद्यालय के वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।

पाठ.25 अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing)

अनुच्छेद' निबंध का संक्षिप्त रूप होताहै। निबंध में जो बातें विस्तार से लिखी जाती है। वहीं बातें अनुच्छेद में संक्षिप्त रूप में लिखी जाती हैं। यह भी अपने आप में पूर्ण होता है। इसमें भूमिका और उपसंहार के लिए कोई स्थान नहीं होता।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

- अनुच्छेद लेखन में शब्द-सीमा का ध्यान रखना चाहिए।
- भाषा सुंदर और सरल होनी चाहिए।
- अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से संबंधित होने चाहिए।
- शब्द चयन उत्तम होना चाहिए।
- विचार संक्षेप में प्रकट करने चाहिए।

1. पर्यावरण

हवा, जल और प्रकाश प्रकृति की वह देन है जिसे हम पर्यावरण के रूप में जानते हैं। यही मानव जाति अन्य जीव-जंतुओं के अस्तित्व का आधार है। प्रकृति ने हमें एक स्वच्छ और सुंदर वातावरण दिया है लेकिन उसको रक्षा हेतु हम खुद ही लाचार से दिखते हैं। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए वातावरण को प्रदूषित और असंतुलित करने में लगे हैं। मानवीय प्रगति की होड़ में हम वृक्षों और जंगलों को काटकर उनकी जगह इमारतें और कारखाने खड़े कर रहे
हैं। हमें प्रगति पाने की लालसा नियंत्रित कर प्रकृति के दिए हुए सुंदर वातावरण और हवा से खिलवाड़ बंद करना होगा। पर्यावरण की सुरक्षा में वनों का बहुत बड़ा योगदान है। हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। वृक्ष जल के बहाव को रोक कर बाढ़ को नियंत्रित करते हैं। भूमि को रेगिस्तान बनने से रोकते हैं। वृक्ष नमी को सोखकर धरती के नीचे तक पहुँचा देते हैं जिससे भूमि उपजाऊ बनी रहती है। पर्यावरण की उपेक्षा करने से इसका परिणाम सारे विश्व को भुगतना पड़ सकता है। इसलिए समय रहते पर्यावरण की सुरक्षा के लिए शीघ्र ही ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

2. समय का सदुपयोग

समय बहुत मूल्यवान होता है। एक बार जब समय हाथ से निकल जाता है तो पछतावा ही होता है। वर्षा समय पर न होने से फसलें सूख जाती हैं। समय पर पढ़ाई नहीं करने से परीक्षा में असफलता मिलती। इसलिए समय का मूल्य समझकर प्रत्येक कार्य समय रहते पूरा कर लेना चाहिए। एक- एक पल का महत्व समझकर उसका सदुपयोग करना चाहिए। कुछ लोग आलस्य के कारण समय को बर्बाद कर देते है । कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बेकार के

कामों में अपने अमूल्य समय को नष्ट कर देते हैं। ये दोनों ही बातें गलत हैं । समय की नब्ज़ को पहचानकर उसका भली-

भाँति उपयोग करने में ही बुद्धिमानी है। यदि मय का सदुपयोग किया जाए तो हमारी कई समस्याएँ स्वतः समाप्त हो सकती हैं।

3. पुस्तकालय

पुस्तकालय ज्ञान का भंडार होता है। पाठ्य-पुस्तकों में विषय सीमित होते हैं। पुस्तकालय एक-एक विषय पर अनेक पुस्तकों का अथाह सागर कहलाता है। पुस्तकालय की सहायता से हमारे ज्ञान का क्षितिज विस्तृत होता है। विद्याथियों का सामान्य अथवा विशेष ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रायः प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकालय होता है, जहाँ प्रतिवर्ष नई पुस्तकें आती हैं। कुछ सार्वजनिक पुस्तकालय भी होते हैं, जो सभी सोसायटियों, संस्थानों या सरकार द्वारा चलाए जाते हैं। इनमें आम आदमी जितना चाहे लाभ उठा सकता है। पुस्तकालय से अधिक लाभ उठाकर हम अपने ज्ञान में निरंतर वृद्धि करते रहते हैं। जीवन में प्रगति के चरित्र के विषय के लिए सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए भी पुस्तकालय बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं।

4. मोबाइल फ़ोन

मोबाइल फोन विज्ञान का एक अद्भूत आविष्कार है, जिसने लोगों का सोचने-समझने का तरीका ही बदल दिया है। दुनिया में सभी के पास आजकल मोबाइल हैं और वर्तमान में तो मोबाइल फ़ोन को स्मार्टफोन का रूप दिया गया है। अब इसे मिनी कंप्यूटर भी कहा जाने लगा है। मोबाइल फोन के कारण हर क्षेत्र में बदलाव आया है। चाहे वह व्यापार का क्षेत्र हो, विज्ञान हो या फिर कृषि क्षेत्र, मोबाइल के आविष्कार के कारण लोग चलते-फिरते दुनिया के किसी भी क्षेत्र में बातचीत कर सकते हैं या फिर वीडियो कॉल करके एक-दूसरे को देख भी सकते हैं। मोबाइल फोन के कारण हर क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आए है। मोबाइल फोन आने के बाद मिनटों में दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से बातचीत कर सकते हैं। संदेश भेज सकते हैं, वीडियों में बातचीत कर सकते हैं, इनमें लोग कैमरे से कोई भी फोटों से सकते हैं, और साथ ही इंटरनेट भी चला सकते हैं। किसी भी प्रकार का डाटा भेज सकते हैं;

आनलाइन शॉपिंग कर सकते हैं; डिजिटल भुगतान कर सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा किसी भी प्रकार की जानकारी ले सकते हैं और आनलाइन पढ़ाई भी कर सकते हैं। मोबाइल फोन आने के बाद लोगों को इसका लाभ भी मिला है तो इसके दुष्परिणाम भी भोगने पड़ रहे हैं। बच्चे मोबाइल का अधिक प्रयोग करने से बिगड़ रहे हैं। उनकी आँखों की रोशनी कम हो रही है। अतः बच्चों को मोबाइल से दूर रखना होगा।

5.खेल-कूद और विद्यार्थी

पढ़ाई-लिखाई और अच्छे संस्कारों के साथ-साथ खेल-कूद का भी हमारे जीवन में बहुत महत्व है। खेल और व्यायाम शरीर को स्वस्थ रखते हैं। विद्यार्थियों के शरीर के समुचित विकास के लिए खेल बहुत ही आवश्यक है। प्रतिदिन खेलने वाले विद्यार्थियों के तन के साथ-साथ उनका मन भी स्वस्थ रहता है। खेल खेलने से खेल भावना और अपनी टीम के प्रति जो लगाव उत्पन्न होता है, वह अनुशासन की भावना को जन्म देता है। खेलों से संगठन की भावना जागती है। यही भावना विद्यार्थियों में अपने विद्यालय, प्रांत, राज्य और राष्ट्र के प्रति भी लगाव उत्पन्न करती है। खेलों के माध्यम से एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से संपर्क बढ़ता है। विद्यार्थी के व्यक्तिगत जीवन का संपूर्ण विकास खेलों के सहयोग से होता है। यह विद्यार्थी को सबसे अधिक प्रसन्नता दिलाने वाला क्षेत्र है।

6. पर्यावरण प्रदूषण -

आज के विज्ञान-युग में प्रदूषण की समस्या एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ी है। उद्योगों के विस्तार के साथ-साथ प्रदूषण भी और अधिक बढ़ा है। धरती का वायुमंडल इतना विषैला हो गया है कि किसी भीड़ भरे चौराहे पर साँस लेने में भी दिक्कत महसूस होने लगती है। प्रकृति में जब तक संतुलन बना हुआ था, तब तक जल और वायु दोनों ही शुद्ध थे। उपयोगितावाद के हाथों प्राकृतिक साधनों का अंधाधुंध दोहन हुआ है, परिणामस्वरूप वातावरण में निरंतर प्रदूषण बढ़ा ही है। आज स्थिति यह हो गई है कि न केवल हवा, बल्कि जल-स्रोत भी दूषित हो गए हैं। इतना ही नहीं अब तो ध्वनि-प्रदूषण के भी दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। यदि हम अब भी नहीं संभले तो उसके विनाशकारी परिणाम शीघ्र सामने आएंगे। संसार में जो कुछ भी है वह मनुष्य से जुड़ा हुआ है। अपने व्यवहार से मनुष्य उसे अच्छा या बुरा जो चाहे बना सकता है। मानव का भला तो अच्छा करने और बनाने में ही है। यह सोचकर हमें जंगलों की रक्षा कर नए पेड़ उगाने हैं। धुआँ-

धुंध फैलाने वाले उन उपकरणों से छुटकारा पाने का प्रयास करना है, जो कि वायु को प्रदूषित कर दमघोंटू सिद्ध हो रहे हैं। अपने चारों ओर की सफाई का ध्यान रखना है। नदियों के जल की शुद्धता और पवित्रता बनाए रखनी है। सबसे बढ़कर अपने मन-मस्तिष्क को वैयक्तिक स्वार्थों के प्रदूषण से मुक्त रखकर ऐसे कार्य करने हैं जो समूची मानवता के हित में हो ।

आओ अभ्यास करें

निम्नलिखित विषयों पर 100-150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए -

1. मेरा प्रिय मित्र
2. परिश्रम का महत्व
3. हमारे राष्ट्रीय चिह्न
4. अनुशासन का महत्व
5. मेरा प्रिय खेल
6. परोपकार
7. ग्लोबल - वार्मिंग

पाठ- 26 कहानी-लेखन (Story Writing)

गद्य साहित्य की सबसे प्रमुख विधा कहानी-लेखन, साहित्य का सबसे प्राचीन रूप है। किसी घटना का मनोरंजन से भरा चित्रण करना ही कहानी-लेखन कहलाता है। कहानी न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि शिक्षाप्रद भी होती है। लेकिन श्रेष्ठ कहानी वही होती है, जो पाठकों के मन को छू ले। रोचक और मर्मस्पर्शी-भावना से भरी कहानी ही अच्छी कहानी मानी जाती है।

कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए-

• कहानी की रूप-रेखा बनाना बहुत आवश्यक है।
• यदि कहानी लिखने के कुछ संकेत या चित्र दिए गए हैं तो उन्हें अच्छी तरह समझ लेने के पश्चात् ही कहानी लिखनी चाहिए।
• कहानी का आरम्भ ऐसा होना चाहिए जिसे पढ़कर पूरी कहानी पढ़ने का मन करे।
• कहानी सदैव भूतकाल में होनी चाहिए।
• कहानी अधिक बड़ी न हो। उसमें अधिक से अधिक 150 शब्द होने चाहिए।
• कहानी की भाषा सरल, सरस तथा आम बोल-चाल की होनी चाहिए।
• कहानी का अन्त उसकी शिक्षा के अनुसार होना चाहिए।
• कहानी के अन्त में उससे मिलने वाली शिक्षा अवश्य लिखनी चाहिए।

1. जैसे को तैसा

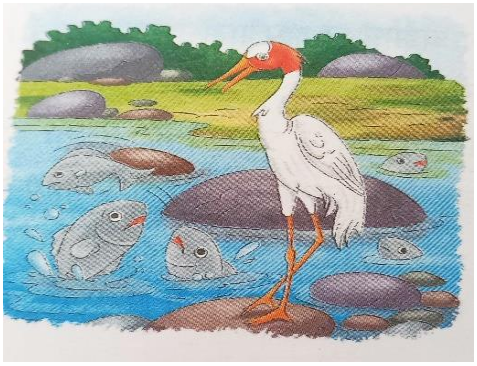

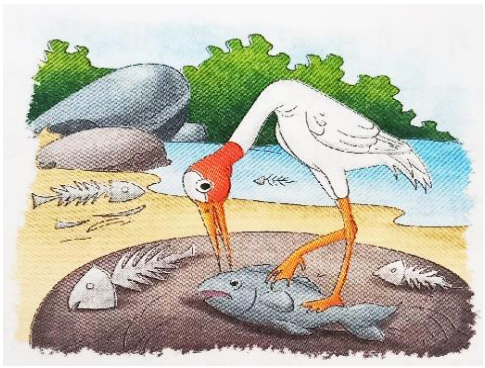

एक छोटा-सा तालाब था। तालाब के किनारे एक बगुला रहता था। बगुला बहुत चालाक था। अब वह बूढ़ा हो गया था। उसे कम दिखाई देता था, इसी कारण वह मछली नहीं पकड़ पाता था। एक दिन उसने सभी मछलियों को बुलाया और बोला, "यह तालाब तो सूख रहा है। मैं तो गाँव के पार जंगल में एक तालाब देख आया हूँ। वहीं रहने जा रहा हूँ।"
यह बात सुनकर सभी मछलियाँ चिंता में पड़ गईं। उन्होंने बगुले से कहा, "हम भी तो तालाब सूखने पर मर जाएँगी!" "बगुले दादा! हमारी मद्द कीजिए। हम तो आप की तरह उड़ नहीं सकतीं, हमें बचा लीजिए! बगुला बोला, "वैसे तो मैं अब ज्यादा उड़ नहीं पाता, पर तुम्हारे साथ इतना लंबा समय बिताया है। तुम्हें मरने के लिए भी नहीं छोड़ सकता। चलो एक-एक करके अपनी चोंच में दबाकर तुम सबको वहाँ ले चलता हूँ।" मछलियों ने बगुले की प्रशंसा की और बगुले ने सबसे पहली मछली को चोंच में दबा लिया और उड़ चला। जंगल में कोई तालाब न था। बगुला एक चट्टान के पीछे बैठकर मछली को चट कर गया। थोड़ी देर में उड़ता हुआ फिर आ पहुँचा। अब दूसरी मछली ले उड़ा। उसे देखकर सभी मछलियाँ पहले मैं पहले मैं करती उछल पड़तीं। वह मस्ती से दावत उड़ाता। कुछ ही दिनों में सभी मछलियाँ मर गईं। तालाब के किनारे रहने वाला केकड़ा बोला, "बगुले दादा मुझे भी ले चलो ना!" बगुले ने कहा, "हाँ, तुम भी चलो!" बगुले की गरदन पर सवार केकड़े ने आकाश से ही बेचारी मछलियों के कंकाल देख लिए। उसने बगुले की गरदन को जकड़ लिया और बगुले को मार डाला।

शिक्षा - बुरा काम करने से बुरा फल मिलता है ।

2. मेहनत का फल मीठा

एक गाँव में एक किसान रहता था। वह खेती करके अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। उसकी चिंता का कारण उसके चार बेटे थे। उसके पाँचों बेटे आलसी और कामचोर थे। एक दिन किसान अचानक बीमार पड़ गया। किसान अपने आलसी और निकम्मे बेटों को शिक्षा देना चाहता था। उसने मन ही मन एक योजना बनाई और अपने चारों बेटों को अपने पास बुलाया। उसने अपने बेटों से कहा- "मेरी मृत्यु निकट है, अतः मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ। मेरा कमाया हुआ धन खेतों में दबा पड़ा है। मेरी मृत्यु के बाद तुम उसे खोदकर निकाल लेना।" इतना कहकर किसान स्वर्ग सिधार गया। कुछ दिन पश्चात् किसान के पुत्रों को खर्च के लिए धन की आवश्यकता हुई। उन्हें अपने पिता की बात याद आई और चारों भाइयों ने मिलकर एक-एक करके सारे खेत खोद डाले पर उन्हें कहीं भी धन की प्राप्ति नहीं हुई। चारों भाई बड़े निराश हुए। गाँव के एक बूढ़े व्यक्ति ने उन्हें सलाह दी कि तुमने अपने खेत तो खोद ही दिए हैं. इनमें अनाज भी

बो दो। बूढ़े की सलाह पर उन्होंने अनाज बो दिया। कुछ दिनों बाद उनके खेत लहलहा उठे। किसान के बेटे खुशी से झूमने लगे। उनके पास खूब अनाज हो गया। उन्हें अनाज बेचकर काफी धन प्राप्त हुआ। अब उन्हें पिता द्वारा बताए हुए धन का रहस्य समझ में आ गया और वे आलस्य छोड़कर मेहनत करने लगे।

शिक्षा : परिश्रम ही सच्चा धन है।

3. सहयोग

एक जंगल में नदी के किनारे बहुत-सी बकरियाँ रहती थी। नदी के ऊपर एक संकरा पुल बना हुआ था, जिस पर से बकरियाँ एक तट से दूसरे तट तक जाती थी, परन्तु वह पुल इतना संकरा था कि उस पर एक ही बकरी गुजर सकती थी। एक बार दो बकरियाँ आमने-सामने की दिशा से आई और पुल पार करने लगी। दोनों को पुल के ठीक बीचों-बीच मुलाकात हुई। दोनों को ही विपरीत दिशाओं में पुल पार करना था। विकट समस्या थी। पुल से केवल एक ही बकरी पार हो सकती थी। परन्तु कौन पहले जाए? दोनों बड़ी जिद्दी बकरियाँ थीं। वे पहले पार जाने की जिद लिए आपस में लड़ने लगीं। जब बात मारपीट पर पहुँची तो उनका संतुलन बिगड़ गया और वे सीधी पानी में जा गिरी। कुछ दिनों बाद फिर ऐसे ही दो बकरियाँ विपरीत दिशाओं से पुल पर आयी और उनका आमना-सामना हुआ। उन दोनों के समक्ष भी यही समस्या थी। परन्तु ये दोनों नेक और समझदार बकरियाँ थीं। पहले वाली बकरियों के समान वे लड़ी नहीं। वे दोनों मिलकर उपाय सोचने लगीं। तभी उनमें से एक बोली- "ऐसा करते हैं, मैं बैठ जाती हूँ और तुम मेरे ऊपर से चढ़कर अपनी दिशा की ओर चली जाओ।" दूसरी बहुत प्रसन्न हुई और बोली- "ठीक है। चलो में बैठती हूँ और तुम मुझे लाँघ कर पुल पार कर लेना। " इतना कहकर वह लेट गई। पहली बकरी ने उसे लाँधकर पुल पार कर लिया व दूसरी भी उठकर अपनी दिशा में चली गई।

शिक्षा: सहयोग से ही जीवन है।

अभ्यास कार्य

1. नीचे दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी लिखिए और शीर्षक तथा शिक्षा भी दीजिए।

2. संकेत के आधार पर कहानी लिखिए -

एक जामुन के पेड़ पर बंदर का रहना ------------ बंदर मगरमच्छ की दोस्ती होना -----------रोज़ बंदर द्वारा मगरमच्छ को मीठे-मीठे जामुन देना ----------- मगरमच्छ को लालच आना --------- बंदर को अपनी पीठ पर बैठा ले जाना --------- बंदर को मगरमच्छ की चालाकी समझना ।

पाठ 27
संवाद - लेखन (Dialogue Writing)

संवाद का अर्थ है वार्ता या बातचीत। बातचीत के क्रम में एक व्यक्ति बोलता है तो दूसरा सुनता है। दूसरा व्यक्ति पहले की बात सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। इसी संवाद को जब हम लिखते हैं तो यह संवाद-लेखन कहलाता है ।

संवाद- लेखन को लिखते समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए –

•संवादों को लिखते समय सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
•संवाद छोटे होने चाहिए।
•संवाद पात्र के स्वभाव और उसकी योग्यता के अनुसार होने चाहिए।
•संवादों का प्रयोग एकांकी, नाटक, धारावाहिकों, फिल्मों आदि में देखने को मिलता है।

संवाद के कुछ उदाहरण –

1: मध्य प्रदेश में बस दुर्घटना पर चिंतित दो लड़कियों के बीच संवाद –

ऋतु - मध्य प्रदेश की बस दुर्घटना की खबर पढ़कर मुझे रातभर नींद नहीं आई।
कृति - सच ! पर दुर्घटना पर किसका बस?
ऋतु - तुमने पूरी खबर नहीं पढ़ी?
कृति - पढी समझ नहीं आता जगह-जगह लगे बैरीकेड क्या कर रहे हैं?
ऋतु - पेपर देखो और बस।
कृति - कोई भी यह नही देख रहा 35 सीटर बस में 70 लोग क्यों हैं?
ऋतु- लालच! निजी बस चलाने वालों का!
कृति - अब शायद लोग जाग जाएँ।

2. महँगाई और मिलावट पर दो स्त्रियों का संवाद –

राधा - हैलो निशा, क्या ले रही हो?
पूजा - दाल ले रही हूँ। दालें कितनी महंगी हो गई हैं।
राधा - हाँ, समझ ही नहीं आता। क्या लें और क्या न लें?
पूजा - महँगी तो महँगी, दालों में मिलावट भी है।
राधा - क्या करें, कुछ तो खाना ही है।
पूजा- आज कल की सब्जियों में भी स्वाद नहीं आता है।
राधा - दवाईयाँ डाल-डाल कर तो सब्ज़ियाँ उगाते हैं, स्वाद क्या मिलेगा?
पूजा - हाँ, शुद्धता तो समाप्त होती जा रही है।

3. जन्मदिन के कार्यक्रम के संबंध में दो मित्रों के बीच संवाद –

आर्यन - अरे शौर्य। चलो अच्छा हुआ, तुम यहीं पर मिल गए। मैं तो तुम्हारे घर ही आ रहा था।
शौर्य - क्या कोई खास बात है?
आर्यन - हाँ, आगामी बारह तारीख को मेरा जन्मदिन है। उसी अवसर पर तुम्हें और तुम्हारे मम्मी-पापा को निमंत्रित करने आ रहा था।
शौर्य - मम्मी-पापा तो कानपुर गए हैं। जब वे आएँगे, तो मैं उन्हें बता दूँगा।
आर्यन - बता दूँगा नहीं, तुम्हें उन्हें अपने साथ लेकर आना है। वे कब तक आएँगे?
शौर्य - कल शाम की गाड़ी से आएँगे।
आर्यन - चलो मैं परसों खुद आकर उन्हें निमंत्रित करूँगा और उनसे मेरे जन्मदिन पर आने की प्रार्थना करूंगा।
शौर्य - ठीक है आ जाना। अच्छा, यह तो वताओं, तुमने किस-किस को बुलाया है?
आर्यन - मैंने लगभग अपने सभी मित्रों को बुलाया है। राजू, सोनू, विजय, मोहन, गगन, क्षितिज, प्रियंका, राहुल, विपिन आदि सभी को बुलाया है।
शौर्य - सुधांशु को नहीं बुलाया?
आर्यन - वह अपने मामा जी के यहाँ आगरा गया है। पंद्रह दिनों के बाद लौटेगा।
शौर्य- क्या-क्या कार्यक्रम रखे हैं, जन्मदिन पर?
आर्यन- सुबह 9 बजे हवन होगा, दोपहर को प्रीतिभोज, संध्या को चार बजे केक काटना और रात्रि में भगवती जागरण और भोजन।

4. डॉक्टर और मरीज़ की बातचीत

मरीज - नमस्कार डॉक्टर साहब।
डॉक्टर - नमस्कार। आओ, सामने बैठ जाओ। बताओ तुम्हें क्या तकलीफ है ?
मरीज - पिछले एक सप्ताह से पेट में तकलीफ़ है, खाना ठीक से हजम नहीं हो रहा। सुबह-सुबह खट्टी डकारें आती हैं।
डॉक्टर - अच्छा, और कोई तकलीफ ?
मरीज - मैं पेट से ही परेशान हूँ, भूख कम लगती है और तीन चार-दिन से कुछ कमजोरी महसूस कर रहा हूँ।
डॉक्टर - जरा अपना पेट दिखाओ। (पेट की जाँच करने पर) पेट में गैस बन गई है। लगता है लीवर ठीक से काम नहीं कर रहा है।
मरीज- इसका उपाय ?
डॉक्टर - इसका उपाय मेरे पास है। मैं दो-तीन दवाईयाँ लिख दे रहा हूँ। नियम से लो। खूब पानी पियो, कम से कम चार-पाँच लीटर प्रतिदिन। कुछ दिनों तक खटाई, मिर्च-मसाला-तेल बंद। कल से ही आराम मिलेगा।

मरीज - दवाई कितने दिन तक लेनी पड़ेगी ?
डॉक्टर- अभी तो मैं तीन दिन की दवाई लिख रहा हूँ। तीन दिन बाद में इसके बारे में बता पाऊँगा। पूरी उम्मीद है कि इतने समय में पेट ठीक हो जाएगा। यदि आवश्यकता हुई तो एक-दो टेस्ट भी कराऊँगा।
मरीज - धन्यवाद डॉक्टर साहब।
डॉक्टर- धन्यवाद।

5. अध्यापिका और छात्रा के बीच संवाद-
(विलंब से आने के बारे में)

अध्यापिका - पूजा, आज तुम्हें विद्यालय आने में इतना विलंब क्यों हुआ ?
छात्रा - अध्यापिका जी, कल से मेरी माँ को बुखार हो गया है। इसलिए देरी हो गई।
अध्यापिका - ओहो। अब कैसी हैं तुम्हारी माँ ? बुखार कुछ घटा या नहीं ?
छात्रा - कल से कुछ ठीक हैं, परंतु बुखार अभी भी है। कमजोरी भी है। डॉक्टर ने दवा दी है और तीन-चार दिन तक आराम करने के लिए कहा है।
अध्यापिका - घर पर उनकी देखभाल के लिए कोई है भी या नहीं ?
छात्रा - जी, पिता जी हैं। उन्होंने कार्यालय से अवकाश ले लिया है।
अध्यापिका - चलो, अच्छा है। अब अपनी सीट पर बैठ जाओ। लेकिन कल से समय पर विद्यालय आने की कोशिश करना।
छात्रा - बहुत अच्छा। अध्यापिका जी। मैं इस बात का पूरा ध्यान रखूँगी।

प्रश्न अभ्यास

दिए गए विषयों पर संवाद लिखिए-

1. भाई और बहन के बीच बातचीत (चिड़ियाघर की सैर करने के बारे में)
2. माँ एवं पुत्री के बीच बातचीत (दशहरे के मेले के बारे में)
3. दो मित्रों के बीच पेड़ काटने को लेकर संवाद।
4. बच्चे व दाँतों के डॉक्टर के बीच संवाद।
5. पिता और पुत्र के बीच पढ़ाई को लेकर संवाद।

पाठ- 28

विज्ञापन - लेखन Advertisement Writing

विज्ञापन से आशय

विज्ञापन शब्द दो शब्दों के योग से बना है-वि + ज्ञापन। 'वि' उपसर्ग है और उसका अर्थ होता है-'विशेष'। 'ज्ञापन' शब्द का अर्थ है-'सूचना का ज्ञान'। इसका मिश्रित अर्थ सामान्य रूप में 'किसी वस्तु या तथ्य की विशेष जानकारी देना' स्वीकार किया गया है ।

विज्ञापन का उद्देश्य उत्पादक को लाभ पहुँचाना, उपभोक्ता को शिक्षित करना, विक्रेता की मदद करना, प्रतिस्पर्धा को समाप्त कर व्यापारियों को अपनी ओर आकर्षित करना और सबसे अधिक तो उत्पादक और उपभोक्ता से संबंध अच्छे बनाना होता है ।

विज्ञापन के उद्देश्य

विज्ञापन के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं-

1. उत्पादों का परिचय कराना।

2. उपभोक्ताओं का ध्यान उत्पाद की ओर आकर्षित करना।

3.उत्पादों में रुचि उत्पन्न करना।

4. उत्पादों के प्रति विश्वास उत्पन्न करना।

5. उपभोक्ताओं को उत्पादों की आवश्यकता का अनुभव कराना।

6. उपभोक्ताओं में वस्तुओं की क्रय-इच्छा उत्पन्न करके उन्हें बाजार तक खींच लाना।

7. उत्पादों के विक्रय में वृद्धि करना।

8. उत्पादों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करके वस्तुओं के चयन में उपभोक्ताओं की मदद करना।

9. उत्पादक तथा उपभोक्ता के मध्य अच्छे संबंध बनाना।

10. उत्पादों का व्यापक प्रचार करना।

11. उत्पाद एवं उत्पादक की प्रतिष्ठा में वृद्धि करना।

12. उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं के मन में वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण विकसित करना।

13. उत्पादकों की आकर्षक योजनाओं से उपभोक्ताओं को परिचित कराकर उन्हें उत्पादों के प्रति आकर्षित करना।

14. उत्पादकों के लाभ में वृद्धि करना।

15. अपनी सेवा, संस्था का उद्योग के लिए उपयुक्त लोगों को खोजना।

विज्ञापन के विविध माध्यम

1.मुद्रण माध्यम – समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ।

2.इलैक्ट्रॉनिक माध्यम

(क) श्रव्य माध्यम – रेडियो, मुनादी आदि।

(ख) श्रव्य दृश्य माध्यम – टेलीविज़न इंटरनेट।

3.चलचित्र माध्यम -फिल्म।

4.अन्य माध्यम – आउट डोर, होर्डिंग, पर्चे, पोस्टर, बैनर, प्रदर्शनी, स्टीकर, उपहार, डायरी, कलैंडर आदि।

विज्ञापन के अंग

एक अच्छे विज्ञापन-निर्माण के प्रमुख अंग इस प्रकार हैं -

1. विषयवस्तु (थीम) - सटीक तथा आकर्षक होनी चाहिए।

2. शीर्षक (टाइटल) - विषयानुकूल तथा प्रभावी होना चाहिए।

3. चित्र (इलस्ट्रेशन) - सुंदर व मनोहारी होना चाहिए।

4. रंग (कलर) - रंग-योजना वैविध्यपूर्ण होनी चाहिए।

5. व्यवसाय चिह्न (लोगो) - मोनोग्राम/प्रतीक चिह्न का प्रयोग होना चाहिए।

6. नारा (स्लोगन) - गुणवत्ता का सूचक होना चाहिए।

7. बाहरी विन्यास (ले-आउट)-संतुलित, आकर्षक तथा रुचिपूर्ण होना चाहिए।

विज्ञापनों में प्रयुक्त होने वाले कुछ प्रमुख प्रेरक वाक्य -

जल्दी कीजिए!

धमाका सेल !

मौके का लाभ उठाएँ!

पहले आओ! पहले पाओ !

एक ख़रीदें, एक मुफ़्त पाएँ!

सोचिए मत !

100% सुरक्षा की गारंटी !

मौक़ा निकल न जाए !

शीघ्र ही खरीदिए !

ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा !

स्टॉक सीमित है; जल्दी करें!

ऑफर सीमित समय के लिए!

जल्दी आएँ, अवसर हाथ से न गँवाएँ!

सफलता की गारंटी !

विज्ञापन- लेखन

1. मोबाइल फ़ोन का विज्ञापन तैयार कीजिए।

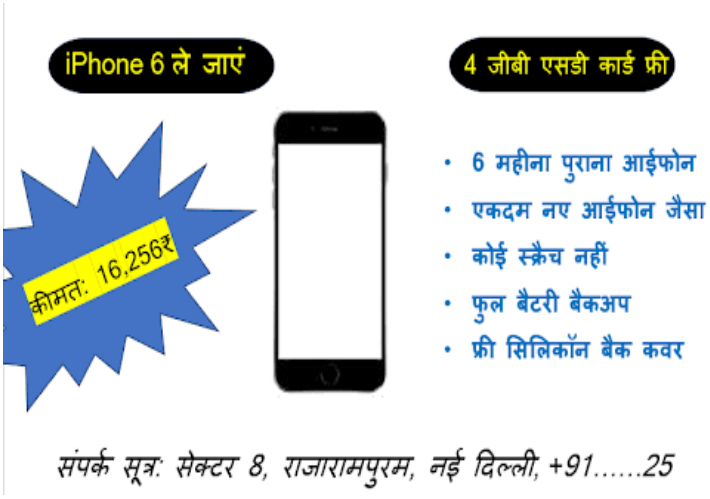

2.अपनी पुरानी रेसिंग साइकिल बेचने के लिए उसकी खूबियाँ बताते हुए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

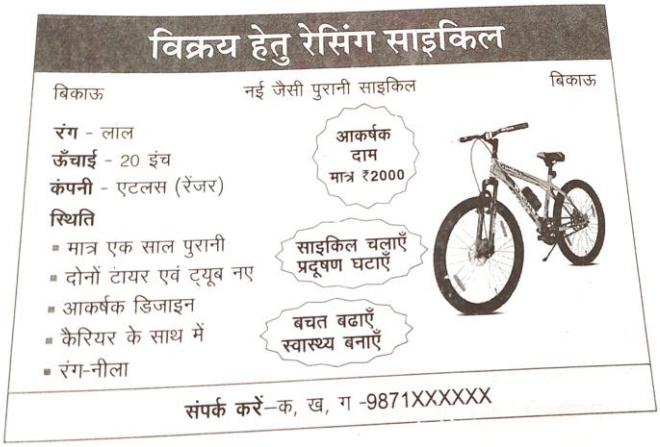

3. एक कंपनी 'लेखनी' नाम का नया पेन बाजार में लाना चाहती है। उसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

4. घर की बनी चॉकलेट के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए

निम्नलिखित विषयों से संबंधित विज्ञापन लेखन कीजिए।

1.एक प्रसिद्ध लैपटॉप बनाने वाली कंपनी की ओर से अपने नए उत्पाद के लिए विज्ञापन लेखन कीजिए।

2. एक जूते बनाने वाली अंतर्राष्ट्रीय कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

3. आइसक्रीम के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

4.'वाटर पार्क' के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

5.पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण पर चिंता व्यक्त करते हुए 'पर्यावरण सुरक्षा के विषय पर विज्ञापन तैयार कीजिए।

6. आपकी माताजी बच्चों के बहुत सुंदर खिलौने बनाती हैं। उन्हें बेचने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

पाठ.29 निबंध-लेखन (Essay writing)

निबंध शब्द 'नि' उपसर्ग के साथ 'बंध' शब्द के योग से बना है। निबंध (नि + बंध) का अर्थ है- अच्छी तरह बंधा हुआ। जब एक ही विषय पर विचारों को अच्छी तरह बाँधकर प्रस्तुत किया जाता है , तो इसे निबंध कहते है ।

ऐसी गद्य रचना जिसमें किसी विषय पर विचारों को व्यवस्थित और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है. उसे निबंध कहते हैं।

निबंध को सुंदर बनाने के लिए निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए-

- निबंध सरल भाषा में लिखना चाहिए।
- भाषा तथा शैली के साथ ही निबंध में व्याकरणिक शुद्धता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- निबंध में ऐसे शब्दों का उपयोग करना चाहिए जो कम शब्दों में लेखक के भाव को व्यक्त कर सकें।

अधिक शब्द और एक ही शब्द की पुनरावृत्ति निबंध में नहीं होनी चाहिए।

- निबंध में भावों का समावेश क्रमानुसार होना चाहिए।
- अपने विचारों को व्यवस्थित करने के लिए पहले रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।

निबन्ध के भाग :

निबन्ध के तीन मुख्य भाग होते हैं-

कः प्रस्तावनाः इस भाग में निबन्ध का विषय बताने के साथ-साथ उसका महत्व बताया जाता है। अतः प्रस्तावना रोचक और आकर्षक होनी चाहिए।

ख. विषय-वस्तुः विषय-वस्तु निबंध का मुख्य भाग होता है। इसे अनुच्छेदों में बाँट कर क्रमबद्ध रूप से अपने विचार प्रकट करने चाहिए।

ग. उपसंहारः इस भाग में निबंध का सारांश देते हुए रोचक ढंग से अपने विचार या निष्कर्ष प्रस्तुत करने चाहिए।

1. समाचार पत्रों से लाभ

मानव और समाज दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह चाहता है कि अपने विचार समाज के साथ बाँटे और समाज के विचारों से परिचित हो। मनुष्य जिस प्रकार अपने सुख-दुख लोगों के साथ बाँटना चाहता है, उसी प्रकार लोगों के सुख-दुःख में हाथ बैटाना चाहता है। आशय यह है कि व्यक्ति हर प्रकार से समाज के क्रिया-कलाप और गतिविधियों से जुड़ना चाहता है। कहाँ क्या घट रहा है, इससे परिचित होना चाहता है। समाचारपत्र व्यक्ति की इस इच्छा को पूरा करते हैं। समाचारपत्रों में देश, प्रदेश एवं विदेश के समाचार प्रकाशित होते हैं। व्यक्ति इन्हें पढ़कर अपने आस-पास एवं दूर-दराज की घटनाओं और स्थितियों से परिचय पाता है। इसीलिए समाचारपत्र सूचना के सशक्त माध्यम के रूप में मनुष्य के जीवन के मुख्य अंग बन गए हैं।

समाचारपत्रों से हमें विश्व में घटित होने वाली घटनाओं की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। समाचारपत्रों के द्वारा ही जनता अपनी माँगें अधिकारी वर्ग तक पहुँचा सकती है। अधिकारी वर्ग भी इसी माध्यम से अपनी बात जनता तक पहुँचा सकता है। समाचारपत्रों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों का भी पर्दाफाश होता है। दहेज प्रथा, बलात्कार, हत्या, आगजनी, लूटपाट आदि की खबरें समाचारपत्रों द्वारा ही प्रकाश में आती हैं। इन कुरीतियों, अनाचारों के प्रति विद्रोह एवं विरोध स्वरूप व्यंग्य लेख और व्यंग्य चित्र तथा बुद्धिजीवियों वर्ग के विचार समाचारपत्रों में छपती हैं। जिसके परिणामस्वरूप जनता में अधिकारों के प्रति जागृति का स्वर उभरता है।

समाचारपत्र सूचना माध्यम के साथ-साथ ज्ञानवर्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाचारपत्रों में प्रकाशित संस्कृति, सभ्यता, परिवेश, परंपरा और जीवन मूल्यों पर केंद्रित साहित्य पाठकों को सदृष्टि देने में सहायक होता है। समाचारपत्रों में प्रकाशित विज्ञापन, व्यापार, वाणिज्य के समाचार, फिल्म-कला आदि से संबंधित सामग्री का अपना अलग महत्व है। वास्तव में समाचारपत्र में प्रकाशित प्रत्येक समाचार का साहित्यिक, राजनैतिक या सामाजिक महत्व होता है, उससे पाठक को एक विशिष्ट संदेश भी मिलता है। इस प्रकार समाचारपत्र हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।

2. पेड़ - पौधे हमारा जीवन

पेड़-पौधे धरती का श्रृंगार और शोभा है। वे प्राणी-मात्र के जीवनदाता हैं। ऑक्सीजन के बिना हम कुछ पल भी जीवित नहीं रह सकते। वह ऑक्सीजन हमें पेड़-पौधों से ही मिलती है। पेड़-पौधों से बड़ा परोपकारी और कोई नहीं है। धरती पर फैली कार्बन-डाई-ऑक्साइड और कार्बनमोनो ऑक्साइड के जहर को ये खुद पचा जाते हैं और बदले में देते हैं- शुद्ध, स्वच्छ और ताजी ऑक्सीजन।

यदि पेड़-पौधे न होते तो धरती का तापमान इतना अधिक होता कि यहाँ जीवन ही नहीं होता। पेड़-पौधे ही धरती के तापमान को सही स्थिति में रखते हैं। ऊँचे-घने पेड़ों के कारण ही वर्षा होती है जिस पर सारी खेती-बाड़ी और हरियाली निर्भर रहती है। पृथ्वी पर जीवन के कमल खिलते हैं। अधिक वर्षा के समय पेड़ ही मिट्टी के कटाव को रोकते हैं।

पेड़-पौधों में भी जीवन होता है, ये चाहे चलते-फिरते नहीं, परंतु ये भी धरती से जन्म लेकर धीरे-धीरे बड़े होते हैं। ये भी साँस लेते हैं. जागते और सोते हैं। ये भी संगीत का आनंद लेते हैं। ये भी बच्चे से जवान होकर अपने फल-फूलों की सुंदरता, कोमलता, रंग, रस और सुगंध से लोगों का मन मोहते हैं, देवता भी इन्हें पाकर प्रसन्न होते हैं। पेड़-पौधों पर सरदी-गरमी का प्रभाव पड़ता है जिसे सहते सहते ये भी बूढ़े होने लगते हैं। जड़ें ढीलीं और कमजोर होने लगती हैं, टहनियाँ सूखने लगती हैं। एक तपस्वी ऋषि थे- दधीचि। उन्होंने देवताओं की भलाई के लिए अपनी हड्डियाँ दान कर दी थीं। पेड़ भी तने समेत अपनी लकड़ियाँ रूपी हड्डियाँ मनुष्य की भलाई के लिए दान कर देते हैं। इनकी सूखी लकड़ी इमारतों में लगती हैं, फर्नीचर के रूप में हमारे घरों की शोभा बढ़ाती हैं। गाँवों में भी और शहरों में भी, गरीब आदमियों का भोजन इनकी लकड़ी की आग पर ही पकता है।

पेड़-पौधों से हमें सुंदर, कोमल फूल और सरस मीठे फल मिलते हैं। इनकी जड़ों, फूलों, छाल और पत्तियों से अनेक जीवनदायी और प्राणरक्षक औषधियाँ बनती हैं। साधारण कहा जाने वाला नीम का पेड़ अपने आप में पूरा अस्पताल होता है। तुलसी और आँवले की उपयोगिता को कौन नहीं जानता? आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा पद्धति तो पूरी तरह पेड़-पौधों पर ही निर्भर करती है। हमारे पूर्वजों ने पेड़-पौधों के महत्व को पहचाना था। भारत में वृक्ष-पूजा का प्रचलन इसका प्रमाण है। निःसंदेह एक पेड़ को नुकसान पहुँचाना एक रक्षक महामानव की हत्या करने जैसा है और एक पौधा लगाना जन-कल्याण और पुण्य का सीधा मार्ग है।

3. विद्यार्थी जीवन

विद्या प्राप्ति की अवधि को विद्यार्थी जीवन कहते हैं। बच्चा लगभग पाँच वर्ष की उम्र से जब पढ़ना-लिखना शुरू
करता है, तब उसका विद्यार्थी जीवन आरंभ हो जाता है जो कि लगभग पच्चीस वर्ष की उम्र तक जारी रहता है। किसी भी व्यक्ति के लिए जीवन की यह अवधि बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इस अवधि में व्यक्ति के संपूर्ण जीवन की नींव पड़ जाती है। यदि जीवन की यह नींव मजबूत होती है तो उस पर आलीशान महल खड़ा किया जा सकता है। विद्यार्थी जीवन त्याग एवं तपस्या का जीवन होता है। जो व्यक्ति दुःखों को सहते हुए ज्ञान

प्राप्ति में सदा तत्पर रहता है, वही आदर्श विद्यार्थी कहलाता है। जो विद्या रूपी समुद्र में गहराई तक जाकर गोते लगाता है, उसे ही मोती मिलते हैं। इस मोती को जिसने पा लिया, उसका जीवन धन्य हो गया। अतः विद्यार्थी जीवन का पूरा सदुपयोग करना चाहिए, विद्या प्राप्ति में किसी प्रकार का आलस्य एवं निष्क्रियता नहीं बरतनी चाहिए। विद्यार्थी को तो सब कुछ भूलकर केवल विद्या प्राप्ति को ही अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

विद्यार्थी जीवन में तरह-तरह के प्रलोभन आते हैं जो विद्यार्थी को विद्या प्राप्ति के लक्ष्य से विमुख करते हैं। खान-पान, मनोरंजन, भ्रमण, मित्र-मंडली, मेले, बाजार, मल्टीप्लेक्स आदि कितने ही प्रलोभन विद्यार्थियों को ललचाते रहते हैं। आजकल तो मनोरंजन के इतने साधन हैं कि सारा समय इनमें ही खपाया जा सकता है। परंतु सच्चे विदयार्थी इन प्रलोभनों से दूर रहते हैं। वे पुस्तकों को ही अपना सच्चा साथी मानते है। वे खेल-कूद इत्यादि के लिए उतना ही समय खर्च करते हैं जितना कि उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए आवश्यक हो। विदयार्थी जीवन चरित्र-निर्माण विदयार्जन एवं प्रतिभा विकसित करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। पुस्तको में तो बहुत ज्ञान भरा पड़ा है, इसका क्या लाभ? इसे तो अध्ययन के दवारा आत्मसात करने की जरूरत है । साहित्य, विज्ञान, समाज शास्त्र, पर्यावरण आदि कितने ही विषय ऐसे है जिनके ज्ञान के बिना हमारा जीवन अधूरा प्रतीत होता है। पढ़ने-लिखने का ऐसा सुनहरा अवसर फिर कभी नहीं मिलेगा इसका ज्ञान जिसे है, वही समझदार विद्यार्थी है। निष्कर्षतः विद्यार्थी जीवन अमूल्य है। इसका सदुपयोग करना चाहिए। इसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। विद्यार्थियों को पूरी संकल्प-शक्ति के साथ अपना ध्यान अध्ययन करने में लगाना चाहिए। देश का भविष्य विद्यार्थियों पर ही टिका हुआ है क्योंकि आज के विद्यार्थी ही कल देश के अच्छे और जिम्मेदार नागरिक बनेंगे।

4. दीपावली

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। यहाँ पर हर धर्म तथा संप्रदाय के बहुत सारे त्योहार मनाए जाते हैं। ये त्योहार हर्ष और उल्लास के प्रतीक होते हैं। 'दीवापली' से अभिप्राय है- 'दीपों की अवली या पंक्ति।' यह पर्व प्रत्येक वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। दीपावली की रात को लोग दीपक जलाते हैं तथा सारे घर को प्रकाशमान रखते हैं। इस दिन भगवान श्रीराम रावण-वध करके चौदह वर्ष के बाद वापस अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों ने उनके आने की खुशी में अपने घरों को दीपकों से प्रकाशित किया था। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी तथा आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था। दीपावली से दो दिन पूर्व धनतेरस मनाई जाती है। इस दिन लोग नए बर्तन खरीदना शुभ मानते हैं। दूसरे दिन छोटी दीपावली मनाई जाती है। भगवान श्रीकृष्ण ने इसी दिन नरकासुर का वध किया था। फिर तीसरे दिन दीपावली मनाई जाती है। रात्रि में निश्चित समय पर लक्ष्मी पूजन किया जाता है। चौथे दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा की जाती है। इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी। दीपावली का त्योहार वर्षा ऋतु के बाद आता है। इस अवसर पर लोग अपने घरों में सफाई तथा रंगाई-पुताई करते हैं। रात्रि में दीपावली की शोभा देखते ही बनती है। बाजारों में खूब चहल-पहल होती है। चारों ओर मोमबत्तियों, दीपों और बल्बों के प्रकाश की जगमग होती है। लोग अपने मित्रों तथा सगे-संबंधियों के घर मिठाइयाँ तथा अन्य उपहार भेजते हैं। बच्चे-बड़े सभी आतिशबाजी का आनंद लेते हैं। दीपावली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह हमें प्रेम, सौहार्द एवं सद्भाव का संदेश देता है। इसे हमें मिल-जुलकर मनाना चाहिए।

5. गणतंत्र दिवस

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,वतन पर मिटनेवालों का यही बाकी निशाँ होगा।"

प्रत्येक देश में अनेक पर्व मनाए जाते हैं जिनमें कुछ राष्ट्रीय पर्व होते हैं। ऐसे पर्व को प्रत्येक जाति, धर्म तथा संप्रदाय के लोग मिलकर मनाते हैं। भारत के राष्ट्रीय पर्यो में 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) का प्रमुख स्थान है। 26 जनवरी, 1950 को ही भारत गणतंत्र बना था। इसलिए 26 जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। 26 जनवरी को ही स्वतंत्र भारत का अपना संविधान लागू हुलग था। इसी दिन डॉ राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने थे।

26 जनवरी, 1930 को रावी नदी के तट पर नेहरू जी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज-प्राप्ति का प्रस्ताव पास किया जिससे अंग्रेज सरकार बौखला उठी थी। उसने देशभक्तों पर तरह-तरह के अत्याचार करने शुरू कर दिए, पर अंत में उसे झुकना पड़ा। इसलिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 26 जनवरी, 1950 को ही देश का संविधान लागू किया गया।

यद्यपि यह पर्व संपूर्ण देश में पूरे उल्लास के साथ मनाया जाता है, पर दिल्ली में इसका विशेष आकर्षण होता है। राजपथ पर गणतंत्र दिवस की मुख्य परेड निकाली जाती है जिसमें राष्ट्रपति की राजकीय सवारी निकलती है। विजय चौक पर तीनों सेनाओं जल सेना, थल सेना तथा वायु सेना द्वारा राष्ट्रपति को सलामी दी जाती है। इसमें टैंकों, विमानों तथा अस्त्रों-शस्त्रों का भी प्रदर्शन किया जाता है। परेड में विभिन्न राज्यों की आकर्षक झाँकियाँ निकलती हैं तथा सेना और पुलिस के दल अपने-अपने बैंड के साथ मार्च करते हैं। विभिन्न राज्यों से आए लोक-नर्तक अपने-अपने नृत्यों का प्रदर्शन करते हैं। विद्यालयों की छात्र-छात्राएँ भी पी० टी० तथा नृत्य-गीतों का प्रदर्शन करते हैं। वायुयान आकाश में उड़कर अपने करतब दिखाते हैं। इस परेड को देखने के लिए अपार जन समूह उमड़ पड़ता है।

सायंकाल के समय सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है। विद्यालयों में भी यह उत्सव पूरे उत्साह से मनाया जाता है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हमें अपने देश की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता की रक्षा करनी चाहिए तथा आपसी मतभेद को भुलाकर देश की उन्नति में अपना सहयोग देना चाहिए।

6. कोरोना वायरस

कोरोना वायरस या कोविड-19 संक्रमण ऐसी बीमारी है जिसे वैश्विक संगठन द्वारा महामारी घोषित किया गया है। नवंबर 2019 में यह चीन की लैब से निकला था, धीरे-धीरे यह वायरस इंसान से इंसान में फैलने लगा। देखते ही देखते इस वायरस ने पूरी दुनिया में पैर पसार लिए। अंटार्कटिका जैसे क्षेत्र में भी कोरोना की पुष्टि हुई है। जनवरी 2020 में यह वायरस भारत में पाया गया। 21 मार्च, 2020 को पूरे देश में एक दिन का जनता कर्फ्यू लगाया गया और फिर संपूर्ण लॉकडाउन लगाया गया। एक साल बाद यानि 2021 में फिर से कोरोना वायरस लगातार बढ़ रहा है।

कोरोना वायरस एक ऐसा संक्रमण है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से ट्रांसफर होता है। वर्तमान में इस वायरस के लक्षण सरदी, जुकाम, बुखार, सुगंध नहीं आना, स्वाद नहीं आना, सांस लेने में तकलीफ होना और गले में खराश होना हैं। पूरी दुनिया में इस वायरस पर शोध जारी है।

जो व्यक्ति कोरोना पॉजिटीव है उसके संपर्क में आने से यह फैलता है। साथ ही किसी व्यक्ति दुवारा खांसने के जो बारीक कण आपके शरीर में प्रवेश करते हैं इससे संक्रमित होने का खतरा है। इसलिए सरकार दवारा जारी देश में कहा गया है कि बातचीत के दौरान कम से कम 3 फोट की दूरी बनाकर रखें। इसी के साथ मास्क भी लगाकर रखे । 20 सेकेंड तक साबुन लगाकर हाथ धोएँ। ज्यादा जरूरी हो तभी घर से बाहर निकलें।

कोरोना वायरस को महामारी घोषित करने के बाद से पूरी दुनिया में वैज्ञानिकों द्वारा वैक्सीन पर शोध जारी है। समान में भारत द्वारा 2 वैक्सीन का निर्माण किया गया है। कोविशील्ड वैक्सीन, इस कालीन पर शोध जारी है। सौरभ इंस्टीट्यूट द्वारा किया गया है। कोवैक्सीन, इस वैक्सीन का उत्पादन भारत बायोटेक द्वारा किया गया है।

भारत ने वैक्सीन के उत्पादन के बाद इसे अभी 65 देशों को उपलब्ध कराया है। भारत सरकार द्वारा यह वैक्सीन कुछ देशों को ग्रांट बेसिस पर दी जा रही है। भारत ने श्रीलंका, भूटान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, माहवारा यह वैक्सीन कुछ देशों में कोरोना वैक्सीन के डोज उपलब्ध कराए हैं।

कोरोना वायरस से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगाएँ। वैक्सीन की दो डोज जरूरी है। वैक्सीन ही करीना को हराने में हमारी मदद करेगी। हाँ, वैक्सीन लगवाने के बाद भी हमें सतर्क रहना है और सभी सावधानियों का पालन करना है जब तक कि कोरोना पूरी तरह से इस दुनिया से चला नहीं जाता है।

प्रश्न अभ्यास

दिए गए विषयों पर लगभग 150 - 200 शब्दों में निबंध लिखिए-

1. विद्यालय में मेरा पहला दिन
2. पुस्तकालय
3. मेरा देश
4. समय अनमोल है
5. आदर्श मित्रता
6. प्रातः काल की सैर
7. बेरोजगारी की समस्या
8. भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम
9. मेरे जीवन का लक्ष्य
10. वायु प्रदूषण

पाठ-30 अपठित गद्यांश (Unseen passage)

अपठित गद्यांश का अर्थ वह गद्यांश है जो पहले से पढ़ा न गया हो। ऐसे गद्यांश किसी कहानी, निबंध या अन्य रचना के एक अंश होते हैं। इनके आधार पर विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं।

गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

*सबसे पहले गद्यांश को ध्यानपूर्वक दो या तीन बार पढ़ना चाहिए।
*उसके बाद दिए गए प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
*उत्तर संक्षिप्त और गद्यांश पर आधारित होने चाहिए।
*यदि शीर्षक पूछा जाए, तो गद्यांश के केंद्रीय भाव के आधार पर शीर्षक लिखें ।

निम्नलिखित गद्यांशों तथा उन पर आधारित प्रश्नोत्तरों को देखिए एवं समझिए-

1 . रात का समय था। सब बच्चे भोजन करने के बाद एक जगह पर इकट्ठे हो गए। सभी गोपी की दादी से कहानी सुनना चाहते थे। दादी ने सबसे छोटे बच्चे को देखते हुए पूछा, "अरे गोपी, हाथ में यह पट्टी क्यों बाँध रखी है?" गोपी जवाब में कुछ कहने ही जा रहा था कि उसकी माँ ने दखलअंदाजी करते हुए कहा, "सासु जी, यह स्कूल में हर नटखट बच्चे से दोस्ती करता है। किसी बात पर ये आपस में झगड़ने लगते हैं और यह घायल होकर लौटता है।" तब दादी ने उसे अपनी गोद में बिठाया और कहा, "यह भी नटखट ही होगा। नटखट ही दूसरे नटखट से दोस्ती करता है।" फिर उन्होंने गोपी को संबोधित करते हुए कहा, "गोपी, ध्यान से सुनो। सबसे उत्तम है, सन्जन की संगति। इसका मतलब है, अच्छे लोगों से मैत्री करना। अब मैं तुम्हें ऐसे ही सज्जन को संगति के बारे में कहानी सुनाने जा रही हूँ। ध्यान से सब सुनो।"

उपर्युक्त गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) रात के भोजन के बाद क्या हुआ ?
उत्तर-रात के भोजन के बाद सभी बच्चे एक ही जगह इकट्ठे हो गए।
(ख) गोपी की दादी ने क्या देखा और क्या प्रश्न पूछा ?
उत्तर-गोपी की दादी ने गोपी का जख्मी हाथ देखा और पूछा कि गोपी ने हाथ में पट्टी क्यों बाँध रखी थी?
(ग) बच्चे की माँ ने क्या कहा ?
उत्तर - बच्चे की माँ ने कहा कि वह स्कूल में नटखट बच्चों के साथ दोस्ती करता है और उनसे छोटी-सी बात पर झगड़कर घायल हो जाता है।
(घ) दादी ने माँ की बात का क्या उत्तर दिया ?
उत्तर -दादी ने कहा कि यह भी नटखट ही होगा, जो जैसा होता है वैसे ही लोगों से दोस्ती करता है।
(ङ) दादी ने बच्चे को क्या शिक्षा दी ?
उत्तर-दादी ने उसे सज्जन की संगति अपनाने की शिक्षा दी।

2.संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु समय है क्योंकि दुनिया की अधिकांश वस्तुओं को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय का एक क्षण भी बढ़ा पाना व्यक्ति के वश में नहीं है। समय के बीत जाने पर व्यक्ति के पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं रहता। विद्यार्थी के लिए तो समय का और भी अधिक महत्व होता है। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है शिक्षा प्राप्त करना। समय के उपयोग से ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। जो विद्यार्थी अपना बहुमूल्य समय खेल-कूद, मौज-मस्ती तथा आलस्य में खो देते हैं, वे जीवन भर पछताते रहते हैं, क्योंकि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं और जीवन में उन्नति नहीं कर पाते। मनुष्य का कर्तव्य है कि जो क्षण बीत गए हैं। उनकी चिंता करने के बजाय जो अब हमारे सामने हैं, उसका सदुपयोग करें।

(क) संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु क्या है?

उत्तर- संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु समय है।

(ख) व्यक्ति के बस में क्या नहीं है?

उत्तर- समय के एक भी क्षण को बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं है।

(ग) किस प्रकार के विद्यार्थी पछताते हैं?

उत्तर- जो विद्यार्थी अपना समय खेल-कूद, मौज-मस्ती तथा आलस्य में खो देते हैं, वे जीवन भर पछताते रहते हैं।

(घ) मनुष्य का क्या कर्तव्य है?

उत्तर - मनुष्य का कर्तव्य है कि बीते समय पर विचार न करके जो समय अपने पास है उसका सदुपयोग करे।

3. भारतीय संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता रही है- अनेकता में एकता। हालाँकि सतही तौर पर भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों में पर्याप्त सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक भिन्नता दिखाई पड़ती है। फिर भी अपने आचार-विचार की एकता की वजह से यहाँ हमेशा सामाजिक संस्कृति का ही स्वरूप दृष्टव्य होता है। यही कारण है कि भारत इन विभिन्नताओं के बावजूद सदियों से एक भौगोलिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक इकाई के रूप में विश्वभर में अपना खास स्थान बनाए हुए है। भारतीय संस्कृति में आध्यात्मक तथा भौतिकता दोनों का मिश्रण देखने को मिलता है। इसलिए प्राचीनता, गतिशीलता, ग्रहणशीलता, सामासिक स्वरूप और अनेकता इसके अंदर दिखाई देने वाली एकता की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(क)भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता रही है?

उत्तर- अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

(ख) भारत में विभिन्नता और एकता के दर्शन कहाँ होते हैं?

उत्तर- भारत में विभिन्न राज्यों में सतही तौर पर भिन्नता दिखाई देती है हालाँकि आचार-विचार में एकता प्रकट होती है।

(ग)'अनेकता' शब्द का विपरीतार्थक शब्द लिखिए।

उत्तर- अनेकता शब्द का विपरीतार्थक शब्द- 'एकता' है।

(घ)भारत की संस्कृति में किस-किसका मिश्रण है?

उत्तर - भारत की संस्कृति में आध्यात्मिकता तथा भौतिकता का मिश्रण देखने को मिलता है।

आओ अभ्यास करें

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नो कें उत्तर लिखिए –

1.भगवान बुद्ध एक वट वृक्ष के नीचे समाधि में बैठे थे। उन्होंने अपने नेत्र खोले तो आनंद ने पूछा "भगवन ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ क्या आपके समान कोई और भी है ?' तथागत मुस्कराए और बोले "इस वट वृक्ष के पत्ते गिन सकते हो ?" आनंद ने कहा-"नहीं।" "ठीक इसी प्रकार ज्ञान अनंत है।" इतना कहकर उन्होंने मुट्ठीभर पत्ते तोड़कर कहा- "आनंद मेरे हाथ के पत्ते गिन सकते हो ?" आनंद ने "हाँ" उत्तर दिया। बुद्ध ने कहा "मुझे इतना ही ज्ञान मिला है। प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार ही ज्ञान ग्रहण कर सकता है।"

प्रश्न-

(क) भगवान बुद्ध कहाँ बैठे थे ?

(ख)आनंद ने तथागत से क्या प्रश्न किया ?

(ग) ज्ञान कितना है ?

(घ) बुद्ध के अनुसार प्रत्येक को कितना ज्ञान मिलता है ?

(ड.) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक सुझाइए।

2 . प्रकृति मनुष्य की सहचरी है। दोनों एक-दूसरे के पूरक तथा संरक्षक एवं पोषक हैं। पेड़-पौधे मनुष्य के संरक्षण से उगते और फलते-फूलते हैं तो वहीं मनुष्य भी आजीवन पेड़-पौधों पर आश्रित रहता है ,फल-फूल-अनाज आदि देकर उसका भरण - पोषण करते हैं।पेड़-पौधों के कारण ही हमें शुद्ध वायु मिलती है जो साँस लेने के लिए आवश्यक है। इसीलिए प्रदूषण को रोकने में पेड़-पौधों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । आज तेजी से बढ़ते हुए प्रदूषण के अन्य कारणों में वृक्षों की अंधाधुंध कटाई भी है। मनुष्य की विवशता यह है कि बढ़ती हुई जनसंख्या को आवास की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए वृक्षों की कटाई करना आवश्यक हो गया है ।

1. पेड़-पौधे और प्रकृति किस प्रकार एक-दूसरे के पूरक हैं?
2. पेड़-पौधे से मनुष्य को क्या-क्या लाभ हैं?
3. प्रदूषण को रोकने में पेड़-पौधों की क्या भूमिका है?
4. आज मनुष्य वृक्षों की अंधाधुंध कटाई करने में क्यों विवश है ?
5 .गद्याँश का उचित शीर्षक क्या होगा ?